राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-११ नवी मुंबई अगस्त २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

प्रधानमंत्री मोदी की सफल इजरायल और जर्मनी यात्रा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इजरायल की ऐतिहासिक यात्रा पर गये। किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली इजरायल यात्रा रही। वहां के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने हवाईअड्डे पर प्रोटोकॉल तोड़कर मोदी का स्वागत किया। स्वागत करते हुए नेतन्याहू ने कहा था कि इजराइल की जनता ७० सालों से भारतीय प्रधानमंत्री का इंतजार कर रही थी।

भारत और इजराइल ने अंतरिक्ष, कृषि और जल प्रबंधन में ६ समझौते किए। दोनों देशों की कुछ कंपनियों के बीच भी निवेश के करार हुए। यात्रा में मोदी ने इजराइली प्रधानमंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक के अलावा इजराइली राष्ट्रपति के साथ भी बैठक की।

इजराइल के बाद प्रधानमंत्री वहाँ से जी-२० की शिखर बैठक के लिए जर्मनी के हैम्बर्ग पहुंचे। पीएम मोदी ने वहां आतंकवाद से संघर्ष के लिए भारत का ११ सूत्री एजेंडा पेश किया। मोदी ने आतंक को समर्थन देने वाले देशों के प्रतिनिधियों के जी-२० में प्रवेश पर बैन लगाने का सुझाव दिया। आतंकवाद के विरुद्ध जारी संयुक्त घोषणापत्र में उनके सुझाव को शामिल करते हुए आतंकवाद को वैश्विक समस्या बताते हुए इससे लड़ने तथा दुनिया भर में आतंकवादियों के पनाहगाहों को नष्ट करने को शामिल किया गया।

मोदी ने इस बैठक से डोकलाम तनाव के बाद भी चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की। पीएम ने हैम्बर्ग में जापान, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम, इटली आदि के नेताओं से भी द्विपक्षीय बैठकें कीं। ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थेरेसा मे के साथ बैठक में उन्होंने विभिन्न मुद्दों के साथ-साथ बैंकों के अरबों रुपए के देनदार शराब कारोबारी विजय माल्या के भारत प्रत्यर्पण पर भी बात की। ■

हमारे नये राष्ट्राध्यक्ष

श्री रामनाथ कोविंद

नई दिल्ली। राष्ट्रपति चुनावों में एनडीए उम्मीदवार श्री रामनाथ कोविंद निर्वाचक मंडल के ६५ प्रतिशत से अधिक मत पाकर राष्ट्राध्यक्ष चुने गये। इससे पहले वे बिहार के राज्यपाल थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में २५ जुलाई को पद और गोपनीयता की शपथ ली।

कोविंद का जन्म १ अक्टूबर, १९४५ को उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात में हुआ था. कानून की पढ़ाई के बाद चुने जाने के बावजूद उन्होंने सिविल सेवा ज्वायन नहीं की और वकालत की प्रैक्टिस करने लगे. १९९१ में वे भारतीय जनता पार्टी से जुड़े और १९९४ से २००६ तक वे लगातार दो बार राज्यसभा के सांसद रहे.

२०१४ में उनको बिहार का गर्वनर नियुक्त किया गया. १९९८ से २००२ तक वे बीजेपी के अनुसूचित जाति मोर्चे के अध्यक्ष रहे हैं। ■

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'मन की बात'

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ३० जुलाई को ३४वीं बार 'मन की बात' कार्यक्रम में मानसून, जीएसटी, स्वतंत्रता दिवस, अगस्त क्रांति, महिला क्रिकेट सहित करीब १० विषयों पर बात की. पीएम मोदी ने कहा कि बारिश का मौसम लोगों के लिए लुभावना होता है. कभी-कभी बारिश से बाढ़ आती है तो इसका विकराल रूप सामने आता है. पर्यावरण में आ रहे बदलाव से बहुत कुछ बदल रहा है.

पीएम मोदी ने कहा कि जीएसटी को लेकर लोगों में उत्साह है. कई लोगों में जिज्ञासा है. उन्होंने बताया कि गुड़गांव की नीतू ने कहा कि जीएसटी के लागू होने का असर बताएं. जीएसटी को लागू हुए एक महीना हो रहा है. इससे फायदा हुआ है. चीजें सस्ती हुई हैं. उत्तर पूर्व से लोगों ने कहा कि अब काम आसान हो गया है.

पीएम ने कहा कि अगस्त क्रांति का महीना है. इस दौरान भारत में आजादी की क्रांति हुई. इस महीने में कई घटनाएं आजादी से जुड़ी हैं. इस वर्ष भारत छोड़ो की ७५वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं. १९४७ से अब २०१७ तक ७० साल हो गए. देश में रोजगारी बढ़ाने, गरीबी हटाने के लिए प्रयास हुए. उन्होंने लोगों से अपील की कि २०१७ के १५ अगस्त को संकल्प दिवस के रूप में मनाया जाये।

पीएम ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था में सामाजिक विश्वास है. उत्सव सामाजिक सुधार का अवसर है. उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन, जन्माष्टमी आदि कई उत्सव होंगे. यहां पर गरीब की मदद का संकल्प लें. इससे व्यक्ति और समाज में जुड़ाव आता है. पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि रक्षाबंधन और दीपावली में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है. त्योहारों में पर्यावरण का संरक्षण भी जरूरी है. उन्होंने कहा कि कई लोगों को ईको फ्रेंडली गणेश मूर्ति बनाए जाने की जरूरत महसूस हो रही है.

पीएम मोदी ने कहा कि हमारी बेटियां देश का नाम रोशन कर रही है. देशवासियों को उन पर गर्व है. उन्होंने महिला क्रिकेट विश्वकप का जिक्र कर कहा कि उनसे मिलकर अच्छा लगा. वे वर्ल्ड कप हार का बोझ महसूस कर रही थीं. पूरा देश उस बोझ को अपने कंधे पर उठाता है. लोग मर्यादा से ज्यादा अपना गुस्सा फोड़ते हैं. उन्होंने कहा कि पहली बार ऐसा हुआ कि देशवासियों ने हार का बोझ अपने ऊपर लिया. ■

उपराष्ट्रपति चुनाव में रोचक मुकाबला

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति पद के लिए भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री वेंकैया नायडू तथा विपक्षी दलों के उम्मीदवार गोपालकृष्ण गांधी के बीच मुकाबला होगा। इसके लिए मतदान ५ अगस्त को होगा।

वेंकैया नायडू १९७० से सार्वजनिक जीवन में हैं. वे भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे. दो बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे और चार बार राज्यसभा के सदस्य रहे. वेंकैया नायडू अटल सरकार में भी मंत्री रह चुके हैं.

गोपालकृष्ण गांधी एम.के. गाँधी के पौत्र, देवदास गांधी और लक्ष्मी गांधी के पुत्र हैं। सी राजगोपालाचारी उनके नाना थे। वे पूर्व आइएस अधिकारी हैं और स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हुए। वे १९८५ से १९८७ तक

उपराष्ट्रपति के सेक्रेटरी भी रहे। वहीं १९८७ से १९९२ तक राष्ट्रपति के ज्वाइंट सेक्रेटरी और १९९७ में राष्ट्रपति के सेक्रेटरी भी रहे। उन्होंने कई देशों में भारत के उच्चायुक्त और राजदूत के रूप में अपनी सेवायें दी हैं। वे पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भी रहे हैं। ■

बिहार में राजग के समर्थन से फिर नीतीश की सरकार

पटना। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने त्यागपत्र देकर अगले ही दिन एनडीए के समर्थन से नई सरकार बना ली तथा भाजपा नेता सुशील मोदी को उपमुख्यमंत्री के रूप में शामिल किया। नई सरकार ने विधानसभा में अपना बहुमत सिद्ध कर दिया। उसके पक्ष में १३१ और विरोध में १०८ वोट पड़े. राजद ने सदन से वॉकआउट किया और सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। अगले ही दिन मंत्रिमंडल में २६ नये मंत्रियों को शामिल कर लिया गया, जिनमें जनता दल (यू) के १४, भाजपा के ११ और लोजपा के १ मंत्री हैं।

उल्लेखनीय है कि पहले वे राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस के समर्थन से मुख्यमंत्री थे। परन्तु उपमुख्यमंत्री राजद के तेजस्वी यादव पर बेनामी सम्पत्ति के गम्भीर आरोप लगने और सीबीआई के छापों के बाद उनसे त्यागपत्र या सफाई देने के लिए कहा गया, किन्तु यह राजद ने स्वीकार नहीं किया। अतः नीतीश कुमार ने स्वयं त्यागपत्र दे दिया और राजद का साथ छोड़ दिया।

नीतीश कुमार ने कहा है कि उन्होंने जो किया बिहार के लिए किया। अब राज्य और केंद्र में एक ही सरकार होगी। मैंने कभी पैसा बनाने के लिए राजनीति नहीं की। कोई मुझे धर्मनिरपेक्षता का पाठ न पढ़ाएं। मुझे त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया गया था। ■

कार्टून

बिहार के शोले

-- मनोज कुरील

चल पड़ी पहली सोलर रेलगाड़ी

गुड़गांव। देश की पहली सौर ऊर्जा से संचालित और बैटरी बैंक की सुविधा से युक्त १६०० एचपी डीईमयू यात्री रेलगाड़ी १७ जुलाई को दिल्ली सराय रोहिल्ला से फर्रुखनगर रेलवे स्टेशन पहुंची। डीईएमयू गाड़ी के डिब्बों में सूचना डिस्प्ले, एलईडी, पंखा आदि सोलर पैनल से चलते हैं।

डीईएमयू में मेट्रो जैसी सुविधाएँ हैं। शौचालय, स्नान घर, पीने का शुद्ध जल आदि की सुविधा यात्रियों को मिलेगी। हर कोच में आरामदायक सीट, सोलर संचालित एलईडी, ट्यूब, पंखे आदि लगे हैं। ■

कविता

साहिल को क्या मालूम कि
कितनी कश्तियाँ डूबीं/कितने अरमान जले
कितने ही साहिल पर/आपस में मिले
समंदर के किनारे पर/एक-दूसरे के हो गये
पर वहीं वे/अपने प्राणों से हाथ धो गये
यूँ तो साहिल जानता है औरों का दर्द
तभी तो इशारे के रूप में उफनता है
चेतावनी देता हुआ/कि आने वाला है तूफान
ओ नादान/दूर चला जा बचा अपने प्राण।
पर संकट से अंजान परवाना/लहरों के खेल का दीवाना
उसने हश्र नहीं जाना/मानव जन्म की अहमियत को
कतई नहीं पहचाना
साहिल से किनारों से देखते ही
देखते लहरों में विलीन हो गया
वह अभागा लहरों का दीवाना
साहिल पर नसीहत लेते हुए बस
देखता रह गया असहाय जमाना

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

(पृष्ठ २८ का शेष)

बेचारा पापड़

पहले मसाला पापड़ का आर्डर करने वालों की थाली में अब सादा पापड़ भी कम दिखाई देता है। अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाले अगर अपनी जादुई शक्ति से एक पापड़ भी तोड़ के दिखा दें, तो लोग उनकी बातें मान जायेंगे। थाली में चावल, चटनी दही, पापड़ भी थाली की शोभा बढ़ाते आ रहे है। यदि पापड़ के शौकीनों को पापड़ न दिखे तो वे अचरज में पड़ जायेंगे। पापड़ भले ही बाजार से खरीद कर लाये हों, पापड़ तो हर एक की पसंद होती ही है। पापड़ सबकी पसंदीदा खाने की चीज है। बाजार से पापड़ लेने ही पड़ते हैं, क्योकि इंसान की जिंदगी भागदौड़ भरी हो गई है। पहले के जमाने में मनोरंजन के भौतिक साधन नहीं थे। महिलायें पाक कला को ज्यादा महत्त्व देती थीं। अब समय के अभाव के कारण बाजार से पापड़ खरीदकर खाते हैं जो कि अच्छे भी होते हैं। देखा जाए तो महिला सशक्तिकरण में भी साझा प्रयास के कार्य भी काफी मायने रखते है। आपस मे विचारों के मिलने से समस्याओं के समाधान हेतु सहयोगात्मक भावनाएँ प्रबल होती हैं। ■

सुभाषित

यावत् स्वस्थो ह्यं देहो यावत्मृत्युश्च दूरतः।
तावदात्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किं करिष्यति।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- जब तक यह शरीर स्वस्थ है और मृत्यु भी दूर है, तब तक आत्म कल्याण का कार्य कर लेना चाहिए, मरने के बाद क्या कर पाओगे अर्थात् कुछ नहीं।

पद्यार्थ- जब तक स्वस्थ शरीर है, और मृत्यु है दूर।
तब तक निज कल्याण के, कर्म करो भरपूर।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

राष्ट्रवाद का गौरवशाली क्षण

यह देखना बहुत आनन्ददायक है कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रखर राष्ट्रवादी दल भारतीय जनता पार्टी के केन्द्र में सत्तारूढ़ होने से देश में राष्ट्रवाद की जो लहर चली थी, अब उसने व्यापक रूप ग्रहण कर लिया है। देश के ७० प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल और जनसंख्या पर भाजपा और उसके सहयोगी दलों का शासन सफलता से चल रहा है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक और पूर्वोत्तर के अधिकांश राज्यों में भी भाजपा का बोलवाला है।

इसमें अतिशय गौरव का क्षण वह था जब राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रत्याशी श्री रामनाथ कोविन्द देश के राष्ट्राध्यक्ष (राष्ट्रपति) के रूप में निर्वाचित हुए। और अब शीघ्र ही उपराष्ट्रपति के पद पर भी श्री वेंकैया नायडू का चुना जाना सुनिश्चित है। उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि यह पहली बार है जब देश के तीनों शीर्ष पदों (राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री) पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक विराजमान हैं। किसी भी स्वयंसेवक के लिए यह गौरव और सन्तोष का विषय हो सकता है।

लेकिन हमारी विशेषता केवल यह नहीं है कि पहली बार स्वयंसेवक शीर्ष पदों पर बैठे हैं, बल्कि यह है कि पूरे देश में शासन के इस नये रूप का अनुभव और स्वागत किया जा रहा है। देशवासियों को स्पष्ट पता चल रहा है कि घोटाले पर घोटाले करने वाली सरकारों और देश के विकास के लिए दिन-रात कार्य करने वाली बेदाग सरकार में क्या अन्तर होता है।

ऐसा नहीं है कि भाजपा और उसके सहयोगी दलों के शासन में जनता की सारी समस्याएँ हल या समाप्त हो गयी हैं। ऐसा दावा करना अतिशयोक्ति ही होगी। लेकिन यह अवश्य है कि सरकार अनेक आन्तरिक और बाह्य बाधाओं के होने पर भी देश की समस्याओं को हल करने के लिए कृतसंकल्प है। इतना ही नहीं, सरकार की सदाशयता पर जनता को इतना विश्वास है कि देश के सभी भागों में होने वाले विधान सभा और स्थानीय निकायों के चुनावों में भाजपा को आशातीत सफलता मिली है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि देश की जनता ने तीन वर्ष पहले नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर जो विश्वास दिखाया था, वह अभी भी न केवल बना हुआ है, बल्कि उसका विस्तार ही हुआ है।

भाजपा और उसके सहयोगी दलों की यह सफलता उन विरोधी दलों को पचना सम्भव नहीं है, जो लम्बे समय से घोटाले कर रहे थे या घोटालबाजों के समर्थक बने हुए थे। ऐसे तत्वों का तिलमिलाना स्वाभाविक है, लेकिन दिन प्रति दिन उनकी शक्ति क्षीण हो रही है, क्योंकि देश की जनता उन पर दोबारा विश्वास करने को तैयार नहीं है। हालांकि लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष का होना आवश्यक होता है, लेकिन किसी ठोस कार्यक्रम के बिना केवल विरोध के लिए विरोध करने वाले विपक्ष को जनता भी पसन्द नहीं करती। इसका प्रमाण पिछले दिनों कई बार मिल चुका है।

यह देश का सौभाग्य है कि उसे नरेन्द्र मोदी जैसा प्रखर राष्ट्रवादी और गतिशील नेतृत्व प्राप्त हुआ है, जिसने संसार भर में देश का सम्मान बढ़ाया है और अनेक मित्र देशों का विश्वास जीता है। 'सबका साथ सबका विकास' इस सरकार का मूल मंत्र है। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि वर्तमान नेतृत्व अपने प्रयत्नों में सफल रहेगा।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

जुलाई अंक की सभी कहानियां अच्छी लगीं। धन्यवाद। **- देव जी भाई रावत**

पूर्ण मनोयोग से सम्पादित करते हैं आप अपनी पत्रिका। मुखपृष्ठ पर भारतीय प्रतीक चिन्ह गौरव का भाव उत्पन्न करते हैं। संवत और युगाब्द लिखा जाना अपने आप में एक अतिरिक्त आकर्षण है और एक सन्देश भी कि हिन्दी पत्रिकाओं की प्राचीन परम्परा को अभी भी जीवित रखने वाले कुछ लोग हैं। अन्दर की सामग्री भी स्तरीय, पठनीय और मननीय है। आपको बहुत-बहुत साधुवाद! **- डॉ कौशलेन्द्रम**

आपने बच्चू सिंह की सत्य कथा बताकर ऐसे अनजाने देशभक्तों को श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने स्वयं दिव्यांग होते हुए भी अपने कर्म का आत्मबल के सहारे बखूबी पालन किया। **- रविन्दर सूदन**

सभी लेखकों, सभी विधाओं, सभी क्षेत्रों के समसामयिक व जागरूक करने वाले आयामों की श्रेष्ठ रचनाओं को समेटे निरंतर प्रगति करती पत्रिका के लिए आभार. इसीलिए हम प्रतीक्षारत रहते हैं. **- लीला तिवानी**

बच्चू सिंह की ऐतिहासिक सच्चाई बहुत दिलचस्प लगी। देश में ऐसे वीरों के इतिहास को जिंदा रखना ही शोभा देता है। **- गुरमेल सिंह भमरा**

उत्तम सामाजिक, राजनीतिक व साहित्यिक सामग्री से सज्जित पत्रिका हेतु बधाई। सभी रचनाएँ उच्च कोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। **- डॉ संगीता गाँधी**

जय विजय पत्रिका को काफी सरल तरीके से व्यक्त किया जाता है, पत्रिका एक सकारात्मक विचार के साथ आगे बढ़ती रहे। **- संतोष कुमार वर्मा**

जुलाई २०१७ का जय विजय का अंक प्रेषित करने तथा मेरी भी एक लघुकथा को जगह देकर मेरा भी सम्मान बढ़ाने के लिए आपका हृदय से धन्यवाद। अंक की साजसज्जा और संपादकीय के साथ ही विद्वान लेखकों व रचनाकारों की अनुपम रचनाओं से सुसज्जित पत्रिका बहुत अच्छी लगी। **- राजकुमार कांदु**

शानदार, सदा की तरह बेहतरीन। अकबर या महाराणा- अब नीति नियंताओं को समझना पडेगा और इतिहास को बदलना होगा। **- डॉ अ. कीर्तिवर्धन**

गीत, गजल, कविता, विभिन्न विषयों पर लेख, अन्य रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्रियों का स्वागत है जो अत्यन्त पठनीय और सारगर्भित हैं। **- डॉ डी एम मिश्र**

जय विजय का जुलाई अंक मिला, बहुत बहुत धन्यवाद। जो रचनाएँ सबसे पहले पढ़ीं उनमें लघुकथाएँ, कहानियाँ और लेख शामिल हैं। सभी लघुकथाएँ श्रेष्ठ हैं पर राजकुमार कांदु जी की 'बलि का बकरा' और सविता मिश्रा जी की 'वेटिकन सिटी' ने विशेष प्रभावित किया. 'रोजा-उपवास का स्वास्थ्य पर प्रभाव' एक जानकारी वर्धक लेख है. बाकी सब धीरे-धीरे। **- कल्पना रामानी**

हार्दिक बधाई। आपका प्रयास सराहनीय है। कितने ही रचनाकारों को आप एक अच्छा पटल दे रहे हैं। सदैव शुभकामनायें। **- पूनम माटिया**

पत्रिका मिली, धन्यवाद। आप समाज की अच्छी सेवा कर रहे हैं। इसे जारी रखिये। **- महासिंह पूनिया**

साहित्य की विविध सामग्री लिये बहुत ही सुन्दर अंक प्रकाशित किया है। मेरी शुभकामनायें। **- दीनदयाल शर्मा**

रचनाओं का सुन्दर संकलन भेजने के लिए आभार। **- भगवान सिंह कथायत**

जय विजय का अंक अच्छा लगा, भाषा परिमार्जित है. राष्ट्रपरक चिंतन है. सभी विषयों को छूने का प्रयास किया गया है. अंक सफल है, मेरी आप सभी बन्धुवरों को अनेक शुभकामनाएँ. **- रंजीत सिंह**

पत्रिका का अंक भेजने के लिए धन्यवाद। **- प्रणब कुमार गोस्वामी, विशाल शाही, प्रदीप कुमार तिवारी, चन्द्रेश छतलानी, अरुण निषाद, शशांक मिश्र भारती, लवी मिश्रा, देवी प्रसाद गुप्ता, उषा भदौरिया, कनेरी माहेश्वरी, प्रकाश परवानी, विवेकानन्द श्री, अमर सिंह, राजेन्द्र पामेचा**

हमारी रचनाओं को स्थान देने के लिए आभार। **- अनुराग कुमार, विनय कुमार तिवारी, कल्पना भट्ट, प्रभुदयाल श्रीवास्तव, आशीष कुमार त्रिवेदी, लक्ष्मी गौड़, वर्षा वार्ष्णेय, प्रीती श्रीवास्तव**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

बढ़ती जनसंख्या विकास के मार्ग में अवरोधक

देवेन्द्र राज सुथार

बेहताशा बढ़ती जनसंख्या हमारे देश के विकास में अवरोधक होने के साथ ही हमारे जन-जीवन को भी दिन-प्रतिदिन प्रभावित कर रही है। विकास का मॉडल व कोई भी परियोजना वर्तमान जनसंख्या दर को ध्यान में रखकर बनायी जाती है पर अचानक आबादी में वृद्धि होने के कारण परियोजना का जमीनी स्तर पर साकार हो पाना दूभर हो जाता है। जिसके परिमाणस्वरुप विकास धरा रह जाता है। यह स्पष्ट है कि जैसे-जैसे भारत की जनसंख्या बढ़ेगी, वैसे-वैसे गरीबी का रूप भी विकराल होता जायेगा। महंगाई बढ़ती जायेगी और जीवन के अस्तित्व के लिए संघर्ष होना प्रारंभ हो जायेगा। इन्हीं समस्त समस्याओं पर जन साधारण का ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष १९८९ में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की संचालक परिषद ने ११ जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का फैसला लिया।

अभी हाल में संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या २०२४ तक चीन की आबादी को पीछे छोड़कर काफी आगे निकल जायेगी। सन २१०० तक भारत दुनिया का सबसे बडी जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। अभी तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले दुनिया में १० देश हैं- चीन, भारत, नाईजीरिया, काँगो, पाकिस्तान, इथियोपिया-तंजानिया, संयुक्त राज्य, युगांडा, इंडोनेशिया और मिस्र शामिल हैं। इनमें से नाईजीरिया की आबादी बडी तेजी से बढ़ रही हैं। संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या पुनरीक्षण २०१७ के एक अनुमान के अनुसार भारत की आबादी २०३० में १.५ अरब हो जायेगी। अभी चीन की आबादी लगभग १.४१ अरब है और भारत की जनसंख्या १.३४ अरब है। इन दोनों देशों में दुनिया की सबसे ज्यादा १८-१९ प्रतिशत मानव जाति रहती है। चीन के मुकाबले भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या की खबर सुनकर हम खुश तो हो सकते हैं परंतु यह आगे चलकर एक गंभीर समस्या बनेगी।

सवाल है इस बढ़ती जनसंख्या के लिए जिम्मेदार कौन है? दरअसल जितनी सरकार जिम्मेदार नजर आती है, उससे कई गुना अधिक जिम्मेदार भारत की आम जनता यानी हम और आप हैं। आखिर हम क्यों भूखों और नंगों की संख्या खड़ी करने पर तुले हुए हैं? सरकार अपना वोटबैंक सुरक्षित करने के लिए जनसंख्या नियंत्रण अभियान व योजनाओं को हल्के में जाने देती है। वरन् इतिहास गवाह है कि इंदिरा गांधी को जनसंख्या नियंत्रण के लिए पुरुष नसबंदी के कारण सत्ता से बेदखल होना पड़ा था। आखिर कोई सरकार क्यों अपने ही हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाडी चलायेगी? इन्हीं सब कारणों से 'एक बच्चा नीति' भारत में लागू हो पाना अंसभव-सी प्रतीत होता है। हकीकत तो यह कि हम 'दो बच्चे ही अच्छे' के सिद्धांत से भी कोसों दूर है। यदि आंकड़ों के अनुसार देखे तो आजादी के समय भारत की जनसंख्या ३४ करोड़ थी जो जनसंख्या सर्वेक्षण रिपोर्ट २०११ के अनुसार बढकर लगभग १२१.५ करोड़ हो गई है तथा साल २०१७ तक हमारे देश की कुल आबादी लगभग १३३ करोड़ से अधिक आंकी जा रही है। देश की कुल आबादी में ६२.३१ करोड़ जनसंख्या पुरुषों की व ५८.४७ करोड़ जनसंख्या महिलाओं की है। सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है, जहां की कुल आबादी १९.९८ करोड़ है, तो वहीं न्यूनतम आबादी वाला राज्य सिक्किम है जहां की कुल आबादी लगभग ६ लाख है।

हमारे देश में बढ़ती जनसंख्या के कारण भारी मात्रा में खाद्यान्न संकट तो उत्पन्न हो ही रहा है, साथ में इसके कारण देश को भुखमरी, पानी व बिजली की समस्या, आवास की समस्या, अशिक्षा का दंश, चिकित्सा की बदइंतजामी व रोजगार के कम होते विकल्प इत्यादि प्रकार की समस्याओं से जूझना पड रहा है। हमारी विशाल जनसंख्या का एक कारण पुरुषवादी मानसिकता का होना भी है। घर चलाने व वंश की पहचान के तौर पर बेटे के इंतजार में बेटियों की संख्या में वृद्धि करके लंबा-चौड़ा परिवार बढ़ाया जाता है। वहीं सरकार द्वारा निर्धारित उम्र से कम उम्र में बालविवाह कराये जाने से भी जनसंख्या का भार बढ़ रहा है। देश की अधिकांश आबादी निरक्षर होने के कारण वे देश व अर्थव्यवस्था पर पड रहे जनसंख्या के प्रतिकूल प्रभावों से अछूते ही रहते है। यह सच है कि आज कई राज्यों की सरकारें इस विषय में गंभीर हुई हैं। इसके परिणामस्वरूप असम की राज्य सरकार ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए दो से अधिक संतान वाले लोगों को सरकारी नौकरी के लिए अयोग्य करार दिया। वहीं राजस्थान सरकार ने शगुन में निरोध देने जैसे योजनाओं को संचाालित कर जनसंख्या नियंत्रण में योगदान किया। ध्यान रहे कि बढ़ती जनसंख्या पर अंकुश और देश का विकास दोनों ही आम जनता और सरकार के हाथों में है। ऐसे में सोचना दोनों को है। क्या हम जनसंख्या की तीव्र वृद्धि कर भविष्य का खतरा तो मोल नहीं ले रहे हैं?

जरूरत है कि सरकार इस दिशा में मुहिम चलाये और एक या दो बच्चा नीति का अनुपालन राष्ट्रीय स्तर पर हो। सरकारी कर्मचारियों व आरक्षण के लाभार्थियों के लिए एक बच्चा नीति चलायी जाये। ताकि वे आरक्षण व सरकारी ओहदे का बाँड भर सके। सरकार पदोन्नति के लिए भी बच्चों की संख्या को आधार माने। उदाहरण के तौर पर एक बच्चे वालों को पहले और दो या दो से अधिक बच्चें वालों को उसके बाद प्रोमोशन प्रदान करे।

इसके साथ ही परिवार नियोजन पर ध्यान दिया (शेष पृष्ठ ३० पर)

हिंदी लाओ बनाम अंग्रेजी हटाओ

डॉ वेदप्रताप वैदिक

केंद्रीय मंत्री वैंकया नायडू ने ऐसी बात कह दी है, जो मैं अमित शाह और नरेंद्र मोदी के मुंह से सुनना चाहता हूं। जो बात नायडू ने कही है, उससे सर संघचालक मोहन भागवत पूर्णतया सहमत हैं लेकिन वे भी जरा खुलकर बोलें, यह जरूरी है। यदि भागवत जी इस मुद्दे पर जमकर बोलें, तो हमारे नेताओं और नौकरशाहों की नींद जरूर खुलेगी। कौन-सी है वह बात जो नायडू ने बोल दी है? नायडू ने देश की सड़ती हुई रग पर उंगली रख दी है। उन्होंने कहा है कि हम लोग अंग्रेजी के मोह-पाश में फंसते चले जा रहे हैं। हमारी 'भाषा' के साथ-साथ हमारी 'भावना' भी बदलती जा रही है। हमें हमारी शिक्षा नीति पर फिर से विचार करने की जरूरत है। राष्ट्रभाषा के तौर पर हिंदी सभी को सीखनी चाहिए और समस्त राष्ट्रीय भाषाओं को भी समान रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

यही बात गांधी, लोहिया और गोलवलकर कहा करते थे, लेकिन हमारे नेताओं की बौद्धिक गुलामी इतनी गहरी है कि उनकी हिम्मत नहीं कि वे अंग्रेजी के वर्चस्व को चुनौती दे। अपने आप को राष्ट्रवादी कहने वाले नेता सिर्फ एक ही रट लगाए रहते हैं, हिंदी लाओ, हिंदी लाओ। ये लोग हिंदी के सबसे बड़े दुश्मन हैं, क्योंकि हिंदी को खत्म करनेवाली अंग्रेजी के खिलाफ वे एक शब्द भी नहीं बोलते। जब तक अंग्रेजी का दबदबा बना रहेगा, हिंदी का दम घुटता चला जाएगा। इसके अलावा हिंदी-हिंदी चिल्लाकर वे अन्य समस्त भारतीय भाषाओं को हिंदी का दुश्मन बना देते हैं।

हिंदी को इस दोहरी दुश्मनी से बचाना हो तो 'अंग्रेजी हटाओ और भारतीय भाषाएं लाओ' यही एक मात्र नारा है। अंग्रेजी हटाओ का अर्थ अंग्रेजी भाषा से नफरत करना नहीं है। उसके वर्चस्व, एकाधिकार और उसकी अनिवार्यता का विरोध करना है। विदेशी भाषाओं का ज्ञान तो स्वागत योग्य है। मैंने जब अपनी पीएच.डी. का शोधग्रंथ (अंतरराष्ट्रीय राजनीति) हिंदी में लिखा तो रूसी, फारसी और जर्मन भी सीखी। किसी भाषा से कोई मूर्ख ही नफरत कर सकता है, लेकिन उससे बड़ा मूर्ख कौन होगा, जो अपनी भाषा को नौकरानी और विदेशी भाषा को महारानी मान बैठे? भारत की संसद, अदालत और सरकारी कामकाज में अंग्रेजी को महारानी का दर्जा देनेवाले नेताओं और नौकरशाहों को आप क्या कहेंगे? हमारे इन भोले भंडारियों को यह पता नहीं कि अंग्रेजी हटेगी, तो हिंदी समेत अन्य भाषाओं के लिए जगह अपने आप खाली हो जाएगी। ■

देश के शत्रुओं का भांडाफोड़

डॉ विवेक आर्य

आर्य लोग विदेशी आक्रमणकारी थे, उन्होंने यहाँ आकर मूलनिवासियों के साथ युद्ध किया, उन्हें मारा, हराया, उनकी औरतों के साथ विवाह किया और बच्चे पैदा किये। न जाने कितनी मनगढ़त कल्पनाएं। इसे हम बौद्धिक कचरा फैलाना कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस मनगढ़त कल्पना का लाभ पहले अंग्रेजों ने उठाया, फिर द्रविड़-आर्य के नाम पर गन्दी राजनीति करने वाले दक्षिण भारतीय नेताओं ने उठाया। आज मूलनिवासी-आर्य विदेशी के नाम पर दलित राजनीति करने वाले उठा रहे हैं। पिछले दिनों 'द हिन्दू' अखबार में लेखक टोनी जोसफ ने अमेरिका के जेनेटिक स्टडीज के शोध पत्र के आधार पर यह सिद्ध करने का असफल प्रयास किया कि आर्य विदेशी थे। उनके इस लेख में अनेक विसंगतियां, झूठ और फरेब था, जिन्हें पढ़कर पाठक यही निष्कर्ष निकालेंगे कि यह आदमी फर्जी है।

अमेरिका में रहने वाले वैज्ञानिक अनिल कुमार सूरी एवं ब्रेकिंग इंडिया पुस्तक के सह लेखक अरविंदन नीलकंदन ने दो लेखों का लेखन कर टोनी जोसफ की चोरी पकड़ी है। दिलीप सी मंडल सरीखे बिके हुए पत्रकारों ने टोनी जोसफ के लेख को सोशल मीडिया में खूब प्रचारित किया है। आपको जानकर अचम्भा होगा दलित राजनीति करने वाली पार्टियों ने कुछ पक्षपाती वैज्ञानिकों को आर्यों को विदेशी दिखाने के लिए जबरदस्त फंडिंग भी की है।

इसके विपरीत हिन्दू समाज जो ठीक वैसे ही सो रहा है जैसा १२०० वर्षों से सोता आया है। मैं अपने सीमित साधनों से इस सुनियोजित अंतर्राष्ट्रीय षड़यंत्र को असफल बनाने वाले लेखकों की प्रशंसा करना चाहूंगा। उन्होंने इन देश के शत्रुओं का भांडाफोड़ किया। लेख अंग्रेजी में है। शोध पत्र होने के कारण मेडिकल टर्मिनोलॉजी का प्रयोग होना अपेक्षित हैं। गंभीर पाठकों को पहले टोनी जोसफ, फिर अनिल सूरी और अंत में अरविंदन के लेख को पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन अवश्य करना चाहिए।

'आर्य विदेशी थे, आक्रमणकारी थे' यह भ्रान्ति इसलिए फैली कि विदेशी इतिहासकारों ने वेदों में इतिहास को माना। वर्तमान में वेदों में इतिहास के सम्बन्ध में दो प्रकार की मान्यतायें प्रचलित हैं। विदेशी लेखक वेदों में आर्य-द्रविड़ युद्ध, आर्यों को विदेशी दिखाने में लगे हैं। जबकि भारतीय लेखक वेदों में श्री राम, श्री कृष्ण, अयोध्या नगरी, सरस्वती नदी, इन्द्र और स्वर्ग दिखाने में लगे हैं। विदेशियों की तो समझ में आती है, उनका ज्ञान सीमित है और वे निष्पक्ष भी नहीं हैं। मगर भारतीय लेखक भी कम अँधेरे में नहीं हैं। वे वेदों में अपनी सहूलियत के अनुसार इतिहास खोजते हैं। वेदों को रामायण-महाभारत से नत्थी करने को वे शोध मानते हैं। मगर वेदों में जब कोई आर्य-द्रविड़ युद्ध दिखाए, तो उसे गलत मानते हैं। भई आप अगर केवल यह मान ले कि वेदों में इतिहास ही नहीं है। तो आपकी सभी शंकाओं का निवारण हो जाये।

एक उदाहरण देकर अपनी बात सिद्ध करना चाहूंगा कि इतिहासकार कैसे भ्रमित हैं। कॉनरेड एल्स्ट (Koenraad Elst) विदेशी लेखक है। आप सीता राम गोयल और रामस्वरूप जी से प्रभावित थे। आजकल आप भारतीय लेखकों के पक्ष में अपने विचार रखते हैं। आप भी इसी दुविधा का शिकार हो गए।

एक ओर आपने आर्यों के विदेशी होने का खंडन किया। दूसरी ओर आप वैदिक राजाओं के युद्ध करने का वेदों में उल्लेख सिद्ध कर रहे हैं।

http://www.pragyata.com/mag/genetics_and_the_aryan_invasion_debate_367

https://www.academia.edu/30880829/Zurich1407VasisthaKE.doc

स्वामी दयानन्द ने वेदों में इतिहास होने की मान्यता का खंडन किया है। उनका कहना था कि वेद शाश्वत हैं। वेद परमात्मा की नित्य वाणी है। वेदों में सृष्टि रचना, वेद रचना आदि नित्य इतिहास ही हो सकता है, किन्तु किसी व्यक्ति विशेष का इतिहास नहीं हो सकता। इस सृष्टि के आदि में चारों वेद ऋषियों के हृदय में प्रकाशित हुए। वेद ज्ञान का भी दूसरा नाम है। वेदों के माध्यम से ईश्वर द्वारा समस्त मानव जाति को ज्ञान प्रदान किया गया जिससे वह अपनी उत्पत्ति के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। यह ज्ञान ईश्वर द्वारा जिस प्रकार से वर्तमान सृष्टि में प्रदान किया गया उसी प्रकार से पूर्व की सृष्टियों में भी दिया जाता रहा और आगे आने वाली सृष्टियों में भी दिया जायेगा। जिस ज्ञान का उपदेश परमात्मा द्वारा सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को दिया गया उसमें किसी भी प्रकार का इतिहास नहीं हो सकता। क्योंकि इतिहास किसी रचना में उससे पूर्वकाल में उत्पन्न मनुष्यों का हुआ करता है। सृष्टि के आरम्भ में जब कोई मनुष्य ही नहीं था फिर उनका किसी भी प्रकार का इतिहास वेदों में पहले से ही वर्णित होना संभव ही नहीं है। मनुष्य का ऐतिहासिक क्रम वेदों की उत्पत्ति के पश्चात ही आरम्भ होता है।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

सपने आपके स्वास्थ्य के दर्पण हैं

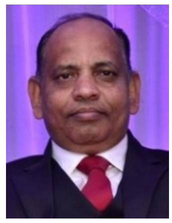

विजय कुमार सिंघल

नींद में सपने देखना एक स्वाभाविक बात है। लगभग सभी लोग सपने देखते हैं और बहुत से लोग तो रोज ही देखते हैं। बहुत से लोग सपनों को भविष्य का सूचक मानते हैं और उनका शुभ या अशुभ फल जानना चाहते हैं, परन्तु इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। सपने भविष्य के सूचक हों या न हों, लेकिन ये आपके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के सूचक अवश्य होते हैं। सुहावने और सुखद सपने देखने वालों का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा होता है, जबकि डरावने और दुःखद सपने देखने वालों का स्वास्थ्य निश्चय ही खराब होता है।

सपने दिखाई देना आवश्यक नहीं है। वास्तव में यदि आपको सपने नहीं आते, तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि बिना सपनों की नींद गहरी होती है, जिससे शरीर और मन को पूर्ण विश्राम मिलता है। यदि सपने कभी-कभी और छोटे-छोटे दिखाई देते हैं, तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। सुखांत सपने भी देखना हानिकारक नहीं है। लेकिन यदि सपने अधिक आते हों, बहुत डरावने होते हों, जिससे आपकी नींद अचानक खुल जाती हो अथवा दुःखांत होते हों, तो अवश्य चिन्ता की बात है, क्योंकि ऐसे सपने आपकी मानसिक और शारीरिक अस्वस्थता के द्योतक हैं।

पहले मानसिक स्वास्थ्य को लीजिए। जो लोग बहुत अधिक विषय भोगों का चिन्तन करते हैं, किसी व्यक्ति विशेष की कामना करते हैं, उनके मन की कुंठा प्रायः सपनों के माध्यम से निकल जाती है। दूसरे शब्दों में, बहुत से सुखद या दुःखद सपने हमारे मन की दमित आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति होते हैं। एक प्रकार से ऐसे सपने हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं। लेकिन ऐसे सपने अधिक संख्या में आना खतरनाक है। ऐसी स्थिति में अपने मन को साफ रखना चाहिए। यदि आप किसी व्यक्ति विशेष के प्रति दुर्भावना रखते हैं, तो उसे अर्थात् उसके कारण को समाप्त करना चाहिए। भ्रामरी प्राणायाम और ओंकार ध्वनि (उद्गीत) इसमें बहुत सहायता करते हैं।

डरावने सपने आना, जैसे कोई दुर्घटना होने, ऊँचाई से नीचे गिरने, पानी में डूबने अथवा कहीं जंगल या भवन में रास्ता भूल जाने का सपना देखना गम्भीर स्वास्थ्य समस्याओं का सूचक होता है। विशेष रूप से इनका सम्बंध पेट की खराबियों से होता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को खून की उल्टी होने का सपना आया। जाँच से पता चला कि उसके पेट में अल्सर था। इसी तरह गड्ढे में गिरने का सपना भयंकर कब्ज का सूचक हो सकता है। ऐसी स्थिति में अपने स्वास्थ्य की जाँच करानी चाहिए और जो भी कमी पायी जाये, उसे दूर करना चाहिए। इस प्रकार यदि सपनों का सही अर्थ समझा जाये, तो वे हमारे स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायक हो सकते हैं। ■

मैं नींव का पत्थर हूँ मेरा नाम नहीं है
रातें हैं मेरे नाम सुबह-शाम नहीं है
सदियों से खड़े हैं मेरे शाने पे खण्डर कुछ
ये मेरी शराफत का तो इनआम नहीं है
चोटी पे मुझे लेके कभी कोई चढ़ेगा
मेरे लिए ऐसा कोई पैगाम नहीं है
मैं चैन से पलकों को किए बन्द पड़ा हूँ
ये झूठ है मुझको
यहाँ आराम नहीं है
ये भी तो नहीं सच
कि तेरे नाम को लेकर
ऐ 'शान्त' मेरे सर
कोई इल्जाम नहीं है

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

फूल में अब खास क्या, जो रंग गुलशन में नहीं
रूप का अम्बार सजनी का जो दामन में नहीं
मौजे मय बर्बाद मुझको कर दिया है इस कदर
खो गया सब हौसला, कोई लहर मन में नहीं
वो जवानी की रवानी अब कहाँ है जीस्त में
खूं निचोड़ा वक्त ने सब, जोर अब तन में नहीं
पेड़-पौधे काटकर बंजर किया धरती तमाम
हर तरफ मदहोश घर, तुलसी भी आँगन में नही
मेघ का बदला रवैया, अब ठिकाना लापता
सूख गयी धरती यहाँ,
बारिश तो सावन में नहीं
यूँ जमाना बदला 'काली',
हो गया दिल कटु बहुत
वायु उत्तेजित है, ठंडक
अब तो चन्दन में नहीं

-- कालीपद 'प्रसाद'

मंजर दिल का उदास अच्छा नहीं लगता
तुम नहीं होते पास अच्छा नहीं लगता
तेरी कदबुलन्दी से नहीं इनकार कोई
लेकिन छोटे एहसास, अच्छा नहीं लगता
जैसे भी हैं हम रहने दो वैसा ही हमको
बनके कुछ रहना खास अच्छा नहीं लगता
जब से तेरी यादों ने बसाया है घर दिल में
ये काफिला-ए-अन्फास अच्छा नहीं लगता
ये मुखौटों से कह दो जाकर 'नदीश' अब
सच का इतना भी पास अच्छा नहीं लगता

-- लोकेश नशीने 'नदीश'

पलक बंद कर लूं, आंखों में बसा लूं
आ पास मेरे बैठ, तुझे अपना बना लूं
हरतरफ तेरा चेहरा दिखता है अब मुझे
जहांतक मैं देखता हूं, जहां नजर डालूँ
कुछ गलतियां तुम मेरी, आज छुपा लो
नादानियां कुछ अपनी, मैं आज छुपा लूं
मुहब्बत हुई है तुमसे, बेइंतहा मुझको
जी चाहता है तुमको, इबादत ही बना लूं
वजूद मेरा मिटकर तेरा वजूद हो जाए
फासले मिटाकर तुझमें मैं आज समा लूं

-- राजेश सिंह

आशाओं के दीप जलाने का यह अवसर है
अब तो प्रिय मुस्कान खिलाने का यह अवसर है
वक्त रहा प्रतिकूल सदा ही, पर हो ना मायूस
अब उजड़ा संसार बसाने का यह अवसर है
द्वेष, बैर, कटुता ने बांटा भाई-भाई को
वैमनस्य-दीवार ढहाने का यह अवसर है
लेकर हाथ चलें हाथों में, मिलें कदम कदम से
चैन-अमन का गांव बसाने का यह अवसर है
पीर, दर्द, गम और व्यथाओं का है यह आलम
मानव-मन को आज सजाने का यह अवसर है
महके मानवता का घर अब, अपनापन बिखरे
नेह, प्रेम के भाव निभाने
का यह अवसर है
बहुत हो चुका तंद्रा तोड़ो,
उठो 'शरद' अब सारे
अब तो हमको कर दिखलाने
का यह अवसर है

-- प्रो. शरद नारायण खरे

यहां पर दिल जिगर रूहें और झूठा प्यार बिकते हैं
इस दुनिया की मंडी में कमीने यार बिकते हैं
शर्म थी पहले थोड़ी छुपके होते थे ये सब धंधे
शराफत और ईमान अब तो सरे-बाजार बिकते हैं
अपनापन हुआ जख्मी भरोसा आह भरता है चंद
सिक्कों के लालच में जब रिश्तेदार बिकते हैं
नदियां दूध की जिस मुल्क में बहती थीं सदियों से
वहां अब कौड़ियों में भूख से लाचार बिकते हैं
सरक जाता है कंधे से पल्लू जब फूलवाली का
तब कहीं जा फूल उसके
यहां दो-चार बिकते हैं
वक्त के साथ कीमत खत्म
हो जाती है हर शै की
शाम को रद्दी बनकर
सुबह के अखबार बिकते हैं

-- भरत मल्होत्रा

आजकल रखना जरूरी है नजर हालात पर
क्या पता के रूठ जाए कौन कब किस बात पर
की बहुत बातें जिन्होंने नीति की व्यवहार की
आ गये वो भी सियासत की उसी औकात पर
काश ऐसा दौर भी देखे कभी तो जिन्दगी
आदमीयत जब पड़े भारी धरम पर जात पर
मोल इन खुद्दारियों का क्या उन्हें मालूम जो
पल रहे हैं चंद टुकड़ों की मिली खैरात पर
लड़ रहा है देखिये हिम्मत लिये क्या बात है
एक दीपक पड़ रहा भारी अँधेरी रात पर
नाम पर भगवान के होने लगा व्यापार जो
है कुठाराघात ये आदम
के अहसासात पर
चंद रुपयों में वफा
ईमान गिरवी रख दिये
हैं तभी चुप वो गरीबों
से जुड़े मसलात पर

-- सतीश बंसल

ख्वाब आँखों में दिखा तो भा गया
मौसम बिना बादलों के आ गया
याद तेरी थी घिरी घर छा गई
नैन मेरे खुल गए तकता गया
खूब थी वो रात आ ढलने लगी
भोर का है कारवाँ चलता गया
लोग भी आकर मिले पादान पर
पर न थी रौनक गिला बढ़ता गया
एक दिन वह शाम जब ढलने लगी
दिख गया उनका महल कहता गया
क्या हुआ क्योंकर हुआ बदरंग यह
जो खिला था नूर क्यों गिरता गया
'गौतम' उमड़ कर जब चली है हवा
वक्त का है शोर उठ समता गया

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

हम गजल अपने लिए कम ही लिखे
गम से यारी हो गयी गम ही लिखे
ये किसी शायर की मजबूरी नहीं
खौलते अश्कों को वो नम ही लिखे
वो बड़े शायर थे शहरों में रमे
गाँव के दुख-दर्द तो हम ही लिखे
गाँव में होता कहाँ चन्दन का पेड़
हम तो पीपल नीम शीशम ही लिखे
रोशनी मिलती जिसे खैरात में
वो अमावस को भी पूनम ही लिखे

-- डॉ डी एम मिश्र

रिश्तों के पुल टूट गये हैं, तट ने कितने जख्म सहे हैं
उसका सच भी झूठा लगता, उसने इतने झूठ कहे हैं
लाख रहे मजबूत किले पर, होकर सब कमजोर ढहे हैं
तट के साथ रुकी कब नदिया
तट कब उसके साथ बहे हैं?
मौत हुई बूढ़े ख्वाबों की
फिर जन्मे कुछ ख्वाब नये हैं
इन्टरनेट का युग आया है
हम बच्चों से सीख रहे हैं

-- डॉ कमलेश द्विवेदी

जमाना है तिजारत का, तिजारत ही तिजारत है
तिजारत में सियासत है, सियासत में तिजारत है
नहीं अब वक्त है, ईमानदारी का सचाई का
खनक को देखते ही, हो गया ईमान गारत है
हुनर बाजार में बिकता, इल्म की बोलियाँ लगतीं
वजीरों का वतन है ये, दलालों का ही भारत है
प्रजा के तन्त्र में कोई, नहीं सुनता प्रजा की है
दिखाने को लिखी, मोटे हरफ में बस इबारत है
हवा का एक झोंका ही धराशायी बना देगा
खड़ी है खोखली बुनियाद
पर, ऊँची इमारत है
लगा है घुन नशेमन में,
फकत अब 'रूप' है बाकी
हमारी अंजुमन में तो,
निगहेबानी नदारत है

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

मैट्रिक का रिजल्ट

आनन्द अजय

आज बिहार बोर्ड मैट्रिक रिजल्ट आने वाला है, ललनमा तो गौ माता को भोरे से जई, जनेरा काट के खिला रहा है और कह रहा कि- 'हे गाय माता! बस मैथ संभाल लो, बाकी संस्कृत गणेश जी और विज्ञान भोले बाबा संभाल रहे हैं।' ओमप्रकशवा तो पिछले १५ दिन से सरस्वती माता से डेली मोदी जी की तरह अपने 'मन की बात' कह रहा है कि- 'हे माता ऐमकी बार संभाल लीजिए, पक्का अगला बेर सरस्वती पूजा करेंगे, रामकृपाली डीजे भी फूल साउंड में बजाएंगे और पूरवारी टोला वाला सबको देखा देंगे कि केतना ताकत हम पछियारी टोला वाला में है।'

उतरवारी टोला के दसरथ मिश्र तो अपन छोटका लईकवा पर भोरे से नजर रख रहे हैं, कहीं रिजल्ट ऊंच-नीच हुआ तो कुछ उल्टा-सीधा न हमर लईकवा कर ले। एके गो बेटा है, उभी न हो रहा था, ऊ रामपुर वाली फुआ गांव के पंडित जी से झाड़-फूँक करवाए तब जाके ई परमेशरा हुआ है। गोलूआ तो रतिया में ही प्लान बना लिया है कि अगर इस साल फेल हुए तो अगला बेर सरस्वती पूजा नहीं करेंगे और नहीं डीजे बजाएंगे, ओरहना के नागिन डांस भी न करेंगे।

अनिल बाबू तो अपन बेटवा पर दुनाली तान दिए है कि बउओ अगर तनिको रिजल्ट में दाब-उलार हुआ तो मार के बुखार छोड़ा देंगे, तू जेतना कहा उतना खर्चा किए, माईक्रोमैक्स के एंड्रायड मोबाईल भी खरीद दिए। अब उनकर बेटा कह रहा हे कि हम तो लिखिए दिए हैं पप्पा, लेकिन अब कोपी चेक करने वाला कईसे नंबर देता है ऊ हम कईसे कहें? चंदनमा को तो कोई टेंशने न है क्योंकि उसक' माधोपुर वाले फूफा आईडिया दिए थे कि भारी कुश्चन रहेगा और नहीं कुछो समझ में आएगा, तो कोपी में पचसटकिया चिपका देना बाकी निश्चिंत रहो। और गीता वाला दर्शन भी समझा दिए हैं कि करम किया है तो फल की चिंता मत करो।

पूरे केदारपुर गांव में चहल-पहल का माहौल है, वैसे यह गांव आज आजादी के ७० वर्ष बाद भी विद्रूपता में जीने को मजबूर है, लेकिन राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के अंतर्गत टोले-टोले बिजली का पोल खड़ा हो गया है। लाईन तो आता नहीं है, फेकुआ तो उस तार पर ही अपना कपड़ा-लत्ता सुखाता है। रोड भी प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से इस साल ही बनी है, फिर भी इंटरनेट की पहुंच गांव में अब हो चुकी है।

गांव में इंटरनेट पहुंच चुका है, फेसबुक की पहुंच है, लेकिन सूचना क्रांति की इस युग में आज भी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है बबलू सिंह पर। बबलू सिंह को ससुराल से १५० किलो की पत्नी के अलावा दहेज में लैपटाप, एलसीडी, फ्रीज, जनरेटर मिला था। प्रिंटर गोरलगाई के पैसे से बाद में खरीदे हैं। आज सुबह-सुबह दुकान खोले हैं। वैसे मोबाईल पर इंटरनेट की सुविधा हर दूसरे घर में है, लेकिन बबलू सिंह एक इंटरनेट से पूरे गांव में क्रांति ला दिए हैं। आज बहुत बड़ी जिम्मेदारी उनके ऊपर है, कल शाम ए-४ साईज के पेपर चौक पर से मंगवाए हैं। अभिभावक सब बबलू के दरवाजे के आस-पास भोरे से ही मंडरा रहे है।

दोपहर १ बजे रिजल्ट आ गया है। बिहार बोर्ड का सर्वर हिल-डोल कर रहा है, लेकिन बबलू का बिजनस तो आज गर्दा उड़ा रहा है। १० रुपए प्रति रिजल्ट बता रहे हैं। फर्स्ट डिविजन वाला खुशी से गोबर में लात मार रहा है। सेकंड डिविजन वाला कई खुश है तो कई कह रहा है कि साला इस बार एक्जमवे टाईट ले लिया है। थर्ड डिविजन वाले तो ऐसे निश्चिंत हैं जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ में अफ्रीकन कंट्री। सब बस कैसहूं घिचा तीरा के पास हो गए।

ठनका तो अनिल बाबू अपन बेटवा पर गिरा रहे है। दू-चार लात हुमच दिए हैं, मम्मी बीच में हस्तक्षेप करके बचायी है। बोल रहे कि आज खाना नहीं खाने देंगे, लेकिन मां का प्यार चुपके-चुपके प्राप्त हो रहा है। पिताजी से छिपा के तीन बार भोरे से अब तक खिला चुकी है। दू नंबर से इनकर लईकवा विज्ञान में फेल हो गया है। अनिल बाबू बुलेट निकाले हैं और चल दिए है चौक वाले मास्टर को गरियाने कि तुम्हीं ठीक से नहीं पढ़ाए हो, तो हमार बचवा फेल हुआ है।

कोपी में पचसटकिया चिपकाने वाला चंदनमा भी २ गो विषय में फेल है। उसके फूफा का तकनीक बेअसर रहा। मन ही मन फूफा को गरिया रहा है, साथ ही उस कोपी चेक करने वाले मास्टर को भी कि साला २५० रूपया भी गया और फेल भी हो गए।

गोलूआ के पापा रामकृपाल सिंह तो उसको बांस लेकर चहेंटे है, और बोल रहे ऐतना पढ़ा था, भोरबे रात से उठकर पढता था फिर भी सेकंडे डिविजन काहे हुआ रे, कोन झोल किया तू, कुश्चनवां लेकर आओ देखते है, तकिया के नीचे से मचोराएल मुचराएल Question उठा करके लाया है, कुर्सी पर बैठे-बैठे पूछे हैं कि साधारण ब्याज का फार्मूला बताओ।

गोलूआ बताया है, मूलधन x समय x दर बट्टा सौ! और (a+b) का स्क्वायर बताओ, गोलूआ फिर एकदम सही बताया है। रामकृपाल सिंह बोले हैं- ई तो एकदम सही है, बोर्ड को चैलेंज करेंगे भाई, बोर्ड को हिला देंगे, बिहार बोर्ड के का बुझा रहा है। रे गोलुआ! सीतामढ़ी वाले एक मुकेश चचा नेता न है, जो भाजपा की हर रैली में पोस्टर चिपकाते हैं, ऊ चचा को फोन लगाओ। उनकर पहुंच ऊपर तक है, पटना बोर्ड तक जाएंगे। तू टेंशन मत ले गोलू, नंबर बढ़वाके रहेंगे।

पछियारी टोला वाली सुनितिया भी फर्स्ट डिविजन से पास की है, गांव के बुजुर्ग सब चाय पीने और मिठाई के डिमांड के लिए पधार रहे हैं। २ लीटर दूध था, चाय बनाते-बनाते सारा खत्म हो गया है, अब पाउडर वाला दूध लाने के लिए, सुनितिया के पिताजी स्पलेंडर मोटर साईकिल निकाल के चौक पर गए हैं। जहां देखते कि चार लोग खड़ा है, मोबाईल निकालते और बोलते 'हां मुखिया जी, सुनितिया फर्स्ट डिविजन लाई है, बिहान भोरे पेपरवा देख लेना, स्कूलिया तो टॉप है अब शायद जिला में भी नाम आया है।' बगल के ही रामाधीर बाबू के लईका हिंदी छोड़ के चारो विषय में क्रॉस लगाया है, रामाधीर बाबू अपने बेटवा को लतिया अलग रहे हैं, सुनितिया के सफलता का ताना अलग दे रहे हैं। इसको अपने फेल होने से ज्यादा टेंसन सुनितिया के पास होने और उसके चलते ताना खाने से हो रहा है।

सुनितिया के दरवाजे पर प्रमोद मिश्र पंडित पधारे हैं। विवाह का चर्चा भी चल रहा है। पंडित जी ने वही घिसा-पिटा डायलॉग मारा है कि देखिए बेटी पराया धन होती है, अब मैट्रिक पास हो गई है, बियाह शादी सोचिए, हमरे नजर में बगल गांव बेलहिया के गोविन्द माधव एक दम बेहतरीन, हैंडसम लईका है, स्मार्ट तो ऐतना है कि पूछिए मत। विवाह की बात सुनकर सुनितिया भी मुस्किया रही है।

सुनितिया के पापा चाय चुस्की लेते हुए, बात बदलते हुए बोले हैं कि अब देखो १०,००० रुपया नीतिश कुमार प्रोत्साहन राशि इनाम देंगे। इज्जत हमर गांव में बढ़ गया है, आज जो तुमको माँगना हो, माँग लो। सुनितिया तीस पईसी मुस्कान छोड़ते हुए अंगना में भाग गई है। कुछ देर बाद में उसकी मम्मी बाहर निकली है। अब उसकी माँ कहती हैं- 'ए सुनितिया के पप्पा, बहुते दिन से कान में के बालि खरीदे के मन है ऐकर, कान में के एगो बाली बिहान सीतामढ़ी सोनपट्टी में ले जाके खरीद दीजिएगा।' उधर अनिल बाबू मास्टर को गरियाने के लिए बुलेट से खोज रहे हैं। रामकृपाल सिंह रैली में पोस्टर चिपकाने वाले नेता चचा से बिहार बोर्ड को चैलेंज करवाने के लिए फोन मिला रहे हैं, कवरेज एरिया से बाहर बता रहा है। चंदनमा अपने माधोपुर वाले फूफा को गरिया रहा है कि उनके ही आईडिया के चलते हम फेल हुए हैं। ■

बाल कविता

छपाक छैया, ताल तलैया, नाचें हम बादल संग भैया
आसमान से गिरती बूंदें, तन को अपने सहलाती हैं
ठंडी ठंडी चले हवाएं, मन को अपने हर्षाती हैं
कागज की नाव चली तो, मां लेती है अपनी बलैया
काले-काले बादल छाए,
बालमन को जो हैं डरायें,
युवा हृदय में प्रेम जगाकर,
घनघोर घटाएं इन्हें लुभायें
कृषक हृदय को हर्षित करती,
जो हम सबके हैं अन्न देवैया

-- प्रदीप कुमार तिवारी

भारतीय लिपियों का मिश्रित विकास

नरेन्द्र परिहार

आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, जहाँ विश्व एक बिंदु में सिमट गया है। इस बिंदु के आसपास या उसके गर्भ में भी प्रोट्रान या न्यूट्रान का विकास क्यों न हो, वह सभी प्रगतिशील व चैतन्य समाज, देश, भूभाग को ज्ञात हो जाता है और उत्तरोत्तर उसमें विज्ञान अपना योगदान देती है और उसे और भी विकसित करती है। भाषा , लिपि की भी विकासशील सभ्यता में यही स्थिति है। विज्ञान प्रमाण मांगती है जबकि कि वंदतियों व धार्मिक विश्वासों को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। सिंधु घाटी सभ्यता कितनी भी विकसित मानी जाती रही है अपने गर्भ में वे प्रमाण नहीं दे सकी कि भारतीय भाषा संस्कृत, देवनागरी या आज की प्रचलित भाषाएँ व लिपि से अपना अस्तित्व दिखा सके। ईसापूर्व १५०० से ४०० ई.पूर्व तक का सफर भारतीय भाषा या लिपि ने अपने अंधकारमय कूएँ में समेट दिया है। उत्खनन् इसके प्रमाण है। ऐसा नहीं है कि उस काल में उससे पूर्व हमारे पूर्वज ईशारों की बोली भी नहीं जानते होंगे। बस है नहीं तो उसका प्रमाण ईसा पूर्व ४०० के साथ ब्राह्मी लिपि के प्रमाण भारतीय परिवेश में मिलते हैं। इसे क्रांति युग माना जाता है, जहाँ दो राजा महावीर तीर्थंकर व महात्मा बुद्ध ने एकेश्वरवाद को महत्व दिया।आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, जहाँ विश्व एक बिंदू में सिमट गया है। इस बिंदू के आसपास या उसके गर्भ में भी प्रोट्रान का या न्यूट्रान का भी क्यों न विकास हो वह सभी प्रगतिशील व चेतन्य समाज, देश, भूभाग को ज्ञात हो जाता है और उत्तरोत्तर उसमें विज्ञान अपना योगदान देती है और उसे और भी विकसित करती है। भाषा , लिपि की भी विकासशील सभ्यता में यही स्थिति है। विज्ञान प्रमाण मांगती है जबकि कि वंदतियों व धार्मिक विश्वासों को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। सिंधु घाटी सभ्यता कितनी भी विकसित मानी जाती रही है, अपने गर्भ में वह प्रमाण नहीं दे सकी कि भारतीय भाषा संस्कृत, देवनागरी या आज की प्रचलित भाषाएँ व लिपि से अपना अस्तित्व दिखा सके। ई.पू. १५०० से ई.पू. ४०० तक का सफर भारतीय भाषा या लिपि ने अपने अंधकारमय कुँए में समेट दिया है, उत्खनन इसके प्रमाण है। ऐसा नहीं है कि उस काल में उससे पूर्व हमारे पूर्वज इशारों की भाषा-बोली भी नहीं जानते होंगे। बस है नहीं तो उसका प्रमाण।

ईसापूर्व ४०० के साथ ब्राह्मी लिपि के प्रमाण भारतीय परिवेश में मिलते हैं। इसे क्रांति युग माना जाता है, जहाँ दो राजा महावीर तीर्थंकर व महात्मा बुद्ध ने एकेश्वरवाद को महत्व दिया। संसार में कोई भी लिपि ऐसी नहीं है जिसमें दूसरी लिपि का सम्मिश्रण न हो। ब्राह्मी लिपि, सिंधु घाटी के अंतकाल में चित्रात्मक व भावात्मक लिपि से वर्णात्मक बन चुकी विकसित लिपि ही है, जो फिनिशियन (उत्तरी सेमिटिक) तथा सिंधु घाटी लिपि व आरमायक लिपि द्वारा विकसित हुई है। मौर्यवंश (ई.पू. ३४५ से ई.पू. १८० तक), शुंग वंश (ई.पू. १८० से ई.पू. ७८ तक), काव्य वंश (ई.पू. ६८ से ई.पू. २७ तक), सातवाहन (दक्षिण से) (ई.पू. २७ से २२७ ईसवी तक), शक वंश (ई.पू. १५ से), पल्लव वंश, कुषाण वंश (१६५ ई.पू. से १०२ ईसवी तक), गुप्त वंश (३२५ ई. से ५७० ई. तक), मौत्रक वंश (५५६ ई. से ५६७ ई. तक), गुर्जर वंश, राजपूत वंश, प्रतिहार वंश, गहड़वाल वंश, चौहान वंश, पाल वंश, सेन वंश, कलचूरी वंश, चन्देल वंश, परमार वंश, सोलंकी वंश आदि उत्तर के तथा विष्णु कुण्डी वंश, वाकाटक वंश, पल्लव वंश, चालुक्य वंश, राष्ट्रकूट वंश, चोल वंश, पाण्डप वंश, गंग वंश आदि दक्षिण के काल में उत्तरी ब्राह्मी व दक्षिणी ब्राह्मी लिपि के रूप में विकसित हुई है।

(१) **ब्राह्मी लिपि** फिनीशियन, अरमायक तथा मोआब सेमिटिक वंश की लिपि है, जो दायें से बायें लिखी जाती थी, भारत में इन्हीं की दिशा परिवर्तित की गई। सिंधु घाटी लिपि के ४१७ चिह्नों में से कुछ ब्राह्मी के अक्षरों के समान प्रतीत होते हैं, पर ध्वनियों का रहस्यपूर्ण रूप सर्वमान्य नहीं हुआ।

(२) **खरोष्ठी लिपि** ई.पू. छठी शताब्दी के आधुनिक अफगानिस्तान व पाकिस्तान में बैक्ट्रिया, सीथिया, पर्शिया, भारत आदि के निवासी निवास करते थे। यहाँ व्यापारियों को कीलाकार लिपि के प्रयोगों में कठिनाई होती थी, इसलिए अरमायक लिपि का प्रयोग किया, जो कालांतर में अपना प्रभाव डाल भिन्न-भिन्न लिपियों की जन्मदायनी बनी। अरमायक के एक शब्द 'खरोष्ठ' से इसका नाम खरोष्ठी पड़ा, और भी कई मत हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने बैक्ट्रिया, ग्रीक, शक, पार्शिया व कुषाणवंशीय राजाओं के कई सिक्कों व अभिलेखों का संग्रह किया। कई सिक्कों पर एक ओर ग्रीक लिपि थी, दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि अंकित थी। इस लिपि का ब्राह्मी अक्षरों से कोई संबंध नहीं है।

(३) **प्राचीन ब्राह्मी** दूसरी शताब्दी में इसका स्थान ईरान की पहली लिपि ने ले लिया। अजमेर के बड़ली ग्राम से एक आंशिक लेख जो एक स्तंभ के टुकड़ों पर अंकित उसमें अंकित शब्द है- वीर (।) य भगव (त), दूसरी पंक्ति में चतुर। सिति व (स)। जो महावीर के निर्वाण का चौरासिवाँ वर्ष होना चाहिये, जो गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा की पुस्तक 'भारतीय प्राचीन लिपिमाला' के अनुसार ई.पू. ४४३ वर्ष होता है।

(४) **उत्तरी ब्राह्मी** जूनागढ़ (गुजरात) में गिरनार के रास्ते एक बड़ी चट्टान भूमितल के १२ फीट ऊँची व ७५ फुट परिधि की शिला पर सम्राट अशोक ने २५७ ई. पू. अपनी १४ घोषणाएँ ब्राह्मीलिपि में अंकित करवाई जिसके पीछे क्षत्रप वंशी राजा रूद्रदामन (१३० से १७० ई. तक) ने संस्कृत भाषा में अभिलेख अंकित करवाये। यह अभिलेख संस्कृत भाषा का सबसे प्राचीन लेख है। जबकि वैदिक साहित्य में ६४ वर्ण थे और शिलालेख जो प्राकृत में अंकित है इसमें ४७ अक्षर व्यवहार में थे। (अ) उत्तरी ब्राह्मी क्षत्रप लिपि- १३० ई. से १७० ई. वंश क्षत्रप (ब) उत्तरी ब्राह्मी कुषाण लिपि- कांकली टीला पर उत्थान, कुषाण वंशी राजा कनिष्क द्वारा (स) उत्तरी ब्राह्मी गुप्त लिपि- ३३५ से ४१४ ई. समुद्र गुप्त द्वारा ब्राह्मण धर्म व साहित्य का उत्थान हुआ, गुप्त कालीन होने के कारण गुप्त लिपि।

(५) **दक्षिण ब्राह्मी** बुद्ध भगवान का एक स्मारक-स्तूप ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में निर्मित हुआ जिस पर भाषा पाली व संस्कृत थी। दूसरी शताब्दी में ताम्रदान पत्र नासिक की गुफा नं. ००३ की दीवार पर सातवाहन राजा बशिष्ठी पुत्र पुलमायी द्वितीय द्वारा उत्कीर्ण मिला। तीसरी शताब्दी में इक्ष्वाकु (उत्तर भारत की आर्य जाति बाद में चालुक्य वंश के नाम से प्रसिद्ध) एक स्तुप से तीन अभिलेख, जग गयापेट (कृष्ण जनपद) चौथी शताब्दी पल्लव वंश द्वारा अश्वमेध यज्ञ का उल्लेख, पाँचवीं शताब्दी वाकाट वंश जिसमें भूमि दान का उल्लेख है, जो प्राकृत मिश्रित संस्कृत भाषा में है।

(६) **कुटिल लिपि** (६वीं से ९वीं शताब्दी तक) हर्षवर्धन ६०५ ई. मालवा नरेश मौखरी व कन्नौज का भी राजा बना। वलभी के राजा को भी अधीन किया। कुशल शासक, धार्मिक सहिष्णुता भी इसमें थी। शैव, वैष्णव, बौद्ध आदि धर्मों को आश्रय दिया। ह्वेनत्सांग चीनी यात्री इसी हर्षवर्धन के काल में आया। सातवीं शताब्दी में मेवाड के राजा अपराजित के समय अभिलेख पाये गये। विकटाक्षरणि अंकित था। इस लिपि के अक्षर कुटिल व विकट थे इसलिये इस लिपि को कुटिल लिपि कहा गया।

(७) **तामिल लिपि** विद्वानों का मत है यह ब्राह्मी से भी पहले दक्षिण में प्रचलित थी। ब्राह्मी लिपि के प्रभाव में इसमें परिवर्तन आ गया। इसमें १२ स्वर व १८ व्यंजन होते हैं। इसमें चार चिह्न ऐसे हैं जो दो-दो चिह्नों का काम करते हैं जैसे क-ग, ट-ड, त-द, प-ब। संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करने के लिए इस लिपि में ज, स, ष, ह, क्ष जोड़ दिये गये। इस काल में नरसिंह वर्मन ने महामल्लपुरम नगर बसाया। चोल राजाओं के इस पल्लव वंश का अंत किया।

(८) **वट्टेलुत्तु लिपि** सातवीं शताब्दी में दो शाखाओं का उद्‍भव दक्षिणी ब्राह्मी लिपि से हुआ (अ) चेर पाण्डय लिपि, जो वट्टेलत्तु लिपि से जानी गयी। यह हस्त लिखित थी। (ब) पल्लव चोला लिपि, जो कोले लुत्तु के नाम से जानी गयी। यह ताड़पत्रों पर सीधे लिखने से फटने के भय से गोलाकार बनाकर लिखा करते थे। वट्टेलुत्तु पढ़ने में कठिनाई होती थी, तो महाराज राजराज ने इसको समाप्त कर कोलेकुत्तु को प्रयोगात्मक बनाया जो १८वीं शताब्दी तक चलती रही।

(शेष अगले अंक में)

पलभर के लिए भी तुम्हारी यादें/मेरा पीछा नहीं छोड़ती
जैसे लिपट गई हो साए की तरह/मेरे दिलो दिमाग से
बड़ी नादानी कर बैठी/तुमसे दिल लगाके
एक तरफा मुहब्बत !/सजाए मौत से भी बदत्तर
जहाँ सबकुछ लुटाकर भी !
जीना पड़ता है तन्हा नाउम्मीदी में
भूल हो गई जो तुम्हें
समझ न सकी मैं!/तुम प्यार नहीं
आकर्षण में जीने वाले हो
तुम कभी समझ नहीं सकते प्यार को
क्योंकि तुम्हारे भीतर/प्यार नाम की कोई चीज ही नहीं।

-- बबली सिन्हा

मैं भी जीना चाहता हूँ/कुछ पल सिर्फ अपने लिए
बस मैं ही मैं हूँ और मेरी तन्हाई/कुछ बातें करें,
सच... कौन जीता है अपने लिए?
सब जीते है किसके लिए ?/कुछ परिवार के लिए
कुछ रोजगार के लिए/कुछ दुनियादारी निभाने के लिए
कुछ समझने और समझपने के लिए
कुछ अपनों को मानाने के लिए
कुछ गैरों को भुलाने के लिए
हम जीते हैं- किसी व्यावसायिक मजबूरी में
किसी सामाजिक कमजोरी में
कुछ सरकारी नियम निभाने में
कुछ आपसी विवाद सुलझाने में
काश मैं इनको छोड़ पाता
और कुछ पल जी पाता
सिर्फ अपने लिए...

-- जय प्रकाश भाटिया

मुझे पता था/एक दिन बंद कर दोगे/मेरे जबान को
जिसदिन मैं अपनी आवाज उठाऊँगी
नहीं कहने दोगे मेरी बात
इसी कारण तो लूटकर अस्मत
घूमते फिरते हो शहर बाजारों में
और मैं लाचार, असहाय
एक-एक दिन घुट-घुटकर जीती हूं
इसका कारण तुम और तुम्हारा हैवानियत है
ऊपर से ये समाज हमें ही दोषी ठहराता है
इन शिकारियों को यूं ही विचरने को छोड़ देता है!

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

जैसे फटे जूते से निकली कील/पैरों में चुभती है,
जैसे हर मोड़ पर खड़े कर्जदाता से
बचने की नाकाम सी कोशिश,
जैसे आधी रात को फोन की घंटी
बजने पर बुरी खबर की दस्तक,
जैसे खाली जेब में मुह चिढ़ाती
जरूरी चीजों की लंबी लिस्ट,
बुरा वक्त न कभी बीतता है/न कभी भूलता है,
बस जीता रहता है इंसान के भीतर
न भूलने देता है, न बीतने

-- प्रीति दक्ष

नसीब भृकुटि के ऊपर/ललाट पर खिंची
अर्द्धवृत्ताकार रेखा नहीं है/न ही हथेलियों पर
जन्म के साथ मिली/आरी-तिरछी रेखाएँ हैं
पता नहीं नसीब/ईश्वर लिखता भी है या नहीं
अगर लिखता है तो फिर
कुछ लोग अपना नसीब
खुद ही कैसे लिख लेते हैं
नसीब का अच्छा होना या
बुरा होने की निर्भरता बस
वक्त की चुनौतियों के भंवर में
इंसान का खुद से हार जाने
या फिर जीत जाने के अंतराल में निहित है

-- अमित कु अम्बष्ट 'आमिली'

ठूँठ हो रहा है,/पूरे घर को पालने वाला फलदार वृक्ष
कभी वह अकेले ही पोषक बन खड़ा था
डाली डाली फल लगा था/समय की मार उसको भी है
वह बूढ़ा हो रहा है/यह भी इच्छा के विपरीत हो रहा है
छाया में उसके पलने वाले/जीवन भर की गाढ़ी
कमाई खाने वाले/तुम क्या सिर्फ देखोगे
या कर्तव्य भी पूरा करोगे
इरादों की कमी नहीं है उसमें
तुम थोड़ा सहारा बन जाओ
सूखने न पाएँ भरणकर्ता,
थाले जो सूख गये हो
तो उसमें पानी भर दो
कुछ चार-आठ नये रोप दो,/उनका परिवार भर दो
तुम भी भरे रहोगे/सदैव खुशहाल रहोगे!

-- रामेश्वर मिश्र

चील सी घूरती भेदती नजरें/झपट पड़ने को लालायित
समझ मात्र माँस का लोथड़ा/सहमी दिखे आधी आबादी
कहीं किसी की कोख भरके/कहीं कोख खाली करके
प्रताड़ित करते भूखे भेड़िये/इस टूटन का दर्द झेलती
भयाक्रांत दिखे आधी आबादी
पाने को अपना अस्तित्व
खोखली प्रथाओं से टकराती
कभी हाशिए पर खड़ी दिखती
कहीं बुलंदी को छू जाती
है सबला पर फिर भी अबला
क्यों दिखती है आधी आबादी

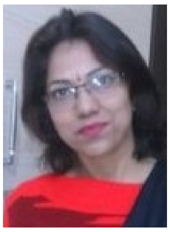

-- अंजु गुप्ता

हर आवाज क्यों तेरी आहट सी लगती है
हर साज क्यों तेरी चाहत सी लगती है
तू मुझमें है
या मैं हूँ तुझमें
आज बस यह बता जा
जब से आयी है मेरे जीवन में
क्यों मुझे अपनी मायूस आँखें भी
मुस्कुराहट सी लगती है
हर आवाज क्यों तेरी आहट सी लगती है!

-- महेश कुमार माटा

तुम्हें याद है न!
कभी तुम्हारे अंदर एक गाँव बसा करता था
लहलहाते खेतों की ताजगी लिए
भोला भाला,सीधा साधा सा गाँव
और उसी गाँव में मेरा भी घर हुआ करता था
मिट्टी से लिपा हुआ भीनी भीनी खुशबू लिए
एक प्यार पला करता था/एक छोटा प्यारा सा घर
पर तुमने ये क्या किया/प्यार के इस लहलहाते खेत को
पकने से पहले ही उजाड़ दिया
और वहाँ एक शहर बसा लिया
अब तो मेरा घर भी घर न रहा
पत्थर का मकान बन गया
मुट्ठी भर सपने और सुखद अहसास
उसी पत्थर के नीचे दबकर रह गए
और मैं बेघर हो भटक रही हूँ
तुम्हारे इस पत्थर के शहर में!

-- कनेरी महेश्वरी

अब वे बारिशें कहाँ हैं/जिनमें नादान शरारतें होती थी
छतरी की छांव तले भी
भीगने की कवायदें होती थी
सर्दी जुकाम की परवाह किसे थी
जब बादलों से मोहब्बतें होती थी
पानी की हर बूंद के लिए
घर घर में इबादतें होती थी
खेतों के दिलों में आसमां से इश्क उमड़ता था
ये बूंदें खुदा की इनायतें होती थीं

-- विनोद दवे

कदम देख रहे हैं, हाल रास्तों का
दिल रिश्तो का ख्याल करता है
माना अनजान शख्स था तेरे शहर में
लेकिन राही तो यूं ही चलता है
मैं बैठा हूं बाहर फुटपाथ पर भिखारी, भिखारी ही सही
कम से कम महलों में बैठा मुखोटे बाज, पाखंडी तो नहीं
नहीं बनना मुझे प्रिय किसी का,
मैं फेहरिस्त में अप्रिय ही सही
मेरी सच्ची अभिव्यक्ति कम से कम,
किसी का चाटुकार तो नहीं
सांसें चल रही आजाद कम से कम,
किसी का गुलाम तो नहीं
मौत एक सच्चाई है जानता हूं, यह मौत ही सही!

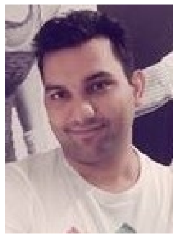

-- परवीन माटी

सुबह रवि की लालिमा/फूलों पर फुदकती तितलियाँ
अँधेरी बोली- मुझे घर जाना है !
पथ पर चहल पहल/खिलखिला रही
मानो आँगन में/बच्चों की टोलियाँ
भौरे उड़ बजा रहे मृदंग
लग रहा जैसे सजा दी
प्रेंति ने अनूठी छटा चुन बुन कर!

-- अशोक बाबू माहौर

क्या बताऊँ यार?

भोलानाथ शर्मा जी को अमेरिका में रहते तीस वर्ष हो गए थे। उनके एक लड़की और एक लड़का था। दोनों ही विवाह योग्य हो गए थे। शर्मा जी ने अपने नाते रिश्तेदारों, परिचितों एवं मित्रों से वर-वधू बताने को कह रखा था और शादी डॉट कॉम में भी दोनों की प्रोफाइल डाल रखी थी। कई लड़के-लड़कियों के प्रस्ताव और फोटो आते, पर बात न बनती।

एक दिन गार्डन में टहलते हुए योगेंद्र वर्मा जी की मुलाकात शर्मा जी से हो गई। दोनों गहरे मित्र रह चुके थे, लेकिन वर्षों बाद भेंट हो रही थी। वर्मा जी ने बड़ी ही आत्मीयता से हाथ मिलाकर कहा, 'कैसे हो यार? मुद्दतों बाद मिल रहे हो। सब ठीक तो है? अब तो आपके बच्चे शादी करके सेटल हो गए होंगे।'

परन्तु यह क्या! शर्मा जी ने उदास लहजे में कहा- 'कहाँ यार! बच्चों को कोई पसंद ही नहीं आता।'

मैंने कहा, 'पसंद क्यों नहीं आता।'

'अब क्या बताऊँ यार, जो हमें पसंद नहीं आता, वो उन्हें पसंद आता है।'

मैंने कहा, 'जो उन्हें पसंद है, तुम वो कर दो।'

शर्मा जी ने कहा, 'एक दिन मेरा लड़का एक फोटो को हाथ में लेकर देखकर गंभीर होकर बोला- मुझे यह पसंद है, मैं इससे शादी करूँगा। यह सुनकर मेरी बाँछें खिल गईं कि चलो इसे कोई तो पसंद आया। लपककर मैंने फोटो उससे लेकर देखा तो वो लड़की की नहीं लड़के की फोटो थी। मैं अपना माथा पकड़कर बैठ गया।'

उनकी बात सुनकर मैं भी हतप्रभ ताकता रह गया।

-- डॉ रमा द्विवेदी

सूझ-बूझ

'इतने सारे बिस्कुट के पैकेट! क्या करेगा मानव?' विभा अपनी पड़ोसन रोमा से पूछ बैठी।

'क्या बताऊँ विभा! अचानक से खर्च बढ़ा दिया है, बिस्कुट के संग दूध, रोटी, मांस खिलाता है। मेरा बेटा नालायक समझता ही नहीं, महंगाई इसे क्या समझ में आयेगा! सड़क से उठाकर लाया है एक पिल्ले को।'

'क्या! सच!'

'हाँ आंटी! कल मैं जब स्कूल से लौट रहा था तो एक पिल्ला लहूलुहान सड़क पर मिला। उसे मैं अपने घर नहीं लाता, तो कहाँ ले जाता? ना जाने किस निर्दयी ने अपनी गलती को सुधारना भी नहीं चाहा। मेरी माँ बहुत नाराज है, लेकिन यूँ इस हालत में इसे सड़क पर कैसे छोड़ सकता था मैं?'

शाम के समय, विभा अपने घर के बाहर टहल रही थी तो पड़ोसन का कुत्ता उसकी साड़ी को अपने मुँह में दबाये बार-बार कहीं चलने का इशारा कर रहा था। वर्षों से विभा इस कुत्ते से चिढ़ती आई थी, क्योंकि उसे कुत्ता पसंद नहीं था और हमेशा उसके दरवाजे पर मिलता। उसे खुद के घर आने-जाने में परेशानी होती। अपार्टमेंट का घर सबके दरवाजे सटे-सटे। जब विभा कुत्ते के पीछे-पीछे गई, तो देखा कि रोमा बेहोश पड़ी थी। इसलिए कुत्ता विभा को खींचकर वहाँ ले आया था। डॉक्टर को आने के लिए फोन करके, पानी का छींटा डालकर रीमा को होश में लाने की कोशिश करती विभा को अतीत की बातें याद आने लगीं।

'कर्ज चुका रहे हो!' कुत्ते के सर को सहलाते विभा बोल उठी।

-- विभा रानी श्रीवास्तव

सारा जहां हमारा है

'राम-राम मौसी।' सुनील ने काठगाड़ी पकड़कर हौले-हौले चलती छमिया मौसी को देखकर कहा.

'आयुष्मान, बुद्धिमान, सेवामान भव! बेटा।' छमिया मौसी ने हमेशा की तरह खुश होते हुए आशीर्वाद की झड़ी लगा दी.

'मौसी, आपके आशीर्वाद से मुझे न जाने कैसी अजीब शक्ति मिल जाती है?' इतने बढ़िया आशीर्वाद, वो भी संस्कृत में, कहां से सीखीं भला?'

'बेटा, बचपन से हम जो देखते-सुनते हैं, वही तो हमारी जमा पूंजी हो जाती है न! हमारे पिताजी हमें इसी तरह से आशीर्वाद देते थे।'

'मौसी, आज हौले-हौले क्यों चल रही हैं?' सुनील बोला, 'आज आपने बाल भी नहीं संवारे!'

'बेटा, आज तनिक बदन गरमा रहा है, हड्डियां भी दुख रही हैं।'

'मौसी, मेरे साथ चलिए, मेरी मां आपको दवाई देगी, चाय पिलाएगी और आपके बाल भी संवारेगी।'

'रहने दे बेटा, तूने कह दिया, मुझे सब मिल गया. देखो मेरे शरीर की गर्मी तनिक ठीक भी हो गई।'

'चलो न मौसी!' सुनील ने अपनेपन से एक हाथ से उनकी काठगाड़ी पकड़ ली, दूसरे हाथ से छमिया मौसी को थामकर घर ले गया.

थोड़ी देर बाद छमिया मौसी सुनील के घर से निकलीं, तो उनको पहचानना ही मुश्किल था. सुनील की डॉक्टर मां ने उन्हें नहला-धुलाकर खिलाया-पिलाया, दवाई दी और बाल भी संवार दिए थे. 'अब कहां जाएंगी मौसी जी?' सुनील की मां ने पूछ ही तो लिया.

'बस जरा पुलिस चौकी तक।'

'मौसी, पुलिस चौकी से जरा बचकर रहा करिए. पुलिस आपके इस मैले-कुचैले झोले की भी तलाशी ले लेगी।'

'बेटी, इन्हीं पुलिस वालों की मेहरबानी से तो हम सब चैन से रहते-सोते हैं।'

'बात तो ठीक ही कह रही हैं मौसी जी।' डॉक्टर साहिबा ने मौसी की बात से सहमति जताते हुए कहा.

'अच्छा, तनिक जल्दी चलूं, वे मेरी राह देख रहे होंगे, जब तक मैं नहीं जाऊंगी, वे चाय नहीं पिएंगे. उनके निश्छल प्रेम को देख लगता है, सारा जहां हमारा है।'

-- लीला तिवानी

अपनी लड़ाई

रूबी को उदास देख कर उसकी दादी ने प्यार से सर पर हाथ फेरा।

रूबी ने उनका हाथ थाम कर कहा, 'दादी पापा मुझे फिल्म मेकिंग का कोर्स करने से मना कर रहे हैं। मैं वाइल्ड लाइफ पर फिल्में बनाना चाहती हूँ। पर पापा कहते हैं कि तुम कहाँ जंगलों में भटकोगी।'

दादी उसके पास बैठकर बोलीं, 'मेरे समय में लोग औरतों का नौकरी करना पसंद नहीं करते थे। जब मैंने अपने पिता जी से नौकरी करने की बात की तो वह बहुत नाराज हुए। लेकिन मैं भी अपने फैसले पर अडिग रही। उन्होंने इजाजत दे दी।'

रूबी ने प्रशंसा भरी दृष्टि से दादी को देखा।

दादी ने आगे कहा, 'अब समय बदल गया है। औरतें नौकरी करने लगी हैं। लेकिन कुछ क्षेत्रों को लोग अभी भी उनके लिए सही नहीं मानते। अब तुम्हारी बारी है।'

रूबी अपनी दादी का आशय समझ गई, 'दादी, आगे की लड़ाई अब आज की औरतें लड़ेंगी।'

योगदान

रौशन अपनी नई फैक्ट्री शुरू करने की खुशी में पार्टी दे रहे थे। इस अवसर पर बुलाए जाने वाले मेहमानों की सूची देखते हुए उनकी पत्नी ने आपत्ति की, 'आपने चाचा जी को क्यों बुलाया है?'

रौशन हंस कर बोले, 'मेरी सफलता में सबसे बड़ा योगदान तो उनका ही है।'

पत्नी ने कुछ गुस्से से कहा, 'कैसे...? उन्होंने तो मुझे अस्पताल पहुँचाने के लिए अपनी कार देने से भी मना कर दिया था।'

रौशन बोले, 'सोचो, यदि उस दिन उन्होंने कार दे दी होती, तो मैं सिर्फ मांगने लायक ही रह जाता।'

कुछ सोचकर आगे बोले, 'उन्होंने ताना दिया कि कार का शौक है तो खुद खरीद लो। उनके इस जवाब ने ही मुझे खुद की पहचान बनाने को प्रेरित किया।'

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

मुक्तक

कि गूँजती रहे हिन्दी जहाँ के कोने-कोने तक
सशक्त रहे कवियों मे बालपन से वृद्ध होने तक
तेरे शब्द श्रृंगार पर मोहित है दुनिया हिन्दी माँ
मुस्कुराती रहे माँ जहां मे सूरज चाँद होने तक

-- रामेश्वर मिश्र

यादें

मनमोहन भाटिया

दोपहर के समय उमाशंकर घर में अकेले आराम कर रहे थे। बच्चे, बहुएं और पोते, पोतियां सभी काम पर गए हुए थे। उम्र छिहत्तर वर्ष। तभी फोन की घंटी बजी। फोन पर उसकी बड़ी बहन कौशल्या थी।

'उमा कितने समय बाद बात हो रही है। कैसे हो?'

'ठीक हूं, जीजा और बच्चे कैसे हैं?'

'सब ठीक हैं। युक्ति का रिश्ता तय किया है।' युक्ति कौशल्या की पोती है।

'बहुत बधाईयां बहन। शादी कब की है?'

'शादी दो महीने के बाद। पूरे परिवार ने आना है। यही तो मौका होता है जब पूरा परिवार एकत्रित होता है।'

'हां जरूर, मैं तो जरूर आऊंगा। बाकी बच्चों का अपना हिसाब है, सबको बोलूंगा।'

दो महीने बाद पूरा परिवार युक्ति के विवाह में सम्मलित हुआ। हंसी मजाक, मिलना जुलना, बच्चों युवाओं का नाच गाना के बीच विवाह संपन्न हुआ। विवाह के अगले दिन सभी रिश्तेदारों ने रुख्सत ली। कौशल्या ने उमाशंकर को रोक लिया।

'भाई बरसों बाद मिले हैं, कुछ दिन रुक जाओ।'

बहन के निवेदन पर उमाशंकर रुक गया। अगली सुबह उमाशंकर की छः बजे नींद खुली। बिस्तर छोड़कर देखा सभी सो रहे हैं। उमाशंकर वापिस कमरे में आ गया और खिड़की खोली। ताजी हवा के झोंकों से शरीर तरोताजा हो गया। खिड़की से सामने समुंदर देखने लगा। कौशल्या के फ्लैट से सामने समुंदर नजर आता है। हालांकि कोई बीच नहीं है, मछुहारे मछली पकड़ते हैं, इक्का-दुक्का नौका नजर आ रही थी। तभी कौशल्या ने उमाशंकर को जागते देखकर आवाज दी।

'भाई जल्दी उठ गए। चाय लोगो?' बहन की आवाज सुनकर उमाशंकर बैठक में आ गया। कौशल्या ने चाय बनाई। चाय पीते हुए दोनों बातें करने लगे।

'भाई बोलते तो तुम कम ही थे अब ऐसा लगता है कि तुम एकदम चुप हो गए हो?'

'छिहत्तर की उम्र हो गई है, तेरी भाभी के जाने के बाद जीवन सूना हो गया है। बच्चे अपने में मस्त रहते है, उनकी अपनी जिंदगी है और अलग सोच। हर पीढ़ी के हालात और सोच अलग हो जाती है। सारा दिन काटना मुश्किल होता है इसलिए काम कर रहा हूं। थोड़ा शरीर शिथिल हो गया है, काम भी उतना तेज रफ्तार से नही होता। शुक्र है कि कंपनी में पिछले तीस वर्षों से काम कर रहा हूं। मेरे काम के प्रति समर्पण को देखते हुए कंपनी रिटायर नहीं कर रही। कंपनी के मुश्किल समय में काम किया, उसी के कारण मालिक कहता है कि घर बैठकर क्या करोगे, जब तक हाथ-पैर चल रहे हैं काम करते रहो। और दूसरी वजह पैसा भी है, बच्चों के सामने हाथ नही फैलाने पड़ते।'

तभी उमाशंकर के जीजा भी उठकर भाई-बहन की गुफ्तगू में शामिल हो गए। 'मुझे भी बताओ भाई-बहन में क्या चल रहा है?'

'मेरा चुपचाप भाई क्या चलाएगा?'

तीनों हंस पड़े। कौशल्या और परिवार का अपना व्यवसाय है जिसको उसके भांजे चला रहे हैं। जीजा दिन में दो-तीन घंटे ऑफिस में समय व्यतीत करते हैं।

'उमा तुम इधर आ जाओ। एक ही उम्र के हैं, हंस बोलकर अब बाकी जिंदगी गुजारेंगे।' जीजा ने उमाशंकर से कहा।

'जीजा की बात मान लो, अब इधर आ जाओ। फार्महाउस चलकर रहेंगे। समुंदर का किनारा तुम्हें हमेशा अच्छा लगता है।'

'बहन जब भी यहां आता हूं, समुंदर देखकर अति प्रसन्नता होती है। मुम्बई का समुंदर दिल्ली में नजर नहीं आता। बालकनी से सड़क का ट्रैफिक ही नजर आता है।'

'फिर यहां आ जा न! वर्षों बीत जाते हैं हमें मिले।'

'बहन के घर रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। तुमने भी दिल्ली आना छोड़ दिया।'

'कुछ उम्र ढल गई और अब न मां न बाप और न भाभी, किससे मिलने आऊं?'

'मैं हूं न।'

'तू हमेशा चुप रहता है, बच्चे अपनी दुनिया में मस्त हैं। जो तेरा हाल वही मेरा।'

'मैं छिहत्तर का, तुम अस्सी की। हमारी संन्यास की उम्र है, चलो, हरिद्वार रहते हैं।' कहकर उमाशंकर मुस्कुरा दिया।

'बिना दवा के चल नहीं सकते। अपना घर ही हरिद्वार है। हरिद्वार छोड़, अपने फार्महाउस चलकर दो-तीन दिन रहते हैं और पुरानी यादें ताजा करते हैं।'

'चल बहन इस बहाने कुछ दिन का साथ भी हो जायेगा, मालूम नहीं फिर कब मिलना हो।'

'ऐसा क्यों बोलता है?'

'धीरे-धीरे सब चले गए। तेरी भाभी भी गई, यार दोस्त भी चले गए। सिर्फ एक दोस्त बाकी है वो भी बिस्तर पर है, कभी-कभी मिलने चला जाता हूँ। उसे देखता हूँ तो यही अहसास होता है कि हमारी रवानगी कब हो जाये, हमें खुद को नहीं पता चलेगा।'

'प्रकृति का नियम है, सबने एक दिन जाना है।' जीजा ने कहा। 'छोड़ो इन बातों को, जितने दिन भी बाकी हैं अच्छे हंसकर बीतें, मैं तो ईश्वर से यही हर रोज सुबह उठकर मांगता हूं।'

'इसलिए नौकरी छोड़कर घर नहीं बैठा। खाली दिमाग से उदासी ही जीवन में आती है।'

चलो फार्महाउस चलते हैं। उमाशंकर ने दो दिन फार्महाउस में बिताने की सोची परंतु एक सप्ताह बिता दिए। लॉन में बैठते और पुरानी बातें याद करते।

'बहन तुम्हारा माली ढंग से बागवानी नहीं कर रहा है। गुलाब के पौधों की कटिंग नही की, तभी छोटे फूल आ रहे हैं।' कहकर उमाशंकर ने गुलाब के पौधों की कटिंग शुरू की। तीन घंटे तक बागवानी करता रहा।

दोपहर खाना खाने के पश्चात आराम करते हुए कौशल्या ने कहा। 'भाई तुम बागवानी नही भूले।'

'बचपन में हम दोनों अपने घर के पौधों को दुरुस्त करते थे।'

'हां क्या दिन थे वो। अब घुटने के दर्द से अधिक चलना नहीं होता। बस बैठे-बैठे जो काम हो जाये, वही कर लेती हूं।'

'पतंग उड़ाया करते थे। तुम पतंगों में मांजा बांधती थी और कन्नी देती थी।'

'जब थोड़ी ऊपर हो जाती थी तब मैं पतंग हाथ में लेती थी। पतंग को सबसे ऊंचा रखकर पेंच लड़ाना सब याद है। बचपन की हर बात याद है भाई।'

'बहन अब सिर्फ यादें रह गई है। कबड्डी, खो-खो खेलना, पतंग उड़ाना और कंचे खेलना।'

'तुम्हारे पास कंचों के दो बड़े बक्से थे।'

'हां जब कॉलेज गए तब ये खेल छूटे थे।'

दो दिन के लिए कौशल्या ने उमाशंकर को रोका था और जीजा बहन के साथ एक सप्ताह गुजर गया। शनिवार की शाम सब बच्चे फार्महाउस आये और पूरी रात पुराने किस्से सुनाते रहे। रविवार शाम की वापस मुम्बई आये। दो दिन रुककर मंगलवार उमाशंकर दिल्ली के लिए रवाना हुआ।

आज वर्षों बाद भाई-बहन गले मिलकर फूट-फूट कर रोए। जीजा ने उनको रोते देख कहा 'इतना तो तुम हमारी शादी पर नहीं रोये जितना आज रो रहे हो।'

'जीजा मुझे नहीं मालूम अब कब मिलना होगा। उम्र का तकाजा है कब ऊपर का टिकट कट जाए, बस यही सोचकर रोना आ गया।'

यह सुन कर जीजा की भी आंखें नम हो गईं। ■

मुक्तक

मेरे हँसने और रोने में तुम्हारा ही नाम आयेगा
दिल तोड़ दो या जोड़ दो तुम्हारे ही काम आयेगा
अपना बनाकर भी तुम मुझे छोड़ दो चाहे कभी
दिल की हर धड़कन में तुम्हारा ही नाम आयेगा

-- रवि प्रभात

फसल उगाता वह मर जाता, मँहगाई की मार
जहर घोलता राजनीति जब, तन्हाई में प्यार
बरस रहा जल झुलस रहा घर, विधना कैसा खेल
चढ़ा अषाढ़ विषाद भरा दिल, तरुणाई लाचार

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

फिर से वही रवैया अपना, फिर वो ही लाचारी है
अमरनाथ के आंगन में जेहादी गोलीबारी है
हिन्दू सात मारकर लश्कर, जश्न मनाता कायम है
और सूरमा मोदी का दिल, अब तक बहुत मुलायम है
अमरीका इजराइल में बस जुमलों के बम फोड़े हैं
और यहाँ मोदी, मुफ्ती का दामन सर पर ओढ़े हैं
दीमक शायद लग बैठी, दिल्ली की सख्त जवानी को
शर्म आज आती होगी, इन पर बाबा बर्फानी को
जिस काशी के भोले बाबा की मोदी पर कृपा हुयी
विजय दिलायी कुर्सी सौंपी, हर मुश्किल भी दफा हुयी
बहुमत का वरदान मिला, जनता के मिले सहारे थे
विश्वनाथ से सोमनाथ तक बम भोले के नारे थे
लेकिन दुःख इसका है, यह हमला आंसू छोड़ गया
अमरनाथ तक आते-आते यह नारा दम तोड़ गया
कांवड़ियों को मार, हमें अंजाम सुनाकर चले गए
हम काफिर हैं मरने को, पैगाम सुनाकर चले गए
आतंकी कुनबे मजहब की जात दिखाकर चले गए
सच तो ये है भारत की औकात दिखाकर चले गए
वो तो चले गए, हम अपनी जिंदा लाश घसीटेंगे
इक जुनैद के मरने पर हम केवल छाती पीटेंगे
दिल्ली से निंदा की तोपें, रोज चलायी जाएँगी
और मीटिंगें मंत्रालय की रोज बुलाई जाएंगी
ऐसी मौतों पर खुद को बेशर्म बनाये रक्खेंगे
मजहब वाली दहशत पर, रुख नर्म बनाये रक्खेंगे
देख नहीं पाये मंसूबे, हम उठती आवाजों में
आतंकी कितने शामिल हैं आखिर पत्थरबाजों में
कांग्रेस का नेता बुरहानों का पानी भरता है
पैलेट गन चल जाए तो न्यायालय मातम करता है
भारत मरता सदा रहेगा, गद्दारी अरमानों से
कैसे जंग लड़ी जायेगी आतंकी फरमानों से
कैसे कर्ज उतारोगे, सेना के खून पसीने का
जनता क्या अचार रक्खेगी, छप्पन इंची सीने का
खुलकर मोदी वार करो अब, ना कोई परवाह करो
अमरनाथ में यज्ञ करो, हर आतंकी को स्वाह करो
काश्मीर के घर घर में घुसती सेना की टोली हो
जिसके हाथ दिखे पत्थर, उसके सीने में गोली हो
पहले ढूंढ़ ढूंढ़कर मारो, घर छिपे हुए गद्दारों को
केरल से बंगाल तलक, जेहादी राजदुलारों को
भक्त मरे, सेना मरती, अब कितनी और परीक्षा है
और बताओ किसके मरने की अब तुम्हें प्रतीक्षा है
अमरनाथ की चीख सुनो, वर्ना आगे पछताओगे
सोमनाथ के अंश नहीं,
कायर का वंश कहाओगे
अब त्रिशूल घुस जाने दो,
दहशतगर्दों की छाती में
बम बम भोले होने दो,
अबकी लाहौर कराची में

-- गौरव चौहान

अपलक बाट निहार रहे हैं, नयना पिया दरस को तरसे
अबके सावन बदरी के सँग, प्यार पिया का भी तो बरसे
श्यामल बदरी के पीछे से, आसमान से झाँके चन्दा
ऐसा लगता है चुपके से, रूप धरा का ताके चन्दा
आस मिलन की लिये चकोरी, चन्दा को ताके तरुवर से
डोल रहे कलियों पर भँवरे, फूल-फूल तितली मँडराए
कोयल ने बागों में अपनी, स्वर लहरी के स्वर बिखराए
सारी सखियाँ झूला झूलें, ताक रही मैं उनको घर से
गर्जन कर-कर बैरी बदरा, धडकन बढ़ा रहे हैं दिल की
आँख दिखाती चपल दामिनी, बैरन बनी मिलन मंजिल की
हाथ जोड़कर साथ तुम्हारा, माँग रही हूँ मैं ईश्वर से
घर के बाहर बदरा बरसे,
घर के अंदर बरसे नयना
गुमसुम गुमसुम से रहते हैं,
तुम बिन पायल कँगना गहना
तुम बरसो तो कोपल कोई,
उगे खुशी की दिल बंजर से

-- सतीश बंसल

सावन मनभावन तन हरषावन आया।
घायल कर पागल करता बादल छाया।।
क्यों मोर पपीहा मन में आग लगाये।
सोयी अभिलाषा तन की क्यों ये जगाये।
पी को करके याद सखी जी घबराया।
ये झूले भी मन को ना आज रिझाये।
ना बाग बगीचों की हरियाली भाये।
बेदर्द पिया ने कैसा प्यार जगाया।
जब उमड़ घुमड़ के
बैरी बादल कड़के।
तड़के जब बिजली
आतुर जियरा धड़के।
याद करूँ ऐसे में
पिय ने जब चिपटाया।

-- बासुदेव अग्रवाल 'नमन'

छिड़ जाता है एक युद्ध अंतर्मन में
बैठ जाती हूँ सब छोड़कर तेरी यादों में
कैसा अहसास है हर पल बिन तेरे
डूब जाती हूँ हर पल सिर्फ तेरे खवाबों में
काश समझा पाती अपनी सारी तनहाइयाँ
ओ साथी तुझे धुंध भरे जीवन में
छिड़ जाता है एक युद्ध अंतर्मन में
वो डांट भरी बातें वो समझाना तेरा
जीवन का अर्थ था गहरा तेरी चाहत में
भूल गयी वो दुख की रतियाँ
पाकर एक समंदर प्यार भरी बातों में
मत बिसराना इस धूमिल से तन मन को
मुश्किल है गुजारा बिन तेरे इस जीवन में

-- वर्षा वार्ष्णेय

सुन लो मेरी कलम नहीं लिख सकती झूठी बातों को
कैसे पूरनमासी लिख दूँ घोर अमावस रातों को
मेरी कलम ने अक्सर सबका कच्चा चिट्ठा खोला है
राजमहल के राज मुकुट के आगे तन कर बोला है
राज महल का भाट नहीं हूँ, ना मैं कोई चारण हूँ
जनता की शंका की बोली, कष्टों का उच्चारण हूँ
दूजों को खुश करने वाले छंद नहीं लिख पाऊंगा
वो लिक्खा तो कलम मरेगी
या फिर मैं मर जाऊंगा
कब तक सहना होगा हमको
अपनों की ही घातों को
कैसे पूरनमासी लिख दूँ
घोर अमावस रातों को

-- मनोज डागा 'मोजू'

बंधु हैं अपने सभी यह बोलकर कब तक छलेंगे?
सैनिकों की छातियों पर कब तलक पत्थर पड़ेंगे?
जल रही हैं सैनिकों की देखिये कितनी चिताएँ
आज फिर से देश पर ये छा रही तम की घटाएँ
शत्रुओं का नाश हो यह ठोक सीना कब कहेंगे?
भारती का पुत्र जाधव कैद सीमापार है क्यों?
सिंहनी के लाल होकर शत्रु की मनुहार है क्यों?
गीदड़ों की गलतियों को यों क्षमा कब तक करेंगे?
युद्ध में हमसे लड़े सिर
झुक गया हर बार उनका
बुद्ध के पथ पर चले तो
सह गए हर वार उनका
दीजिये उत्तर यहाँ कब
वक्ष रिपुओं के फटेंगे?

-- उत्तम सिंह 'व्यग्र'

मेघ से भू पर बूंदों की झड़ी आ रही है
मानो तुमसे मिलने की घड़ी आ रही है
ये बादल घटाएं और व्याकुल बिजलियाँ
है रखे हुए सिर पर जल की गगरियाँ
है बहने लगी अब तो पवन मदभरी
लगे सागर से मिलकर अभी आ रही है
सप्त दादुर ने भी अपना इक राग छेड़ा
नृत्य करने लगे मोर बनाकर के घेरा
दहके उपवन की कलियाँ गुनगुनाने लगीं
ज्यों मिलन की कहानी कही जा रही है
बैठ झूले पे सखियाँ सावन गाने लगीं
डूब मैं भी सपनों में गोते लगाने लगी
याद आने लगा तू इस तरह से सजन
मानो बेसबर धड़कन रुकी जा रही है

-- गुंजन गुप्ता

मैं काव्य जगत का इन्द्रधनुष
जीवन में जितने रंग मिले, उन सबसे चित्र बनाये हैं
सच्चाई कहते सुनते भी, कुछ अच्छे मित्र बनाये हैं
मन में मैं रखता नहीं कलुष, मैं काव्य जगत का इंद्रधनुष
कविताओं में संघर्षों की, अब बात नहीं करता कोई
अन्यायों के प्रति लड़ने का, उद्गार नहीं भरता कोई
मैं अब भी हूँ संग्राम पुरूष, मैं काव्य जगत का इंद्रधनुष
मंचों पर कविता की कम, प्रहसन की बात अधिक होती
बातों के धनी खड़े ऊपर, कविता नीचे बैठी रोती
कवि हैं गुटबाजी करके खुश, मैं काव्य जगत का इंद्रधनुष
जिसको लगता हो लगे बुरा,
सच कहने से क्यूँ हो गुरेज
सच कहने के खतरे भी हैं,
पर रखना ही होगा सहेज
कवि क्यूँ स्वीकार करे अंकुश
मैं काव्य जगत का इंद्रधनुष

-- बृज राज किशोर 'राहगीर'

(चौदहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

बहुत विचार करने के बाद पांडवों को विराटनगर में रहना सबसे अच्छा लगा, जिसकी सीमायें इन्द्रप्रस्थ से लगी हुई थीं और जहां के लोगों का रंग रूप, वेशभूषा आदि हस्तिनापुर जैसी ही थीं। उन्होंने वहां के राज दरबार में अलग-अलग जाकर अपने-अपने योग्य कार्य पाने का निश्चय किया। उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्रों को किसी कपड़े में लपेटकर विराट नगर के बाहर जंगल में एक घने शमी वृक्ष की शाखाओं में छिपा दिया, जिस पर सामान्यतया किसी की दृष्टि नहीं जाती थी और आवश्यक होने पर वे तुरन्त उनको प्राप्त कर सकते थे।

महारानी द्रोपदी को केशसज्जा का अच्छा ज्ञान था, इसलिए उन्होंने परिचारिका के रूप में राजभवन में कार्य पाने की कोशिश की। इसमें वे सफल रहीं। वहां की रानी सुदेष्णा को एक परिचारिका की आवश्यकता भी थी, क्योंकि उसके भाई कीचक की गलत आदतों के कारण कोई परिचारिका वहाँ टिकती नहीं थी। द्रोपदी को इसका ज्ञान नहीं था, इसलिए उन्होंने वहां रहना स्वीकार कर लिया। वे राजमहल में इसलिए रहना चाहती थीं कि कम से कम लोगों की दृष्टि में आयें, नहीं तो महल से बाहर रहने पर उनके पहचाने जाने का डर था। उन्होंने अपना नाम सैरंधी रखा था।

रानी सुदेष्णा ने सैरंधी का स्वागत किया और पूछा कि पहले वे कहां और क्या करती थीं? सैरंधी ने बताया कि मैं पहले द्रोपदी की केशसज्जा किया करती थी। अब वे वनवास में हैं इसलिए मैं काम ढूंढ़ती रहती हूं। उन्होंने बाल खुले रखने के बारे में भी पूछा, तो सैरंधी ने कह दिया कि अपनी स्वामिनी द्रोपदी की देखादेखी मैं भी अपने बाल खुले रखती हूं। रानी ने फिर ज्यादा पूछताछ नहीं की।

सम्राट युधिष्ठिर किसी विशेष कार्य में निपुण नहीं थे, लेकिन द्यूत विद्या के अच्छे ज्ञाता थे। राज दरबारों में ऐसे ज्ञाताओं का बहुत सम्मान होता था। इसलिए उन्होंने राजा विराट के दरबार में यही काम पाने का निश्चय किया। उन्होंने अपना नाम कंक रखा। कंक ने महाराज विराट के दरबार में जाकर अपने बारे में जानकारी दी और उनके यहाँ कार्य देने की याचना की। राजा विराट को बहुत अकेलापन अनुभव होता था, उन्होंने तत्काल कंक को अपने साथ द्यूत खेलने के कार्य पर रख लिया। इस प्रकार युधिष्ठिर भी छद्‌मवेश में वहां रहने लगे।

पांडवों को सबसे अधिक चिन्ता भीम की थी, जिनके भोजन की मात्रा दूसरों से कई गुना अधिक होती थी और उसकी व्यवस्था करना कठिन होता था। परन्तु भीम को पाककला का अच्छा ज्ञान था, इसलिए उन्होंने राजकीय पाकशाला में रसोइये का कार्य पाने का निश्चय किया। उनको भी सरलता से कार्य मिल गया और इस प्रकार एक बड़ी बाधा दूर हो गयी। अब वे पेट भरकर भोजन कर सकते थे।

अर्जुन ने अपने पिछले वनवास काल में गंधर्वों के साथ रहकर नृत्य और संगीत विद्या का ज्ञान प्राप्त किया था। अतः उन्होंने अपना नाम वृहन्नला रखकर गंधर्व महिला के रूप में नृत्य-संगीत की शिक्षा देने का निश्चय किया। उनको राजकुमारी उत्तरा को नृत्य सिखाने का कार्य मिल गया। यद्यपि उनके निवास की व्यवस्था राजमहल से बाहर थी, परन्तु नृत्य सिखाने के लिए वे राजमहल में जाते थे और इस प्रकार वे द्रोपदी के निकट ही रहते थे।

नकुल और सहदेव को पशुओं के बारे में अच्छा ज्ञान था। नकुल विशेष रूप से घोड़ों के बारे में बहुत कुछ जानते थे, इसलिए उनको राजा विराट की अश्वशाला में कार्य मिल गया। इसी तरह सहदेव को भी पशुशाला में पशुओं की देखरेख और उनकी चिकित्सा का कार्य प्राप्त हो गया।

इस प्रकार सभी पांडव अलग-अलग रहते हुए भी एक दूसरे से बहुत दूर नहीं थे और आवश्यकता पड़ने पर गुप्त रूप से मिल भी सकते थे। सदा सावधान और सशंकित रहते हुए वे अपने अज्ञातवास के दिन काट रहे थे। दिनों का हिसाब रखने का दायित्व मूलतः सहदेव के पास था, परन्तु महाराज युधिष्ठिर भी इनकी गणना करते थे। सभी ने आपस में यह निश्चय कर रखा था कि समय आने पर युधिष्ठिर के संकेत पर ही सभी स्वयं को प्रकट करेंगे।

विराट नगर में पांडव किसी से अधिक सम्पर्क नहीं रखते थे और सामान्यरूप से अपना कार्य करते हुए दिन बिता रहे थे। अर्जुन तो वृहन्नला के रूप में सैरंधी बनी द्रोपदी को लगभग हर दूसरे-तीसरे दिन देखते रहते थे और कभी-कभी उनको युधिष्ठिर भी कंक के रूप में दरबार आते-जाते मिल जाते थे। लेकिन सामान्य अभिवादन के अतिरिक्त उनमें कोई बात नहीं होती थी, जैसे वे एक दूसरे को जानते भी नहीं हों। परन्तु भीम, नकुल और सहदेव से मिलना उनके लिए कठिन होता था। फिर भी वे माह-दो माह में एक बार गुप्त रूप से मिल ही लेते थे। उधर दुर्योधन पांडवों का पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहा था, पर अभी तक उनकी हवा भी नहीं पा सका था।

महारानी सुदेष्णा का भाई कीचक विराट नगर का सेनापति भी था। वह बहुत मनमानी करता था। एक प्रकार से वह राजा विराट को अपनी उंगलियों पर नचाता था। सैरंधी पूरा प्रयत्न करती थी कि वह कीचक की दृष्टि से दूर ही रहे, जो कभी-कभी अपनी बहिन से मिलने महल में आया करता था।

जब अज्ञातवास के दिन लगभग पूरे होने वाले थे, तो एक दिन कीचक की दृष्टि सैरंधी पर पड़ ही गयी। उसके स्वाभाविक सौंदर्य को देखकर कीचक बहुत प्रभावित हो गया और उसे पाने की आशा करने लगा। उसने सैरंधी से उसका परिचय पूछा, तो उसने बताया कि मैं सैरंधी हूँ और कुमारी नहीं हूँ, बल्कि ५ गंधर्व मेरे पति हैं, जो अदृश्य रहकर मेरी रक्षा करते हैं।

लेकिन कीचक की मोटी बुद्धि में यह बात नहीं आयी। उसने अपनी बहिन रानी सुदेष्णा पर दबाव डाला कि सैरंधी को मेरी सेवा में भेज दो। लगातार दबाव पड़ने के कारण रानी ने सैरंधी को कोई वस्तु देकर कीचक के पास भेजा। सैरंधी वहाँ जाना नहीं चाहती थी, लेकिन स्वामिनी का आदेश होने के कारण उसे जाना पड़ा। वहाँ कीचक ने उसको पकड़ने की कोशिश की, तो वह किसी तरह वहाँ से भाग निकली।

महल में आकर उसने रानी सुदेष्णा से कहा कि आपके भाई ने मेरे सम्मान पर हाथ डालने की कोशिश की है। यह उचित नहीं है। मेरे गंधर्व पति बहुत बलवान हैं, वे उसके साथ कुछ भी कर सकते हैं। इसलिए आगे से मैं उसके निवास पर नहीं जाऊंगी। यह सुनकर रानी सुदेष्णा डर गयी, लेकिन वह अपने भाई से बहुत डरती थी, इसलिए उसने कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया।

अपने सतीत्व पर संकट देखकर द्रोपदी उसी रात गुप्तरूप से भीम से मिली और उसे पूरी बात बतायी। भीम ने उसे आश्वस्त किया और सलाह दी कि कीचक को एक निश्चित दिन रात्रि के समय में रंगशाला में आने के लिए कहो, मैं वहाँ उसको मार डालूँगा। द्रोपदी ने ऐसा ही किया। उसने कीचक से कहा कि मैं खुले रूप में तुमसे नहीं मिल सकती, नहीं तो मेरे गंधर्व पति मुझे मार डालेंगे। इसलिए गुप्त रूप में तुम रात्रि में रंगशाला में आ जाओ। वहाँ तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी।

वासना में अंधा कीचक द्रोपदी की इस चाल को नहीं समझ सका और उस रात रंगशाला में भीम के हाथों बुरी तरह पिटकर मारा गया।

कीचक को बहुत बलवान माना जाता था। उसके मारे जाने का समाचार देशभर में फैल गया। जब दुर्योधन को कीचक के गुप्त रूप से मारे जाने की खबर मिली तो उसका माथा ठनका। उसे लगा कि पांडव विराट नगर में छिपे हो सकते हैं, क्योंकि कीचक जैसे बलवान का वध भीम के अलावा कोई नहीं कर सकता।

उसने एक बार अपनी राजसभा में पूछा था कि पांडव कहां छिपे हो सकते हैं, तो भीष्म ने बताया था कि युधिष्ठिर धर्मात्मा हैं, वे जिस प्रदेश में भी होंगे, वहां कोई प्राकृतिक संकट नहीं आयेगा और समृद्धि होगी। यह पता लगाओ कि ऐसा प्रदेश कौन सा है? इस पर सभा में किसी ने ध्यान दिलाया कि विराट नगर में हर वर्ष ग्रीष्म काल में अकाल पड़ता है और चारे के अभाव में उनके हजारों पशु हमारे राज्य के चरागाहों में चरने के लिए आते हैं, परन्तु इस वर्ष वहां अकाल नहीं पड़ा है और उनके पशु भी चरने के लिए यहाँ नहीं आये हैं। इससे लगता है कि युधिष्ठिर वहीं छिपे होंगे।

(अगले अंक में जारी)

वेटिकन के सफेद कपड़ों का काला सच

राजीव चौधरी

गुड फ्राइडे ६ मार्च २०१० को सुबह-सुबह पुरे जर्मनी के गिरजाघरों में चर्च पदाधिकारियों के हाथों यौन शोषण का शिकार बने लोगों के लिए विशेष प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गई थीं. उसी दिन रोम के अखबारों में यह खबर पहले पन्ने की सुर्खियों में छपी थी. कुछ अखबारों ने इसे वैटिकन सामूहिक नरसंहार का नाम दिया है, क्योंकि इससे चार दिन पहले ही फ्राइडे के अवसर पर अपने संदेश में आर्चबिशप रॉबर्ट सोलिच ने कहा था कि चर्च ने संभवतः अपना नाम खराब होने के डर से पादरियों द्वारा मासूम यौन उत्पीडितों की मदद नहीं की. बीते काल की गलतियों के लिए कैथोलिक चर्च हमेशा शर्मसार रहेंगे.

आर्चबिशप के इस बयान के बाद समूचे यूरोप में पादरियों के विरुद्ध लोगों का कुछ गुस्सा तो कम हुआ पर चर्चों के प्रति लोगों की आस्था में भारी गिरावट हो गयी थी. ऐसा नहीं है कि इसके बाद पादरियों के कारनामे रुके हों, लेकिन एक आयोग का गठन जरुर किया था जो पादरियों के व्यवहार उनके चरित्र पर नजर बनाये रखेगा. उसी समय कार्डिनल पेल, जो आस्ट्रेलिया के सबसे वरिष्ठ पादरी समेत कैथोलिक चर्च की दुनिया में भी सबसे बड़े अधिकारियों में से एक थे, उन्हें यौन शोषण के मामलों में चर्च की ओर से आधिकारिक प्रतिक्रिया देने की जिम्मेदारी दी गयी थी, जो अब खुद अपने ऊपर लगे आरोपों पर ही घिर गये है.

वेटिकन सिटी में कुछ समय पहले ईसाईयों के सर्वोच्च धर्मगुरु पॉप जान पॉल के 'लव लेटर्स' भी सामने आये थे, जिन्होंने एक शादीशुदा अमेरिकी विचारक महिला अन्ना-टेरेसा ताइमेनिका से रिश्ता रखा हुआ था. अब तीसरे नंबर के अधिकारी कार्डिनल जॉर्ज पेल अपने ऊपर लगे यौन शोषण के आरोपों में घिरते दिखाई दे रहे हैं. ७६ वर्षीय कार्डिनल पेल फिलहाल वेटिकन सिटी में रहते हैं और उन पर यौन शोषण के आरोप उनके ही देश आस्ट्रेलिया में लगाए गए हैं. पेल ने कहा है कि पोप ने उन्हें इन आरोपों का सामना करने के लिए छुट्टी दी है. आस्ट्रेलिया में विक्टोरिया स्टेट पुलिस ने कहा है कि वकीलों से सलाह-मशविरे के बाद कार्डिनल पर आरोप लगाए गए हैं. कार्डिनल पेल को आने वाली १८ जुलाई को मेलबर्न की अदालत में पहुंचना है. इस मामले में अब तक आरोपों से जुड़ी जानकारी को सार्वजनिक नहीं किया गया है. लेकिन अगले हफ्ते एक जज कार्डिनल की पेशी से पहले जानकारी को सार्वजनिक किए जाने पर फैसला हो सकता है. उसी दिन एक बार फिर वेटिकन की पादरियों की सेना के द्वारा पहने जाने वाले सफेद कपड़ों का काला सच सामने आ जायेगा.

अधिकांश ऐसा माना जाता रहा है कि जब मनुष्य का मन भोग-विलास से भर उठता है तो वह अध्यात्म की ओर रुख करता है, उससे जुड़ता है. उसमें राग, द्वेष, मोह, भोग आदि चीजों का त्यागकर एक सरल जीवन जीता है, जिसके भारत देश में बहुत सारे उदाहरण सुनने देखने को मिलते हैं. लेकिन यदि ईसाइयत के अन्दर चर्चों के पादरियों को झांककर देखें तो लगता है जैसे इनके जीवन का मुख्य उद्देश्य पूजा. उपासना और आम जन को सही राह दिखाने के बजाय सिर्फ यौन शोषण ही रह गया हो.

दरअसल रोमन केथोलिक चर्च का एक छोटा राज्य है जिसे वेटिकन सिटी बोलते हैं. जिसे ईसाइयों का मक्का भी कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी. अपने धर्म (ईसाई) के प्रचार के लिए वे हर साल गरीब देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का बहाना लेकर करीब १७ हजार करोड़ डॉलर खर्च करते हैं. वेटिकन के किसी भी व्यक्ति को पता नहीं कि उनके कितने व्यापार चलते हैं. बताया जाता है कि रोम शहर में ३३ प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक, प्लास्टिक, एयरलाइन, केमिकल और इंजीनियरिंग बिजनेस वेटिकन के हाथ में हैं. इटालियन बैंकिंग में उनकी बड़ी संपत्ति है और अमेरिका एवं स्विस बैंकों में उनकी बड़ी भारी राशि जमा होने के साथ विश्व भर की मीडिया में वेटिकन का सीधा हस्तक्षेप होता है. इसलिए पादरियों पर लगने वाले आरोपों और उनके काले कारनामों पर अक्सर मीडिया में खामोशी छाई रहती है.

कहीं मिशनरियों के जरिये बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन को लेकर, तो कहीं बच्चों का यौन शोषण को लेकर कैथोलिक चर्च अक्सर आलोचना का केंद्र रहा है. लोगों के अनुसार इसके लिए इनके चरित्र का दोहरापन जिम्मेदार है. इसी कारण यूरोप के लोग धीरे-धीरे चर्च से निकल रहे हैं, पर दुखद बात यह कि जब यूरोप के लोग चर्च छोड़कर बाहर निकल रहे हैं, उसी समय भारत जैसे देश में बड़ी संख्या में लोग चर्च में घुस रहे है और खुद को राम-कृष्ण की संतान की बजाय जीसस का पुत्र समझ रहे हैं. सुदर्शन न्यूज चैनल के मालिक सुरेश चव्हाण की बात यहाँ सही निकलती है कि भारत की मीडिया को अधिकतर फंडिग वेटिकन सिटी जो ईसाई धर्म का बड़ा स्थान है वहाँ से आती है इसलिए मीडिया केवल हिन्दू धर्म के साधु-संतों को बदनाम करती है और ईसाई पादरियों के दुष्कर्मों को छुपाती है. बहुत पहले चीनी विचारक नीत्शे ने कहा था कि मैं ईसाई धर्म को एक अभिशाप मानता हूँ, उसमें आंतरिक विकृति की पराकाष्ठा है. वह द्वेषभाव से भरपूर वृत्ति है. यह एक ऐसा जहर है जिसका कोई इलाज नहीं हैं. ■

चीन की पैंतरेबाजी

बिपिन किशोर सिन्हा

चीन एक विस्तारवादी देश है। उसकी इस आदत के कारण उसके सभी पड़ोसी देश परेशान हैं। उसके विस्तारवाद के कारण ही विएतनाम, दक्षिण कोरिया, कंबोडिया और जापान परेशान हैं। रूस से भी उसका सीमा-विवाद वर्षों तक चला। दोनों देशों की सीमा पर स्थित 'चेन माओ' द्वीप को लेकर रूस और चीन के संबन्ध असामान्य रहे। रूस हर मामले में उससे बीस पड़ रहा था। अतः अन्त में चीन ने समर्पण कर दिया और 'चेन माओ' द्वीप पर रूस का आधिपत्य स्वीकार किया, तब दोनों देशों के संबन्ध सामान्य हुए।

अपनी विस्तारवादी नीति के अन्तर्गत ही चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया, वरना उससे हमारी सीमाएं कहीं मिलती ही नहीं थीं। तिब्बत एक बफर स्टेट था लेकिन चीन द्वारा उस पर कब्जे के बाद ही वह भारत के सीधे संपर्क में आ गया। नेहरू की अदूरदर्शिता ने विरासत में भारत को एक ऐसी समस्या दी जिसका कोई समाधान ही नहीं है। वह तो लद्दाख और अरुणाचल पर भी अपना दावा करता है। पाकिस्तान ने गुलाम कश्मीर का अक्साई चिन वाला कुछ भूभाग उसे नजराने में देकर उसका मन बढ़ा दिया है।

वर्तमान दोकलम में सड़क निर्माण भी चीन की इसी नीति का परिणाम है। उसे मालूम था कि भूटान एक कमजोर देश है। अतः उसकी सीमा में घुसकर कुछ भी किया जा सकता है। भूटान की सुरक्षा का दायित्व एक संधि के अनुसार भारत के पास है। सामरिक रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दोकलम में चीन द्वारा सड़क निर्माण सीधे भारत की सुरक्षा से जुड़ा है। चीन को शायद यह उम्मीद नहीं थी कि भारत इस मामले में सीधा हस्तक्षेप करेगा। फिलहाल सड़क निर्माण रुका हुआ है और चीन की बौखलाहट बढ़ती जा रही है।

चीन ने यह कहकर तिब्बत पर कब्जा किया था कि इतिहास के किसी कालखंड में तिब्बत चीनी साम्राज्य का एक हिस्सा हुआ करता था। यह ठीक वैसा ही है जैसे भारत यह कहकर अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्ला देश और म्यांमार पर कब्जा कर ले कि इतिहास के किसी कालखंड में ये सभी देश उसके अंग थे। तिब्बत सैकड़ों साल तक एक स्वतंत्र देश के रूप में विश्व के मानचित्र पर रहा है। चीन का उस पर कब्जा और तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा चीनी कब्जे को मान्यता देना अवैध है।

तिब्बत के शासन-प्रमुख और शीर्ष धार्मिक नेता दलाई लामा हिमाचल के धर्मशाला में आज भी निर्वासन झेल रहे हैं। धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार आज भी काम करती है। चीन इससे चिढ़ता है और भारत को परेशान करने का कोई भी मौका वह हाथ से

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जमीं से आसमां तलक गमों के साए हैं
कि बनके बोझ जमीं पर हमतो आए हैं
जिंदगी कश्ती पे अपनी मुझे कहीं ले जा
अब यहां कोई नहीं मिरा है हम पराए हैं
दर्द ए इल्जाम किसको दें गुनहगार हूं मैं
दर्द के पौधे दिल में खुद ही तो लगाए हैं
इतना आसां नहीं टूटकर बिखर जाना
हमने हर रोज इस दिल पे जख्म खाए हैं
उनकी तस्वीर समझकर अमानत अपनी
रात दिन दिल से ये तस्वीर हम लगाए हैं
हरेक दिन का हिसाब देंगे तुझे ले तो सही
सुन तेरी यादों में अश्क आज भी बहाए हैं
अपने दिल में छुपालो या रुसवा कर दो
बस तेरे लिए ही हम तेरे शहर में आए हैं
एक न एक दिन तो मिलेगी मंजिल ये हमें
अभी थके नहीं न कदम ही डगमगाए हैं
मिटाने से नहीं मिटता दिल से अब जानिब
इस कदर हमको फिर आप याद आए हैं

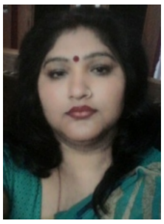

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

महके महके आशियाने हो गये
चिड़िया के बच्चे सियाने हो गये
हर तरफ हैं प्यार की ही खेतियाँ
नफरतों के अब जमाने हो गये
जेब में जो चार पैसे आ गये
उनके तीखे फिर निशाने हो गये
उसने पलभर को जो थामा हाथ को
सारे मंजर फिर सुहाने हो गये
हमने उनके नाम नज्में क्या लिखीं
लोग कहते हैं दीवाने हो गये
सत्ता की जयकार सीखी हमने तो
काम सारे बिन बहाने हो गये
नोटबंदी से 'दर्द' लगे है देश में
बंद चोरी के मुहाने हो गये

-- अशोक दर्द

बदलता वक्त हूँ, जाने मेरा अंजाम क्या होगा?
सुनाई दे रहे नामों में मेरा नाम क्या होगा?
यहां बिकती सभी चीजें है जिनका मोल लाखों में
बना अनमोल फिरता हूँ तो मेरा दाम क्या होगा?
निकल पड़ता हूँ नदियों में समंदर भी मिले तो क्या?
अभी जो है ये नजराना मेरा ईनाम क्या होगा?
लगा रखा है तेरा नाम अपने नाम के संग में
हुआ रौशन जमाने में, तो अब बदनाम क्या होगा?
हुई नेमत जो शिव की तो, मिली है रौशनी हमको
नहीं अब सोचना कुछ भी मेरा परिणाम क्या होगा

-- सौरभ दीक्षित

दिल के तार तुमसे जुड़ गये न जाने कैसे
सुनो प्रिय प्रेम तुमसे हो गया न जाने कैसे
धड़कनें मेरे दिल की धड़कें तुम्हारे संग में
छेड़ देते तुम जरा भी झनके न जाने कैसे
छाया जभी अंधेरा दिया तुमने रौशनाई
जल गई यकीं की बाती तुमसे न जाने कैसे
द्वार पर मेरे दिल के लगे हैं बहुत से पहरे
फिर ख्वाब में वे मेरे आ गये न जाने कैसे
भावनाएँ मेरी हरदम महसूस की उन्हें ही
बंध गये शब्द खुद ही छंद में न जाने कैसे

-- किरण सिंह

कह देते वो अगर इक कहानी हो जाती
हमारी भी खूबसूरत जिन्दगानी हो जाती
हर तरफ देश में अब हो रहा है क्या
काश! याद शहीदों की कुर्बानी हो जाती
मजहब,जाति से भी बड़ा वतन होता है
बात यह यूंही सबको जुबानी हो जाती
गिले शिकवों में क्या रखा है छोड़ो तुम
ईद औ होली पे ये बातें बेमानी हो जाती
नफरत को छोड़ गर शान्ति की सोचें सब
हर तरफ कुदरत की मेहरबानी हो जाती

-- कामनी गुप्ता

कोई इल्जाम हमपे लगाना नहीं
बोलती सच मैं करती बहाना नहीं
आ भी जाते समय पर मगर क्या करें
बन्द घड़ियों का कोई ठिकाना नहीं
द्वार बापू खड़े माँ खड़ी आँगना
आँख से आँख को तुम लड़ाना नहीं
जैसे तैसे निकल के अभी आये हैं
अब लगा लो गले आजमाना नहीं
प्यार की राह 'अनहद' बड़ी वक्र है
आज से पहले तो हमने जाना नही

-- अनहद गुंजन गीतिका

क्या मुहब्बत का मेरी आज असर है कोई
हो रहा बोध या खुशियों की लहर है कोई
जो निभाता सबसे हो सबका ही माना
आप कहे ये भी अब मान सफर हैं कोई
हैं लिया पग पे ठोकर ना समझे जब वो
अब ना ठोकर का भी होश असर है कोई
न खबर न कोशिश पाया मन यूँ है
सोच जाना है तो क्या सफर है कोई
आफते तो लेकर चलते सब जीवन में
होश इनके संग ले चल हसर है कोई
हाथ में हाथ ठहर रिश्ते जब पाये
नफरतें सोच कहीं जान भँवर हैं कोई
सोच अब ठान इबादत हो जंग की राहें
देश की बढ़त बनी आन नजर हैं कोई
रोज दुनिया में लुटाता पाया प्यार अपना
कौन है फाका कब जान खबर है कोई

-- रेखा मोहन

जो बतियाते सिर्फ कलम से, अँधियारों में
वो कब छपते खबरों में या, अखबारों में
नमन उन्हें जो, धर आते भर नेह उजाला
चुपके से इक दीप, तिमिर के ओसारों में
राह दिखाते कोहरे-बरखा में जुगनू भी
आब न होती जब नभ के चंदा तारों में
छल-बल देर-सबेर विजित होंगे निर्बल से
लिप्त रहा करते जो कुत्सित व्यापारों में
सधा हुआ ही राग बंधु! गाया जाएगा
सत्य-मंच पर गीतों में या अशयारों में
चर्चित होंगे नाम विश्व में कभी 'कल्पना'
जो रचते इतिहास घरों की दीवारों में

-- कल्पना रामानी

ये नहीं सच कि मुझे उससे मुहब्बत कम थी
उसकी नजरों में वफाओं की ही कीमत कम थी
टूटकर बाग में बिखरे थे वही गुल केवल
जिनमें तूफान से लड़ पाने की ताकत कम थी
मेरे मौला तेरी नाराजगी को क्या समझूँ
बेअसर मेरी दुआ थी कि इबादत कम थी
थोड़े आंसू थे शिकायत भी थी और थी फुरसत
जीस्त में सिर्फ तुम्हारे बिना जीनत कम थी
बारहा हाथ मेरे आई तभी नाकामी
थोड़ी मेहनत कम थी थोड़ी शिद्दत कम थी
तुम भी वादों से मुकरने की अदा रखने लगे
यूँ सताने के लिए क्या ये सियासत कम थी
इस जमाने में वही लोग सुखी हैं 'माही'
आज भी कल की तरह जिनकी जरूरत कम थी

-- महेश कुमार कुलदीप 'माही'

गुल है गुलशन है महकती सी डगर है कोई
आप हैं साथ या मौसम का असर है कोई
प्यार ही धर्म जहाँ प्यार ही दौलत सबकी
बोलिये क्या कहीं ऐसा भी नगर है कोई
दिल की धड़कन में अजब सी है आज बेचैनी
लग रहा जैसे समंदर में लहर है कोई
ख्वाब देखा है जिसने आसमां को छूने का
उस परिंदे को हवा का नहीं डर है कोई
दर्द अपनों से हमें कितना मिला क्या बोलें
दिल की दहलीज पे ठहरा समंदर है कोई
कुछ पूछना है तो इजाजत है पूछ सकते हैं
शक मेरे प्यार पे जो दिल में अगर है कोई

-- रमा प्रवीर वर्मा

धर्म या इन्सानियत!

शेरू पुरा गाँव में कभी भी अमन शान्ति नहीं रही थी। इस गांव के मुसलमानों, हिन्दुओं और सिखों में हमेशा तनातनी रहती थी। गरीबी भी इस गाँव में खुशहाल थी, शायद यही वजह थी कि गाँव के लोग एक दूसरे की सहायता करने में असमर्थ थे और शायद यह भी कारण हो कि हर कोई खिंचा-खिंचा सा रहता था।

एक दिन सुबह ही एक संत बाबा इस गाँव के बड़े पीपल के नीचे आकर बैठ गए। गाँव के लोगों की एक सिफत तो होती ही है कि आपस में बेशक बोलचाल अच्छी हो न हो, लेकिन बाबा जी को सलाम-नमस्ते जरूर बोलेंगे। धीरे-धीरे लोग आने लगे और उनके पास बैठकर इसी आशा में रहते कि बाबा जी उनका भविष्य उज्ज्वल कर देंगे। बाबा जी सबको इतना अच्छा उपदेश देते कि किसी ने कभी यह नहीं पूछा कि वे हिन्दू, सिख या मुसलमान थे। एक बात थी कि बाबा जी का हँसमुख चेहरा सबके दिल मोह लेता था।

दिन बीतते गए और बाबा जी गाँव के कामों में भाग लेने लगे। एक दो सालों में उनको गाँव के हर घर की हालत का ज्ञान हो गया। किसी के घर में कोई तकलीफ होती, तो बाबा जी झट से उनके घर पहुंच जाते और उनकी मदद करते। उन्होंने गाँव के पोस्ट ऑफिस में अपना अकाउंट बना लिया और जितने भी पैसे लोग उनको देते वोह पोस्ट ऑफिस में जमा कर देते। गाँव में किसी गरीब का बच्चा बीमार हो, किसी गरीब की बिटिया की शादी हो, वे पोस्ट ऑफिस से पैसे निकालते और उनकी मदद कर देते। यह देखकर उन की ख्याति बढ़ने लगी और लोग ज्यादा से ज्यादा पैसे बाबा जी को देने लगे, क्योंकि उनको पता था कि बाबा जी अपने लिए कोई पैसा खर्च नहीं करते थे ।

अब बाबा जी गाँव के कामों में भी हिस्सा लेने लगे। गाँव की सफाई शुरू हो गई और वृक्ष लगने शुरू हो गए। जिस गाँव में हमेशा लड़ाई-झगड़े रहते थे, अब वे सभी बाबा जी के बचन सुनते जो हमेशा सबका मन मोह लेते थे। सभी धर्मों के लोग अब प्यार मुहब्बत से रहने लगे और कुछ ही सालों में गाँव का नक्शा ही बदल गया। जब तक बाबा जी बूढ़े हुए गाँव बिलकुल बदल चुका था और अब वे गाँव के सांझे बाबा थे।

कुछ दिन से बाबा जी की तबीयत ठीक नहीं थी, खांस रहे थे और वे तकिये के सहारे बैठे हुए थे कि गाँव के कुछ लोग एक नक्शा लेकर आये जो किसी धार्मिक स्थान का था। नक्शा उन्होंने बाबा जी के चरणों में रख दिया और एक शख्स हाथ जोड़कर बोला, 'बाबा जी! आपने हमारे गाँव को स्वर्ग बना दिया है, हम आपकी याद में एक धार्मिक स्थान बनाना चाहते हैं। हमें आज तक कुछ नहीं पता कि आप हिन्दू हैं या सिख या मुसलमान, लेकिन आपने जो कुछ इस गाँव को दिया है, वह शेरू पुरा कभी भूल नहीं सकेगा। हमने एक धर्म स्थान का नक्शा तैयार करवाया है, जिसमें हिन्दू, सिख और मुसलमान, तीनों धर्मों की झलक दिखाई देगी। कृपया इसको मंजूरी दे दें।'

बाबा जी ने नक्शा हाथ में पकड़ा, ध्यान से काफी देर देखते रहे और फिर अचानक उन्होंने नक्शा फाड़ दिया और कुछ टुकड़े करके दूर फेंक दिए। सभी हैरान हुए बाबा जी की तरफ देख रहे थे। कुछ देर सोचने के बाद बाबा जी मुस्कराये और धीरे-धीरे बोले, 'अब इस गाँव में कोई धर्म स्थान मायने नहीं रखता क्योंकि अब सारा गाँव धर्म से ऊपर उठकर इंसान बन गया है।' बाबा जी जोर-जोर से खांसने लगे और कुछ ही पलों में शरीर का त्याग कर दिया।

-- गुरमेल सिंह भमरा

कोशिश

'माँजी! मन तो हमारा भी नहीं कर रहा कि आप लोगों को छोड़कर जाएँ लेकिन' अपनी बात अधूरी ही छोड़ तनु, पुरू को साथ ले माँ के चरणों में झुक गयी।

'मैं समझ रही हूँ बेटी। हमें भी तुम्हारी कमी खलेगी और पुरू के बिना तो बहुत सूना-सूना लगेगा।'

माँ की नम आँखें और पिता की खामोशी वह भली-भाँति समझ रहा था लेकिन नौकरी के चलते उसका विदेश जाना मजबूरी बन गया था।

'अरे दादी आप उदास क्यों होती हो, मैं रोज वीडियो कॉल करूँगा न आपको।' नन्हा पुरू हँसते हुए कह रहा था। 'और हम जल्दी ही लौट भी आएंगे न, कोई ज्यादा दूर थोड़े ही है इटली।'

'हाँ ठीक ही तो कह रहा है हमारा पुरू।' सुबह से चुप्पी साधे पिता पहली बार बोले थे, 'इस हाई टेक जमाने में ये मीलों की दूरियां भला क्या मायने रखती है, बस मन के तार जुड़े रहने चाहिए।' अपनी बात कहते हए उन्होंने पुरू के हाथ में एक छोटा सा पौधा रख दिया था, 'लो बेटा ये छोटा सा 'गिफ्ट' तुम्हारे लिए!'

'बाबा ऐसे प्लांट भी कोई गिफ्ट देता है क्या?'

'हाँ बेटा हम दे रहे हैं न तुम्हें। यह छोटा सा पौधा तुम अपने नए घर में जाकर लगा देना और जब वर्षो बाद ये खूब बड़ा हो जाएगा न, तब यह तुम्हें बाबा की तरह ही छाँव और प्यार देगा। पता नहीं, तब हम साथ होंगे भी या नहीं!'

पुरू तो बच्चा था लेकिन वह सहज ही पिता के मन के भावों को समझ गया, 'पिताजी मैं वहां जाकर पूरी कोशिश करता हूँ न, आप लोगों को बुलाने...'

'बेटा, जीवन इतना सरल नहीं होता, जितना दिखाई देता है।' पिता ने उसकी बात बीच में ही काट दी थी, 'कभी-कभी इन कोशिशों में ही पूरा जीवन गुजर जाता है पर हम कामयाब नहीं हो पाते। बस रख सको तो हमारे अकेलेपन के अहसास को अपने मन में जिंदा रखना बेटा।'

पिता की आखों में आई नमी के बीच उनका दर्द भी उभर आया था। बरसों पहले गाँव छोड़कर शहर आ बसने के बाद कभी गाँव न लौट पाने का दर्द, और न ही कभी चाहकर भी दादा-दादी को साथ शहर में रख पाने का दर्द।'

'अब बारी मेरी है एक कोशिश की' सोचते हुए वह पिता के चरणों में झुक गया।

-- विरेन्दर 'वीर' मेहता

वन महोत्सव

वन महोत्सव का आयोजन विद्यालय परिसर के प्रांगण में होना था, जिसका उद्घाटन करने मंत्री महोदय पधारने वाले थे। तैयारियां जोर-शोर से चल रही थीं। कार्यक्रम के लिए एक बड़ा वाटरप्रूफ पांडाल लगना था। सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए बहुत दूर से कलाकारों को बुलाया गया था। सभी तैयारियों के बीच एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी। विद्यालय के प्रांगण के बीच में नीम का एक विशाल वृक्ष था जो पांडाल लगाने में बाधा उत्पन्न कर रहा था। ग्राम प्रधान से लेकर बीडीओ तक सब परेशान थे, पर समस्या का कोई हल नहीं निकल रहा था। मंत्री महोदय के कार्यक्रम में किसी तरह की कोताही क्षम्य नहीं थी। अंत में यह निर्णय हुआ कि इस वृक्ष की कुछ शाखाओं को काट दिया जाय तो शायद समाधान हो सकता है। शाखाओं को काटा गया, पर काम नहीं बना, फिर धीरे-धीरे सभी शाखाओं को काट दिया गया, केवल मुख्य तना शेष रह गया।

प्रांगण में विशाल पांडाल और बड़ा-सा मंच बनकर तैयार हो गया। अब पुनः एक नयी समस्या खड़ी हो गयी। वृक्ष का वह मोटा से तना मंच के ठीक सामने बाधा बनकर खड़ा था। क्योंकि मंत्री महोदय व अन्य वक्ता वन महोत्सव की महत्ता से सभी को परिचित कराने वाले थे। अन्ततः आनन-फानन में आरा मशीन की व्यवस्था की गयी और उस तने को काटकर गिराया गया। पांडाल में कुर्सियां लगवाकर सभी व्यवस्थापकों ने राहत की सांस ली। तय समय से लगभग दो घंटे बाद माननीय मंत्री महोदय विधायकगणों के साथ पधारे। कलाकारों ने स्वागत गीत गाये। वन महोत्सव में शायद प्रकृति भी भागीदारी करना चाहती थी इसी कारण मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। मंत्री जी व विधायकगणों ने छातों की छाँह के मध्य मंत्रोच्चारण व शंखध्वनि के बीच पीपल वृक्ष को रोपित कर वन महोत्सव की शुरुआत की। सभी आगंतुकों को भोजन कराया गया। कलाकारों ने सुंदर गीतों के द्वारा लोगों का मनोरंजन किया। वन विभाग की ओर से मंत्री जी को रुद्राक्ष का एक पौधा भेंट किया गया तथा अपनी गरिमामयी उपस्थिति के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस प्रकार वन महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

-- लवी मिश्रा

बन्दूक-बन्दूक का खेल

डॉ जेन्नी शबनम

नक्सलवाद और मजहबी आतंकवाद में सबसे बड़ा बुनियादी फर्क उनकी मंशा और कार्यकलाप में है। आतंकवादी संगठन हिंसा के द्वारा आतंक फैलाकर सभी देशों पर अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहते हैं। इनकी मांग न तो सत्ता के लिए है न बुनियादी जरूरतों के लिए है। नौजवानों को गुमराह करके विश्व में एक ही मजहब का वर्चस्व स्थापित करना इनका उद्देश्य है। मजहबी आतंकवाद ने धीरे-धीरे पूरी दुनिया को अपने कब्जे में ले लिया है। नक्सलवाद इन आतंकी संगठनों से बिल्कुल भिन्न बुनियादी मांगों के लिए अस्तित्व में आया। लेकिन आज नक्सलवाद का रूप क्रूरता के सभी हदों को पार कर चुका है। इनकी मांग निःसंदेह जायज है, पर तरीका अत्यंत क्रूर। साम्यवादी सोच का जरा भी अंश नहीं है इनमें। लाल झंडा उठा लेने से या लाल सलाम और कामरेड कह देने से इन्हें साम्यवादी नहीं कह सकते।

दाँव पेंच हो या सत्ता की मजबूरी, आज देश के हालात पर नियंत्रण सरकार के बूते से बाहर होती जा रही है। आम मध्यमवर्गीय जनता किसी तरह जीवन जी रही है। लेकिन खास आदमी डरा रहता है, उसे सरकारी तंत्र के साथ भी चलना है और हिंसक गतिविधियों से भी खुद को बचाना है। निम्न वर्ग की जनता के पास कोई चारा नहीं है। मुख्य धारा से अलग कटे हुए आदिवासी प्रदेश के लोग अब इंसान नहीं रहे, एक ऐसे यांत्रिक मानव बन चुके हैं जिनके शरीर से चेतना निकाल कर बन्दूक जकड़ दी गई है। इसका नियंत्रण उन कुछ गिने हुए लोगों के हाथों में है जो किसी नक्सलवादी सरगना या नेताओं के हैं। जब जहाँ चाहे इस्तेमाल में ले आते हैं। सच्चाई यह है कि ये निरीह लोग पेट की भूख के लिए जिन्दगी दाँव पर लगा बैठे हैं।

बन्दूक लेकर बन्दूक से लड़ाई हो तो सिर्फ बन्दूक नहीं खत्म होता, दोनों में से कोई एक मरता है, और जो मरता है वह भी हमारा ही कोई अपना है, चाहे वह सैनिक हो या नक्सलवादी। आज जब सैनिक मारे जाते हैं तो पूरा देश सुरक्षा-तंत्र की खामियाँ ढूँढता है, परन्तु हर दिन हजारों आदिवासी कभी भूख से मरते हैं, कभी नक्सली कहकर फर्जी मुठभेड़ में मार दिए जाते हैं, संदिग्ध नक्सली कहकर कितने असहाय और निरपराध लोग जेल में बंद कर दिए जाते हैं।

हत्यायें करना, सरकारी संपत्ति को नष्ट करना, आतंक फैलाना, बस इतना ही मुद्दा रह गया है इन नक्सलियों का। आखिर क्यों ये मुख्य मुद्दों से दूर होकर सिर्फ हिंसा पर उतर आये हैं? आदिवासी क्षेत्रों से फैलते हुए सभी राज्यों में नक्सली अपना विस्तार कर रहे हैं। सरकारी शस्त्रों को लूटकर अपनी शक्ति मजबूत कर रहे हैं। आखिर यह जंग किसके खिलाफ है? देश भी अपना सैनिक भी अपने, नक्सली भी इसी देश के वासी। क्या सरकार ग्रीन हंट के द्वारा नक्सली आन्दोलन खत्म कर पाएगी? सैनिकों को युद्ध का प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि नक्सलियों से लड़ें। क्या आदिवासियों की बुनियादी जरूरत नक्सलियों की मृत्यु का पर्याय है?

नक्सलियों की क्रूरता और हिंसा को कोई भी देशवासी उचित नहीं कहता है, परन्तु सोच कई खेमों में बँट चुकी है। नक्सलियों के दिशा परिवर्तन या आदिवासी के उत्थान की बात जो कहता है उसे लाल झंडे के अन्दर मान लिया जाता है। लाल झंडा क्रान्ति की बात कहता है, न कि खूनी-क्रान्ति का पक्षधर है या रहा है।

नक्सलवाद कोई एक दिन की उपज नहीं है, वर्षों की असंतुष्टि का प्रतिफल है, जो हिंसा का क्रूरतम और आत्मघाती रूप ले चुका है। नक्सलबाड़ी में जब यह शुरू हुआ, उस समय हथियार और हिंसा की लड़ाई नहीं थी, बल्कि अधिकारों की लड़ाई थी। धीरे-धीरे स्थिति और भी बदतर होती गई। किसी भी नक्सली क्षेत्र की बात करें तो वहाँ बुनियादी जरूरत भी पूरी नहीं होती है। सहनशक्ति तब तक रहती है जब इंसान खुद भूखा रह जाए लेकिन उसका बच्चा कम से कम भर पेट खाना खा ले। और जब बच्चा भूख से दम तोड़ता है तो हथियार के अलावा उन्हें कुछ नहीं सूझता। क्रूरतम अपराध भले है लेकिन दो वक्त की रोटी का जुगाड़ तो हो जाता है। अब भी वक्त है, उनकी जरूरत पूरी की जाए और उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा जाए तथा हर तरह का विकास हो। फिर कोई क्यों किसी की जान लेगा या अपनी देगा?

आखिर क्या कारण है कि नक्सलवादी आदिवासी इलाकों में ही पनपते और जड़ें जमाते हैं? आजादी के इतने सालों के बाद भी और राज्य के बँटवारे के बाद भी छत्तीसगढ़, ओड़िसा और झारखंड में विकास क्यों नहीं हुआ? विकास गर हुआ भी तो आदिवासी इससे वंचित क्यों हैं? नक्सलवाद को जायज कोई नहीं कहता है। जैसे अन्य अपराध है वैसे ही यह भी अपराध है। गरीब आदिवासियों के लिए नक्सली बनना भी एक मजबूरी है। नक्सली न बनें तो नक्सली मार देंगे, बन गए तो पुलिस से मारे जाएँगे। उनकी जिन्दगी तो हर हाल में दाँव पर लगी हुई है। आम आदमी कभी सरकार को या कभी नक्सली को दोषी कहकर पल्ला झाड़ लेता है, क्योंकि इस हिंसक लड़ाई में न तो नेता मरता है, न कोई खास आदमी। यह तय है कि नक्सलियों की बुनियादी जरूरतें जब पूरी होंगी तभी उनमें प्रजातंत्र में विश्वास जगेगा और तभी इस खूनी खेल का खात्मा संभव है। ■

राम का देश थाईलैंड

डॉ निशा नंदिनी गुप्ता

भगवान राम के नाम से तो हर व्यक्ति परिचित है और हम सभी यह जानते हैं कि राम का इतिहास उनके पुत्रों लव-कुश पर आकर समाप्त हो जाता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत के बाहर थाईलैंड में आज भी संवैधानिक रूप में रामराज्य है और वहां भगवान राम के छोटे पुत्र कुश के वंशज सम्राट भूमिबल अतुल्य तेज राज्य कर रहे हैं, जिन्हें नौवां राम कहा जाता है।

राजा दशरथ ने अपने चारों पुत्रों का विवाह राजा जनक व उनके छोटे भाई कुशध्वज की पुत्रियों से कर दिया था। इस प्रकार राम का सीता से, लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का मांडवी से और शत्रुघ्न का विवाह श्रुतिकीर्ति से कर दिया था। राम और सीता के पुत्र लव और कुश हुए, लक्ष्मण और उर्मिला के पुत्र अंगद और चन्द्रकेतु हुए, भरत और मांडवी के पुत्र पुष्कर और तक्ष हुए और शत्रुघ्न और श्रुतिकीर्ति के पुत्र सुबाहु और शत्रुघात हुए थे। भगवान राम के समय में ही सभी पुत्रों में राज्य का बँटवारा हो चुका था। पश्चिम में लव को लवपुर (लाहौर), पूर्व में कुश को कुशावती, तक्ष को तक्षशिला, अंगद को अंगद नगर और चन्द्रकेतु को चंद्रवती राज्य प्राप्त हुआ था।

कुश ने अपना राज्य पूर्व की तरफ फैलाया और एक नागवंशी कन्या से विवाह किया था। थाईलैंड के राजा उसी कुश के वंशज हैं। थाईलैंड की राजधानी को लोग बैंकाक कहते हैं क्योंकि इसका सरकारी नाम इतना बड़ा है कि इसे विश्व का सबसे बड़ा नाम माना जाता है। यह पालि और संस्कृत के १६३ अक्षरों से मिलकर बना है, जो इस प्रकार है- करूंग देवमहानगर अमररत्न कोसिन्द्र महिन्द्रायुध्या महा तिलकभव नवरत्न राजधानी पुरीरम्य उत्तमराज निवेशन महास्थान अमरविमान अवतारस्थित्य शक्रदत्तिय विष्णु कर्म प्रसिद्धि। थाईलैंड का मतलब फ्री लैंड है। थाईलैंड को पहले स्याम देश के नाम से भी जाना जाता था। इस देश पर कभी किसी का कब्जा नहीं रहा। आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि थाईलैंड का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है, जिसे थाई भाषा में रामकियेन कहा जाता है, जिसका अर्थ राम की कीर्ति होता है। यह वाल्मीकि रामायण पर आधारित है।

इस ग्रंथ की मूल प्रति सन १७६७ में नष्ट हो गई थी, जिसे प्रथम राम (१७३६-१८०६) ने अपनी स्मरण शक्ति से पुनः लिख लिया था। थाईलैंड का राष्ट्रीय पक्षी गरुड़ है। भारतीय पौराणिक ग्रंथों में गरुड़ को विष्णु का वाहन माना गया है क्योंकि राम विष्णु के अवतार माने जाते हैं और थाईलैंड के राजा भगवान राम के वंशज हैं। इसलिए बौद्ध होने के बावजूद भी वे लोग हिन्दू धर्म पर अटूट आस्था रखते हैं। उन्होंने गरुड़ को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया है। यहां तक की थाई संसद के सामने भी गरुड़ बना हुआ है। थाईलैंड की राजधानी बैंकाक के

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

करघा व्यर्थ हुआ, कबीर ने बुनना छोड़ दिया
काशी में नंगों का बहुमत
अब चादर की किसे जरूरत
सिर धुन रहे कबीर रूई का धुनना छोड़ दिया
धुंध भरे दिन काली रातें, पहले जैसी रहीं न बातें
लोग काँच पर मोहित
मोती चुनना छोड़ दिया
तन मन थका गाँव घर जाकर
किसे सुनायें ढाई आखर
लोग बुत हुए सच्ची बातें
सुनना छोड़ दिया

-- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

न जाने कितनों दिनों से/बारिश का कहर
बाढ़ का पानी, अंदर बाहर बाढ़!
तुम्हारा भीतर से यूँ बह जाना
अनिवार्य लगता है कभी कभी
अच्छा है तुम औरत हो!
मगर मेरी आँखें डबडबाई हुई सी
बहने से रोकती है मगर ऐसा भी हों
बाँध का सब्र टूट जाएं और
अरे! सुनो तो/आज थोड़ा सा बुखार है,
ज्यादा नही, चिंता न करो.
ऐसा लगता है- जीवन थम सा गया है
मगर दिल का धड़कना/तुम्हारी मौजूदगी तो है!

-- पंकज त्रिवेदी

हमें हैरान-परेशान देखकर/एक व्यक्ति ने हमसे पूछा-
क्या खोज रही है आप?/हमने कहा कि इंसानियत!!
वह सुन सकपकाया/हमें तरेर कर देखा
शायद पागल समझ बैठा/थोड़ा हैरान हो बोला-
बड़ी अजीब हो/यहाँ इंसानों की भीड़ है भरी
और तुम्हें इंसानियत ही नहीं दिखी
हमने कहा- नहीं! कहीं नहीं!/बिलकुल नहीं दिखी!
वह बड़बड़ाता हुआ/मुड़-मुड़कर बार-बार
अजीब निगाहों से/देखता हुआ चला गया
क्या आपको भी हम पागल दिखते हैं!
आप ही बताओ- सड़क पर घिसटते हुए
आदमी को देखकर मुँह फेरकर चल देना
क्या इंसानियत होती है?
भीख माँगते इंसानों के मुँह पर ही
उसे बिना कुछ दिए अपशब्दों की पोटली
थमा चल देना/क्या इंसानियत होती है?
मदद के लिए पुकार रहे/कातर ध्वनि को
अनसुनी कर देना/क्या इंसानियत होती है?
आप ही बताओ इंसान क्या ऐसे होते हैं?
हम तो हतप्रभ हैं यह देखकर कि
हम जिसे बाहर खोजना चाह रहे थे
वह तो अपने ही अंदर नहीं पा रहे
अतः दूसरे को कोसना छोड़कर
अब खुद में ही थोड़ी
इंसानियत जगा रहे हैं!

-- सविता मिश्रा

सच्चाई को भुलाए, बस अपनी ओर बुलाए
गहरी निंद्रा में सुलाए, मनचाही राह चलते हैं
आँखों में सपने पलते हैं/डूबते को मिले कोई सहारा
काश मिल जाए कोई किनारा/होकर बिल्कुल बेसहारा
मंजिल की राह तकते हैं/आँखों में सपने पलते हैं
पहाड़ों से ऊंचे उड़ते हैं/पवन से तीव्र बहते हैं
दामिनी से चमकते हैं/तरंगें बन उमड़ते हैं
आँखों में सपने पलते हैं/ खयाली पुलाव पकाते
कभी हवाई किले बनाते/आशाएँ नित-नई दिखाते
कल्पित गेह में रहते हैं
आँखों में सपने पलते हैं
वर्तमान से पलायन करते,
आलस्य की ज्वाला में जलते,
कभी बनते तो कभी बिखरते,
संकल्प नित नूतन करते हैं
आँखों में सपने पलते हैं

-- नीतू शर्मा

ये जो आसूं हैं न, बड़े अजीब होते हैं
जब होता है दर्द तब भी रोते हैं
जब होती है खुशी बहुत, ये तब भी बहते हैं
ये तब भी बरसते हैं जब खेतों में बादल धोखा दे जाते हैं
और बरसात की बूंदों की आड़ में
खुद को छिपा जाते हैं
झूलकर किसी पेड़ की डाली से
कर्ज केवल इन आँसुओं को पलकों में छोड़ जाते हैं
ये सूखे खेतों में भी बरस जाते हैं
पता नहीं ये कैसा दोगलापन निभाते हैं
क्यों ये सिर्फ हमेशा गरीब के ही हिस्से में आते हैं
ये जो आसूँ हैं न, बड़े अजीब होते हैं!

-- रवि किशोर

चेहरे पर कसक की झलक/सिर पर ईंटों का भारी बोझ
कहते हैं लोग हमें मजदूर/ईंट-पत्थर गारा हम ढोते हैं
पर नहीं हैं हम औरों से कम
किसी के आगे नहीं रोते हैं
हमारे सुकर्मों का महत्व
असीम अपार बेहिसाब है
हमारी रचना से ही जगत में
भारत का नाम बेमिसाल है
झोंपड़ी में रहकर भी/महलों सा सुख पाते हैं
मेहनत की खाते हैं/मेहनत की खाएंगे
मेहनत से कभी भी/हम जी न चुराएंगे

-- डॉ निशा नंदिनी गुप्ता

मुक्तक

अरमान जो भी थे मेरे दिल में ठहर गए
सब रंजिशे-गम भी तब जाने किधर गए
रूठा हुआ सहरां भी गुलिस्ताँ बन गया
जब वो मिरे करीब से हँसकर गुजर गए

-- डॉ सोनिया गुप्ता

राजनीति भी अजगर जैसी हो गई है
सरक-सरक जो चलती है/विशालकाय तन वाली
वंश परम्परा चलती यहाँ/राजनीति में
बाप बेटा बेटी दामाद सब/अजगर से बन जाते
नोंच-नोच जनता को खाते/खा-पीकर मस्त पड़ जाते
राजनीति में आने से अपने जैसे अपने
घर के लगते हो जो सदा ही/मार फुंकार जहर उगलते
मौकापरस्त हो नहीं चूकते/अजगर सी ही लम्बी तौदें
नित-प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं
भूल जाते हैं निर्धनों को
हो आरूढ़ कुर्सी पर
अजगर तो रेंग-रेंग कर चलता
ये तो गिरगिट से रंग बदलकर
सरेआम ठग बने घूमते हैं

-- डॉ मधु त्रिवेदी

सावन आया, पर मेघ न आये
आंखें बरसीं किसान की, पर मेघ न बरसे
किसान का पेट भूखा, पड़ा खेत सूखा
मेघ फिर भी न तरसे
आ जाओ मेघ धरा की प्यास बुझाने
प्रकृति का श्रृंगार करने
पुकार रहा है प्यासा कंठ धरा का
जिसमें कभी धार बहती थी
मैं कुंआ, मैं नदी, मैं झरना
हमारे कंठों की प्यास बुझा दो
बरसो मेघ, बरसो!

-- नवीन कुमार जैन

कुंडलियाँ

सावन आया झूम के, महक उठे वन बाग
हर्षित दादुर मोर सब, झींगुर गायें राग
झींगुर गायें राग, चली पुरवा मस्तानी
धरती के परिधान हो गये सारे धानी
कहै 'दिवाकर' हाय दूर हैं जिनके साजन
उनके उर पतझार, आँख से बरसे सावन
आया न प्रियतम मेरा जाइ बसा परदेश
ऐ बादल! कहना मेरे नैनों का संदेश
नयनों का संदेश, बिलखते उर की बातें
शूल सरीखी चुभे मुझे ये काली रातें
उनसे कहना मेघ! अकेली उनकी छाया
आ जाओ भरतार, देश मे सावन आया

-- डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

खुशी शाम नभ की लड़ी, लाल रंग इतराय
शुभ्र हंस प्रिय हंसिनी, कमल कमलिनी छाय
कमल कमलिनी छाय, मिलन पिय राग सुनारी
सुंदरता खिली जाय, किनारी नयन निहारी
'गौतम' करत किलोल, सु-बरखा की हँसी
मंद मंद रस घोल, मचल गई जल की खुशी

-- महातम मिश्र 'गौतम' गोरखपुरी

हिंसा के लिए सभी गौरक्षक दोषी नहीं

डॉ प्रदीप उपाध्याय

हाल ही के दिनों में बीफ यानी गोमांस और गौरक्षा के नाम पर हो रही हिंसा पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा गया है कि गौरक्षा के नाम पर हो रही हिंसा को सहन नहीं किया जाएगा। दूसरी ओर विपक्षी दल और मुस्लिम संगठन हिन्दू राष्ट्रवादियों के खिलाफ मोर्चा खोले बैठे हैं। वैसे यह सही है कि किसी भी तरह की हिंसा को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, किन्तु कुछ लोगों की मूर्खता के कारण गौरक्षा के मूल संकल्प को बदनाम नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ यह भी विचार किया जाना चाहिए कि इस मुद्दे को हवा देने के पीछे कहीं कोई षड्यंत्र तो नहीं है!

गाय हमारी संस्कृति की प्राण है। गाय भी उसी तरह पूज्य है जिस तरह गंगा, गायत्री, गीता, गोवर्धन और गोविन्द पूज्य हैं। कहा भी गया है कि 'मातरः सर्वभूतानां गावः' यानी गाय समस्त प्राणियों की माता है। हम गाय को गौमाता कहते हैं। वेद हो या पुराण, सभी में गौ को पूजनीय बताने के साथ संसार की संरक्षिका भी बताया गया है। ऋग्वेद के ऋषि अग्नि के अन्तःकरण में परमपिता परमेश्वर के शब्द गौमाता के प्रति दृष्टव्य हैं- **माता रूद्राणाम् दुहिता वसुनाम स्वसादित्यानाम मृतस्य नाभिः। प्रनुवोचं चिकितुषे जनायः मा गामनागामदितिम् वधिष्ट।** अर्थात् प्रत्येक चेतना वाले विचारशील मनुष्य को मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध गौ को कभी मत मारो क्योंकि वह रूद्र देवों की माता है, वसुदेवों की कन्या है और आदित्य देवों की बहन तथा धृत रूप अमरत्व का केन्द्र है।

सनातन धर्मग्रन्थों में मान्यता है कि **सर्वे देवाः स्थिता देहेसर्वदेवमयीहि गौः**, यानी गाय की देह में समस्त देवी देवताओं का वास माना गया है। पद्म पुराण में उल्लेख है कि गाय के मुख में चारों वेदों का निवास है। गाय के अंग-प्रत्यंग में देवी-देवताओं को स्थित होना बताया गया है। भविष्य पुराण, स्कंद पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, महाभारत में भी गौ के अंग-प्रत्यंग में देवी-देवताओं की स्थिति को दर्शाया गया है।

तात्पर्य यही है कि सनातन धर्म में गौ यानी गाय को केवल दूध देने वाला पशु न मानकर उसे देवत्व का स्थान दिया गया है। गाय को पवित्र माना गया है तथा उसकी हत्या महापातकों में गिनी जाती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान जो चौदह रत्न प्रकट हुए उनमें से गौ 'कामधेनु' भी एक रत्न है। गाय अहिंसा, करुणा, ममत्व, वात्सल्यादि दिव्यगुणों का प्रतिनिधित्व करती है। माना जाता है कि गाय में तैंतीस कोटि देवताओं का वास है। संभवतः इसीलिए हिन्दु धर्म के अनुसार गाय को किसी भी रूप में सताना घोर पाप माना गया है और यही कारण है कि गौहत्या करना नर्क के द्वार खोलने के समान माना गया है। अथर्ववेद में लिखा है- **धेनु सदानाम रईनाम** अर्थात् गाय समृद्धि का मूल स्रोत है। इन सबका निष्कर्ष यही है कि गाय हिन्दुओं की आस्था की प्रतीक है।

वैज्ञानिक भी मानते हैं कि गाय ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो आक्सीजन ग्रहण करता है और आक्सीजन ही छोड़ता है। उसके मल-मूत्र में औषधीय गुण समाविष्ट हैं। जब गाय इतनी विशिष्ट गुणधारी पशु है तो स्वाभाविक है कि वह अपने नैसर्गिक गुणों और धार्मिक मान्यताओं के कारण हिंदू धर्मावलम्बियों में विशिष्ट स्थान रखती है। विदेशी आततायियों के आने के बाद हो सकता है कि विभिन्न स्थानों में गौवंश के प्रति स्थापित मान्यताओं और अवधारणाओं में कुछ बदलाव आया हो किन्तु यह स्थापित सत्य है कि गौवंश आज भी हिन्दू समाज की आस्था और विश्वास का प्रतीक है और उस पर होने वाले आक्रमण या अत्याचार पर प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

निःसंदेह प्रतिक्रिया हिंसक नहीं होनी चाहिए, किन्तु इसपर बिना किसी पूर्वाग्रह के निष्पक्षता के साथ विचार किया जाना चाहिए। सरकारी तंत्र भी अपना कर्तव्य यदि निष्पक्षता और पूर्ण दक्षता के साथ निभाये, तो हिंसा की संभावना कम हो सकती है। सरकार की अपनी नीतियाँ भी गौवंश के बारे में युक्तिसंगत होनी चाहिए। गलत नीतियों का परिणाम भी हमारे सामने है कि गौरक्षा के नाम पर हिंसा हो रही है, हत्याएं हो रही हैं किन्तु इसके लिए सभी गौरक्षकों को बदनाम करना कहाँ तक उचित है? जहाँ एक ओर यह कहा जाता है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है और इसे धर्म विशेष से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए, वहीं दूसरी ओर गौरक्षा के नाम पर की जाने वाली राजनीति का धर्म कैसे निर्धारित किया जा सकता है। वास्तविक गौरक्षक तो अपना काम बिना प्रचार-प्रसार के कर ही रहे हैं। गौशालाओं, गौसदनों में जाकर देखें कि सच्चाई क्या है, कितने सेवाभाव के साथ गौवंश की सेवा की जा रही है। ऐसे में सभी गौरक्षकों को बदनाम करना कहाँ तक उचित है? उनकी भावनाओं, कर्तव्यपरायणता और आस्था को ठेस पहुँचाना कहाँ तक न्यायसंगत है?

इन सबके बीच एक नकारात्मक पक्ष यह भी है कि गौवंश की वर्तमान स्थिति के लिए हिन्दू धर्मावलम्बी भी कम दोषी नहीं हैं। यदि गौ माता पूजनीय है तो क्यों उसे सड़कों पर दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है? उसके चारे-पानी की व्यवस्था न कर पालीथीन और गंदगी खाने पर कौन मजबूर कर रहा है? दुधारू पशु को तो हम रख लेते हैं, पर अनुपयोगी, कमजोर, वृद्ध, लाचार पशु को कसाई के हवाले कर देते हैं। सबसे पहले तो हमें अपना घर सुधारना होगा, दूसरों को दोष देने से काम नहीं चलेगा। गौवंश के सही लालन-पालन और पोषण के लिए गौरक्षकों द्वारा एक आंदोलन की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए जिसमें हिन्दू समाज को जागृत किये जाने का प्रावधान हो। यदि हिन्दू समाज जागृत हो जाता है और गाय के प्रति अपनी आस्था के अनुरूप व्यवहार भी करने लगता है, तो कोई कारण नहीं कि गौरक्षा के लिए किसी को हिंसा का सहारा लेना पड़े। सर्वाधिक प्राथमिकता का कार्य तो गौवंश के संरक्षण, संवर्धन और पोषण का है। हमारी आस्था बनावटी या दिखावटी नहीं है, यह हमें साबित भी करना होगा, वरना गौवंश भी राजनीति का मोहरा बनकर रह जाएगा और गौरक्षा के नाम पर हिंसा का सहारा लेकर लोगों में फूट डाली जाती रहेगी तथा अपने हित साधने के कुत्सित प्रयास होते रहेंगे। ■

रक्षाबंधन

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

वैसे तो हमारे देश में हर दिन एक पर्व ही होता है, पर कुछ विशेष अवसर ऐसे भी हैं जो एक महापर्व के नाम से जाने जाते हैं। हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति दुनियां की सबसे श्रेष्ठ व प्रतिष्ठित, पावन-पवित्र और विश्वसनीय है। भारतीय परंपरा में विश्वास, प्रेम, पवित्रता व धर्म का प्रतीक रक्षाबंधन एक भाई और एक बहिन के प्यार का अटूट बंधन है।

रक्षाबंधन वह रक्षासूत्र है, जिसे एक बहिन अपने भाई की कलाई पर इस आशा और विश्वास के साथ बाँधती है कि वह हमेशा उसकी रक्षा करेगा व संकट की हर घड़ी में तत्काल मदद को आयेगा। इतिहास गवाह है कि भाई ने भी अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है।

पुराणों में भी रक्षाबंधन का उल्लेख है। एक बार भगवान कृष्ण के हाथ में चोट लग गई तो वह उपस्थित उनकी बहिन द्रौपदी ने उसी क्षण अपनी कंचुकी का किनारा फाड़कर भगवान कृष्ण की कलाई पर बांध दिया। इसी रक्षासूत्र की लाज भगवान कृष्ण ने आजीवन द्रौपदी की इज्जत व प्राण रक्षा करके बचाई।

अगर मुगल शासन के समय की बात की जाये तो यह भी प्रसिद्ध कहानी है-जब मुगल सम्राट हुमायूं चित्तौड़ पर आक्रमण करने आगे बढा, तो राणा सांगा की बिधवा रानी कर्मवती ने हुमायूं को राखी भेजकर अपनी रक्षा का उससे वचन ले लिया। हुमायूं ने भी एक भाई का धर्म निभाते हुए वचन दिया और युद्ध का ख्याल हमेशा-हमेशा के लिए अपने हृदय से निकाल दिया।

रक्षाबंधन ऐसे ही न जाने कितने विश्वास के धागों से मिलकर बना है। यह पर्व आज भी पवित्र भाई-बहिन के प्यार का प्रतीक बना हुआ है और जब तक यह स्रष्टि है, यह अनवरत बना रहेगा। ■

ये गॉडफादर और उनके लोग

विनय कुमार तिवारी

आज उसे अपने गॉडफादर से मिलना था। असल में, यह उसके गॉडफादर ही थे, जिनके कारण वह मनचाही जगह पर तैनाती पा जाता था। इस बार भी उसके साथ ऐसा ही हुआ था। उसे एक बार फिर प्राइम स्थान पर तैनाती मिली थी! हाँ प्राइम स्थान उसके लिए और कुछ नहीं बस उसकी मनचाही पोस्टिंग हुआ करती है। बस ऐसे ही मनचाहे स्थान पर तैनाती पाकर वह एक प्रकार के वीआईपीपन की सुखानुभूति में डूब जाता था और कभी-कभी लोगों पर अपनी पहुँच का रौब भी झाड़ दिया करता। हालांकि लोग उसे बहुत पहुँच वाला भी मान लिया करते थे। फिर तो उसका खूब रंग जमता था! इसी का शुक्रिया अदा करने उसे अपने गॉडफादर से मिलने जाना था।

उसे याद आया, कभी-कभी उसकी टकराहट अपने जैसे लोगों से हो जाया करती है, जिनके भी अपने-अपने गॉडफादर होते हैं। आज के युग में तो सभी के गॉडफादर होते हैं, क्योंकि सभी जागरूक हो चुके हैं। लेकिन जिसका गॉडफादर भारी पड़ता है, वही मनचाही जगह पाता है। अब ऐसे गॉडफादर वालों की भीड़ गॉडफादरों के लिए भी एक समस्या टाइप की बन चुकी है। खैर!

हाँ तो वह अपने गॉडफादर के ठौर पर पहुँच गया था। उसने देखा, उसके जैसे अन्य लोग भी गॉडफादर से मिलने आए थे। हो सकता है सभी उसके जैसा ही प्राइम स्थान पाने की अपेक्षा लेकर आए हों। खैर, जो भी हो, उसे गॉडफादर से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ।

थोड़ी बहुत हाल-चाल लेने-देने के बाद गॉडफादर ने उससे पूछा, 'क्यों भई, लोगों के बीच हमारे काम का मूल्यांकन कैसा है?'

गॉडफादर की इस बात पर कुछ पल के लिए वह अचकचाया जरूर, लेकिन अगले ही पल उसके मुँह से निकल गया, 'लोग अच्छा नहीं कह रहे हैं। लोगों का सोचना है कि कुछ भी तो नहीं बदला, सब उसी ढर्रे पर चल रहा है! मेरी सलाह है, आप कुछ नया सोचिए, नए ढंग का करिए, तभी शायद लोगों की अपेक्षाओं पर खरे उतरें!' पता नहीं यह सब उसके मुँह से क्यों और कैसे निकल गया था, जो नहीं निकलना चाहिए था! असल में ये गॉडफादर टाइप के लोग सही बात सुनने के आदी भी तो नहीं होते। लेकिन, बात मुँह से निकल चुकी थी, तो इसका असर होना ही था।

गॉडफादर ने अपने पूरे वजूद के साथ उसे घूरकर देखा था। शायद उसे अपना पालित होने का अहसास कराते हुए वे बोले थे, 'वाह! सही बात बताई! अब हमें गॉडफादर बनना छोड़ ही देना होगा, तभी हम बदलाव का संदेश दे पाएँगे।' इतना कहते हुए उसके उन गॉडफादर ने उसे जाने के लिए भी कह दिया था।

अब तो, काटो तो खून नहीं टाइप से वह पशोपेश में था कि क्या गॉडफादर होना ही समस्या की जड़ है या फिर उसके जैसे लोग? लेकिन इसपर उसे सोचने की फुर्सत नहीं थी, वह फिर से उन्हें मनाने के लिए जुट गया था, क्योंकि वह बखूबी जानता था 'प्रयासे हि कार्याणि सिद्धन्ति।' आखिर उसे अपना मनचाहा स्थान भी तो लेना था! और नियम भी तो यही गॉडफादर जैसे लोग बनाते हैं, बल्कि कहिए कि नियम ही इसलिए बनाए जाते हैं कि गॉडफादर का गॉडफादरत्व कायम रहे। और ये नियम को मनमाफिक ढाल भी लेते हैं! ■

चिन्दी चिन्दी हिन्दी

अंशु प्रधान

चिन्दी चिन्दी दिन गुजरा चिन्दी चिन्दी रात गयी
चिन्दी चिन्दी हिंदी में चिन्दी चिन्दी बात गयी

हमारे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिंदी का सिर्फ नाश होता है, मगर बिहार से बंगाल आते-आते सत्यानाश हो जाता है। बिहार और बंगाल का बॉर्डर छूते-छूते कर्ता और कर्म दोनों को पता नहीं रहता कि कहाँ से कहाँ आ जाएं। वैसे कर्ता के सामने कर्म आता ही आता है, ये कोई बिहार से सीखे।

हमारे बिहार और बंगाल में क्रियाकर्म इतना प्रभावी है कि कर्ता का पता ही नहीं चलता और कर्म मीडिया में छा जाता है। कर्ता गायब रहता है या कहूँ कि अंतर्ध्यान की अवस्था में रहता है। है भी! और नहीं भी, बिलकुल वैसे ही जैसे कोई भी मंत्री पहले करोड़पति फिर अरबपति हो जाता है, यहां करता गायब है लेकिन कर्म हो रहा है। ये मंत्री सिर्फ कर्मों से ही लोगों को नहीं लुभाते, बल्कि अपनी हिंदी से भी गुदगुदाते रहते हैं। बुद्धिमत्ता बेवकूफी से पीछे है और रहेगी। इस देश में जो रोमांच बेवकूफी में है वो विद्वता में नहीं, विद्वान अपनी आन, मान-मर्यादा के चक्कर में ही पड़ा रहता है, इतने में बेवकूफ आगे बढ़ लेता है। वो इन मान मर्यादाओं के चक्कर में नहीं पड़ता, वो सिर्फ टारगेट पर नजर रखता है।

एक दिन पता चला कि मंत्री जी की भैंस खो गयी है। बड़ा उदास मुँह बनाये हुए चले जा रहे थे। हमने पूछ लिया, 'क्या हुआ?' वो बोले, 'अरे हमारी भैंस खो गयी हैे। दो घंटे में नहीं मिली, तो सेना बुलानी पड़ेगी।' हमने कहा, 'मंत्री जी आपकी भैंस है या पाकिस्तान की सीमा?' मंत्री जी बोले,' अरे हमारी भैंस है किसी ऐरे गैरे की नहीं! एक मंत्री की भैंस भी मंत्री के बराबर होती है।' हमें लगा मंत्री भैंस के बराबर, तभी शायद मंत्री और भैंस दोनों को भ्रम होता रहता है खाने पीने के मामले में।

तभी देखते हैं मंत्री जी का संतरी लिखे हुए भाषण की प्रति लेकर दौड़ा चला आ रहा है। हमने पूछ लिया, 'भैया मैराथन में हो या मंत्री की दौड़ में?' संतरी बोला, 'मंत्री की दौड़ में हूँ। इनका काम खत्म करके अपना शुरू। पहले मंत्री जी को भाषण दे आऊं!' हम फिर हैरानी से पूछ बैठे, 'मंत्री जी को भाषण वो भी तुम दोगे!'

'अरे नहीं दादा जुबान फिसल गई थी जैसे मंत्रियों की कलम फिसल जाती है। बड़ी मशहूर लेखिका हैं, उन्हीं से लिखवाकर लाये हैं।' 'अच्छा वो ही जिन्हें अभी अभी सम्मानित किया गया था, वो ही न?' हमने पूछा। 'जी जी वो ही!'

'मगर उनकी हिंदी में तो बिंदी ही बिंदी हैं हुजूर, कभी नुक्ता, कभी अनुस्वार, कभी...' 'अरे जाने दीजिए हुजूर, बस वो सम्मानित हैं, इतना याद रखिए।'

'अच्छा, जरा देखें क्या लिखा है? अरे सवस्थ नहीं भाई स्वस्थ! जरा संभल के!' संतरी कहाँ सुनने वाला था। मंत्री जी ने बड़ी दम से अपनी बात रखी 'स्वस्थ भारत स्वच्छ भारत' मगर लिखते हुए उनकी कलम की पोल खुल गयी। अब मंत्री जी संतरी से बड़ा नाराज, बोले, 'व्हाट्सअप नहीं कर सकता था भोंदू, मैं क्या युवराज से कम हूँ?' संतरी अवाक्, बोला, 'नहीं महाराज! कम कहाँ, आप तो एक कदम आगे हैं।' ■

लघुकथा

साया

पिछले कितने ही समय से तान्या की उदासी विपिन से देखी ही नहीं जा रही थी। पिता को खोने के सदमे के कारण वह अपने आपको भी दर्द में डुबा चुकी थी। कई बार विपिन ने समझाया- 'तान्या! अब तुम खुद समझदार हो। जीवन मरण तो चक्र है। तुम ऐसे ही खोई खोई सी रहोगी तो बच्चों की मानसिक स्थिति भी खराब होगी, तुम्हारा स्वास्थ्य भी।'

'मैं क्या करूं? मुझे ये गम खाये जा रहा है।'

विपिन ने एक कोशिश की कि तान्या को इस गम से उभारने की।

आंगन में अशोक का पौधा लहलहा रहा था। तान्या को एक बारी यही लगा पिता का साया उसके सर पर फिर से आ गया हो।

'ओह विपिन तुमने मेरी मन मांगी मुराद पूरी कर दी।'

तान्या के मन आंगन में पिता के हमनाम पौधे ने खुशियों की खुशबू बिखेर दी।

-- अल्पना हर्ष

भूख

'बाबू जी बच्चा सुबह से भूखा है। दूध के लिए दस रुपया दे दो।' एक दुबले पतले बच्चे को गोद मे लिए उस मैली कुचौली औरत ने कहा।

'नहीं मैं रुपया तो नहीं दूँगा। तुम चाहो तो बच्चे को खिलाने के लिए बिस्कुट दिलवा सकता हूँ।' व्यक्ति ने अपनी सूझबूझ दिखाते हुए कहा।

'ठीक है आप खाने के लिए ही कुछ दिलवा दो।' कहकर वह व्यक्ति के पीछे-पीछे हो ली।

दुकान पर पहुँचकर व्यक्ति ने पांच रुपये का एक बिस्कुट का पैकेट खरीदा और बच्चे की तरफ बढ़ाया। बच्चे के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। फिर न जाने क्या सोचकर व्यक्ति ने बिस्कुट का पैकेट खोलकर बच्चे की तरफ बढ़ाया। बच्चा खिलखिला उठा। उसने बिस्कुट का पैकेट लपक लिया और झट से एक बिस्कुट निकालकर खाने लगा। अब दुकानदार के चेहरे पर भी मुस्कान थी। औरत का चेहरा निष्प्रभाव था। वह ढीले कदमों से आगे बढ़ गयी।

दुकानदार ने व्यक्ति से कहा, 'भाई साहब! आपने बहुत अच्छा किया, जो बिस्कुट का पैकेट खोलकर दिया, नहीं तो वह चार रुपए में वापस मुझे ही दे जाती।'

व्यक्ति चिंतन में डूब गया 'पेट की भूख बड़ी है या पैसे की भूख?'

-- विजय 'विभोर'

कुलदीपक

आज गीता एक बार फिर गर्भावस्था की असहनीय पीडा से तड़प रही थी कराह रही थी। वहीं उसके दर्द को समझने से परे बाहर कई अटकलें लगाई जा रही थी। सभी के मन में बस एक ही आस बंधी थी 'कुलदीपक' की।

अम्मा बर्तन धोकर धोती के पल्लू से हाथ पोंछती हुई, तैश में बोली, 'अरे... अबके तुम देखना बहुरिया के लल्ला ही होगा।' बूढ़ी दादी भला कहाँ पीछे रहने वाली थी, बिदकती हुई बोली, 'हाँ अउर का! काहे नाहीं हम इतनी पूजा जो करवाये हैं, कितना तो खर्चा ही किये हैं, व्यर्थ ना जावेगी। भरोसा है हमका प्रभु पर, देखना अबके तो लल्ला ही होगा।'

बगल में खाट पर बूढ़े बाबा चुपचाप पसरे हैं। वह अपना-सा मुँह लिये कभी बिटवा को ताकते तो कभी बूढ़ी को ताड़ते। जैसे बूढ़ी की बात पर हामीं भर रहे हों। बढ़की बिटिया रानी खाट पर चुपचाप पसरी है। एक तरफ माँ की असहनीय पीडा से भरी चीख जिसका अहसास वहाँ पर केवल उसे ही है। वह सबकी बातों पर कान लगाए बैठी है। कभी दादी का मुँह ताकती, कभी बूढ़ी अम्मा का, तो कभी बाबा का। उसकी समझ शायद उस जैसी छोटी है अभी, इन दकियानूसी ख्यालातों को समझने के लिए।

बिटवा राघव कई दुविधाओं से घिरा हुआ है। दादी को पोते की ललक, अम्मा को लल्ला की आस। अंतर्मन के झंझावतों से जूझता हुआ एक आस लिये दरवाजे पर कान लगभग द्वार से सटाते हुए नवजन्मे शिशु की आवाज समझने का प्रयत्न करता है। लल्ला होगा या लल्ली? कोई फर्क नहीं जान पडता।

तभी बूढ़ी दाई, जो पहले से ही यह जानती थी कि अबके भी बेटी ही है, कमरे के द्वार खोलकर लगभग उसी निराशाजनक भाव में परदे की ओट में खडी धीरे से बुदबुदाई, 'लल्ली हुई है अबके भी।'

बिटवा सन्न जैसे साँप सूंघ गया हो। अपना-सा मुँह लिये द्वार से हताश लौट आता है। चेहरे पर उदासीन भाव, ढुलकते शरीर, लड़खड़ाते कदम ऐसे पड़ रहे थे, मानो बिटिया जन्म के असहनीय आघात को सहने में हैं अक्षम। वह सर पकड़कर जमीन पर खटिया के पास ही पसर गया, जहाँ अटकलों को कुछ तो विराम दे ही गई थी, बिटवा की चुप्पी।

बूढ़ी अम्मा प्रश्नचित्त नजरों से बिटवा के चेहरे के हाव-भाव देख हाथ झंझोड़ती हुई बोली, 'कै हुआ रे..?' पर वह नीची नजरें किये हुए चुप रहा। उसका मौन सब कुछ बता गया था।

-- लक्ष्मी थपलियाल

माफ करना

जैसे ही कोई बीमार होता, वैसे ही वह मुंहफट कहता, 'अरे भाई! आपने नौकरी में हाय या ब्याज का पैसा आ गया होगा इसलिए यह बीमारी लग गई.' जिसे सुनकर सामने वाला खिसियाकर रह जाता था.

एक दिन अचानक उस मुंहफट की बीवी फिसल गई. उसका हाथ टूट गया. लोग उस मुंहफट के घर दुख जताने आने लगे.

'क्या भाई ! आप के पास कौनसा पैसा आ गया जो इस रूप में निकल रहा है?' लोग उस से कहना चाहते थे मगर, लिहाज में चुपचाप मुस्करा कर चले जाते. वह उनकी आँखों की शरारत में झांकते प्रश्न को

पढ़कर मुंह नीचे कर के चुपचाप हाथ जोड़ लेता, जैसे कह रहा हो कि 'भाई माफ करना।'

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

रोजगार

शहर के बस अड्डे के समीप ही झुग्गियों में से एक झुग्गी में लाली और उसके कुछ साथी तीन पत्ती की बाजी खेल रहे थे। कुल चार मित्र खेल रहे थे और बाकी कई उन्हें चारों तरफ से घेरे उनकी हर चाल को देख और समझ रहे थे।

लालमन उर्फ लाली स्नातक होकर भी बेरोजगार था, सो झुग्गियों में आकर अपने मित्रों संग तीन पत्ती नामक ताश का खेल खेलकर समय भी व्यतीत कर लेता और चूंकि वह काफी होशियार भी था सो थोड़ी बहुत कमाई भी कर लेता। लेकिन आज जैसे उसका भाग्य उससे रूठ गया हो। उसे एक बार भी ढंग की पत्ती नहीं मिली और वह एक-एक करके सभी बाजी हारने लगा। धीरे-धीरे उसके पास के सभी पैसे खत्म हो गए।

पत्ते बंट चुके थे। सभी खिलाड़ियों ने अपना अपना दांव लगा दिया था, लेकिन लाली के पास दांव पर लगाने के लिए पैसे नहीं थे। बाद में देने की बात कहकर लाली ने जैसे ही पत्ते की तरफ हाथ बढ़ाना चाहा सोहन गुर्रा उठा 'लाली! रोकड़े हैं तो पत्तों को हाथ लगा वर्ना फूट ले यहां से कंगले! जुए में उधारी नहीं चलती। क्या तुझे इतना भी नहीं पता?'

लाली भी तैश में आ चुका था 'तुम लोग दस मिनट रुको! मैं अभी यूं गया और यूं आया।'

अगले कुछ ही पलों में वह काम पर जाने के लिए तैयार हो गया था। साड़ी और ब्लाउज पहनकर अब वह वाकई 'लाली' बन गया था। बाहर जाते उसके कदमों की आहट के साथ उसके साथियों को उसकी जोरदार तालियों की आवाज भी साफ सुनाई पड़ रही थी।

लगभग पंद्रह मिनट बाद ही लाली वापस लौट आया और ताश की बाजी एक बार फिर शुरू हो गयी। अब लाली के पास पर्याप्त पैसे जो आ गए थे।

-- राजकुमार कांदु

सुरक्षा

उसे बाइक चलने का तो शौक था, पर हेलमेट लगाकर जाना बिलकुल पसंद नहीं था. आज भी वह बिना हेलमेट लगाये बाइक लेकर घर से निकला. हालाँकि पत्नी ने टोका भी कि अपनी सुरक्षा के लिए हेलमेट लगाकर जाओ, पर वह अनसुनी करके निकल गया.

लाल बत्ती वाले चौराहे पर उसको रुकना पड़ा. तभी एक बच्ची नीबू-मिर्ची बेचने उसके पास आई.

उसने कुछ सोचकर नीबू-मिर्ची खरीद ली और अपनी बाइक पर लटका ली. अब वह अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त था.

-- विजय कुमार सिंघल

अब उ.प्र. में होगा धार्मिक पर्यटन का विकास

मृत्युंजय दीक्षित

उत्तर प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद कई क्षेत्रों में बदलाव के आसार दिखायी पड़ने लगे हैं जिसमें पर्यटन भी एक है। पिछली सरकारों ने पर्यटन के क्षेत्र को छुआ तक नहीं था। यदि पिछली सरकारों ने पर्यटन के नाम पर कुछ किया है तो वह है मुस्लिम तुष्टीकरण। विगत ७० वर्षों तक केंद्र सरकार व २७ सालों तक यूपी में राज करने वाली सरकारों को पर्यटन के नाम पर केवल ताजमहल व पुराने लखनऊ की नवाबी संस्कृति के अलावा कुछ और नहीं पता था। सेकुलर दलों ने पर्यटन को मुस्लिम तुष्टीकरण का सबसे बड़ा हथियार बना लिया था। लेकिन अब प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद पर्यटन के क्षेत्र में व्यापक महापरिवर्तन होता दिखायी पड़ रहा है।

प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में विकास व रोजगार की असीम व असीमित संभावनायें भरी पड़ी हैं लेकिन पिछली सरकारों ने उन सभी से मुंह मोड़ लिया था। सरकारें योजनायें बनाने में तथा अफसर घोटाले करने में मस्त रहे। जिसका नतीजा यह निकला कि पर्यटन के क्षेत्र में प्रदेश बुरी तरह से पिछड़ गया है, उत्तर प्रदेश की वास्तविक पहचान खो गयी है। पिछली सरकारों ने हिंदू समाज की आस्था के केंद्रों अयोध्या, मथुरा व काशी सहित अन्य प्रतिष्ठित धार्मिक महत्व के स्थलों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया था, लेकिन अब हालात तेजी से बदलने की उम्मीद है।

प्रदेश में पर्यटन के विकास व रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। प्रदेश सरकार ने अब अयोध्या, मथुरा व काशी का व्यापक दृष्टिकोण से विकास करने का लक्ष्य साधा है। यही कारण है कि अयोध्या व वृंदावन को अब नगर निगम का दर्जा दे दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या दौरे के दौरान अयोध्या के व्यापक व विस्तृत पर्यटन की दृष्टि से विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की है। अयोध्या के समग्र विकास के लिए २५० करोड़ रु. का प्रावधान किया गया है। उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान अयोध्या में होने वाली पंचकोसी, चौदह कोसी यात्राओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन यात्राओं के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। अयोध्या में सरयू नदी के किनारे वाराणसी की गंगा आरती की तर्ज पर सरयू आरती का श्रीगणेश करने की घोषणा की। अयोध्या को रेल, सड़क, वायु यातायात के माध्यम से पूरे देश से जोड़ने की योजना बनी है। अभी तक मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण अयोध्या का पूरे देश से व्यापक संपर्क ही नहीं था। आम जनमानस चाहकर भी अयोध्या नहीं आ सकता था। यदि आना भी चाहे तो उनके लिये अच्छे होटलों व रेस्त्रां तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का भी अभाव था। अयोध्या की सड़कों की दुर्दशा सभी ने देखी, लेकिन किसी ने ताजमहल व इमामबाड़े के आगे किसी पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब प्रदेश में धार्मिक पर्यटन का व्यापक विस्तार होने का मार्ग खुल रहा है।

विगत दिनों पर्यटन विभाग की ओर से ‘उ.प्र. में पर्यटन की संभावना’ विषय पर आयोजित गोष्ठी में बोलते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए व्यापक कार्ययोजना तैयार की गयी है। पर्यटक स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा। पर्यटकों को सरकार अच्छी सुविधाएं एवं सुरक्षा देगी। उनका कहना है कि अयोध्या, चित्रकूट, काशी, मथुरा, प्रयागराज और नैमिषारण्य जैसे तीर्थस्थलों का इतिहास तो पांच से ८ हजार साल पुराना है। इतनी सम्पन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक विरासत को दुनिया को बताना पड़ेगा।

मुख्यमंत्री का कहना है कि हमारी आस्था और तीर्थ सांस्कृतिक एकता के आधार हैं। भगवान राम ने उत्तर-दक्षिण को जोड़ा तो कृष्ण ने पूरब-पश्चिम को। उक्त संगोष्ठी में उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि प्रदेश में भगवान राम, बुद्ध और बृज सर्किट है। इनको यदि बढ़ावा दिया जाये, तो इन शहरों के पर्यटन को लाभ मिलेगा। देश ही नहीं विश्व भर में बुद्ध के अनुयायियों के लिए महत्वपूर्ण तीर्थ कपिलवस्तु, श्रावस्ती, सारनाथ, कौशाम्बी व कुशीनगर में बुद्ध को मानने वाले बड़ी संख्या में आते हैं। ब्रज की होली विश्व प्रसिद्ध है। इसी तरह राम सर्किट यानी की अयोध्या से चित्रकूट तक भी पर्यटकों का आगमन काफी अधिक होता है।

संगोष्ठी में कहा गया कि प्रदेश में मेलों, त्यौहारों, मशहूर व्यंजनों, हस्तशिल्प आदि की इंटरनेट पर व्यापक ब्रांडिंग करने से इन उद्योगों को भी व्यापक बढ़ावा मिलेगा। प्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता हवाई यातायात, रेल व सड़क परिवहन सेवाओं के विस्तार की है। पर्यटन के विकास में सबसे बड़ी बाधा यहां की बिगड़ी हुई कानून व्यवस्था है। प्रदेश में विदेशी पर्यटकों के साथ अभद्र व्यवहार व शर्मनाक घटनाओं के समाचार सुर्खियों में बने रहते हैं। विदेशी महिलाओं के साथ छेड़छाड़, बलात्कार व उनके साथ लूटपाट आदि की घटनाएं घटित हो रही हैं। प्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि आम जनमानस व विदेशी पर्यटकों के मन में सुरक्षा की भावना को जागृत किया जाये। इस संगोष्ठी में मुख्यमंत्री ने सबसे बड़ी घोषणा यह की कि अगले अर्धकुम्भ से पहले गंगा नदी में हुगली से प्रयागराज तक स्टीमर और जहाज चलाने की व्यवस्था करेगी। सभी प्रमुख तीर्थस्थलों को हवाई सेवा से जोड़ने तथा द्वितीय विश्व युद्ध के समय से बेकार पड़ी १० हवाई पट्टियों को दोबारा संचालन की स्थिति में लाया जायेगा।

प्रदेश सरकार पर्यटन को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए संघ विचारक पं. दीनदयाल उपाध्याय से जुड़े स्थलों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने का निर्णय लिया है। इतना ही नहीं प्रदेश के पर्यटन विभाग ने संत कबीर दास की मगहर में बनी उनकी समाधि और मजार दोनों को संवारने का बीड़ा उठाया है। प्रदेश के पर्यटन विभाग ने मगहर समेत प्रदेश के ६० पर्यटन स्थलों को स्वदेश दर्शन योजना के तहत चमकाने का निर्णय लिया है। जिन स्थलों को फिर से संवारने का निर्णय लिया गया है उसमें बुलंदशहर का मां अवन्तिका मंदिर, अलीगढ़ का अचलताल व सौरों मंदिर, कौशाम्बी का मां शीतला मंदिर, प्रतापगढ़ का घुइसरनाथ धाम, उन्नाव का गंगाघाट, सरौसी, कैराना, मिर्जापुर का सिद्धबाबा की दरी व हनुमंत धाम, आजमगढ़ का परशुराम मंदिर, दुर्वासा आश्रम, चंद्रमुनी आश्रम, दत्तात्रेय का आश्रम, मां शीतला देवी मंदिर, अवन्तिका पुरी मंदिर, जय मां पल्मेश्वरी मंदिर, बाराबंकी जिले में बाबा टीकाराम तपोस्थली, सिद्धेश्वर, लोधेश्वर महादेव मंदिर, सुमली नदी गंगापुर घाट, पारिजात वृक्ष, भगवान पार्श्वनाथ व कुंतेश्वर महादेव मंदिर सहित लगभग पूरे अवध के हर जिले में व्यापक स्तर पर पर्यटक स्थल हैं जिनको विकसित किया जायेगा। अभी मुख्यमंत्री ने कुकरैल को भी विकसित करने का ऐलान किया है।

पर्यटन महानिदेशक अवनीश अवस्थी का कहना है कि इन पर्यटक स्थलों में कई तरह के काम कराये जायेंगे। ऐतिहासिक स्थलों में लाइट एंड साउंड शो, हाइमास्ट लाईट, इंटरप्रिटेशन सेंटर समेत पर्यटक सुविधाओं को बढ़ाया जायेगा। वहीं धार्मिक स्थलों में घाट, बोटिंग, सोलर लाइट आदि। इन सभी जगहों पर ३६ महीनों में काम पूरा होना है। इतना ही नहीं अब प्रदेश का पर्यटन विभाग मुख्यमंत्री के विचारों को धरातल पर उतारने के लिये ताजमहल देखने आने वाले विदेशी पर्यटकों को रामायण व गीता उन्हीं की भाषा में वितरण करने की योजना बना रहा है। यह योजना ऐसी है कि जब पर्यटकगण अपना टिकट खरीदें, तभी उन्हें साथ में यह भी दिया जाये, जिससे उनके मन में अन्य धार्मिक स्थलों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हो सके। ■

(पृष्ठ १४ का शेष)

चीन की पैंतरेबाजी

नहीं जाने देता। भारत तिब्बत पर चीन के स्वामित्व को दी गई मान्यता वापस लेकर चीन को जवाब दे सकता है। हम यह कह सकते हैं कि हमारी कोई सीमा चीन से नहीं मिलती। किसी तरह के सीमा-विवाद के लिए वह तिब्बत की निर्वासित सरकार से बात करने की पहल करे। तिब्बत के मामले को संयुक्त राष्ट्रसंघ में उठाकर भी चीन की बांह मरोड़ी जा सकती है। अगर तिब्बत पर चीन के कब्जे को भारत ने मान्यता नहीं दी होती, तो अमेरिका ने भी तिब्बत का समर्थन किया होता। उस समय चीन इतना मजबूत भी नहीं था। अमेरिका और भारत के संयुक्त प्रयास से तिब्बत ने अबतक आजादी भी प्राप्त कर ली होती, जो आज महज एक सपना है। लमहों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई। ■

(तीसरी और अंतिम किस्त)

सात दिन की माँ

नीतू सिंह

भागमती अब तक जरल हरेठा होकर रह गई थी। मगर उस जलते हुए हरेठा पर शीतल जल पड़ गया जब दाई वाली खबर की पुष्टि हुई। उसने तुरंत दोनों को लड़का होने का आशीर्वाद दिया।

शांता के मन में आया कि पूछे, 'भला वह कैसे लड़का ही पैदा कर सकती है।' आम उगाने से आम होता है और केला उगाने से केला। मगर लड़का कैसे उगता है ये तो भागमती ही बता सकती है कि जाने क्या खाकर चार-चार लड़का ही पैदा की है।

खैर इस तरह का सवाल कर शांता अपने जीवन में पहली बार आई इन खुशियों को आग नहीं लगा सकती। आखिर उसकी सास ने पहली बार इतने मान से उसके सर पर हाथ धरा और विशनपुरावाली तो अक्सर गले से लगाती है, आज भी लगा लिया।

शांता इतनी खुश है, इतनी खुश है कि चिड़िया सी फुदकती हुई घर के सारे काम करती जा रही है। विशनपुरावाली को भी नहीं करने दे रही। भागमती भी सोच रही है कि चलो कभी तो घर के सारे काम वह भी कर लिया करे।

विशनपुरावाली ने हुज्जत की तो भी नहीं मानी। लेकिन दो बच्चों की माँ ठहरी। उसे चिंता सताने लगी एक होनेवाली माँ की। जब शांता नहीं मानी तो उसने हिम्मत जुटाकर पहली बार मुँह खोला और भागमती से कहा कि उसका इतना ज्यादा काम करना ठीक नहीं है।

भागमती की भौंहें तन गई कि इस गाय-बाछी के मुँह में भी जबान आ गई। ये मुझे बताएगी कि क्या ठीक है और क्या नहीं। मुझे नहीं दिख रहा क्या कुछ? तुनकर घुड़क दिया- 'तू ना करत रहलू?'

विशनपुरावाली को आगे बोलते नहीं बना कि हां मैं तो करती थी, मगर मुझे तो आदत भी थी। उसे कहाँ आदत है इतना काम करने की। पर बोल न सकी।

आखिर वही हुआ जिसका डर था। शुक्रवार की रात थी। खून तो शांता को बहुत पहले से बह रहा था मगर उस रात पेट में ऐंठन और दर्द के साथ ज्यादा ही बह गया तो उसे बताना ही पड़ा। दाई ने आने से मना कर दिया और फिर अस्पताल का ही सहारा लेना पड़ा।

अगले दिन फिर रज्जन और शांता उसी बेंच पर बैठे रेडियोलोजिस्ट के बुलाने का इंतजार कर रहे थे और याद कर रहे थे कि पिछले हफ्ते कितने खुशी-खुशी वे यहाँ से लैटे थे। आज फिर ऐसा ही हो। तरह तरह कि मन्नतों से दोनों का सिर भर गया।

रेडियोलोजिस्ट ने अपना काम खत्म किया तो वह बिस्तर से उठकर कंप्यूटर की स्क्रीन देखने लगी। सात दिन पहले ऐसे ही स्क्रीन पर एक काला-काला धब्बा सा था, जो अब दिखाई नहीं पड़ रहा था। बिना उस धब्बे वाले सपाट स्क्रीन को देख शांता का दिल धक से हो गया।

फिर भी अपने आप को सँभालकर उसने अपने अस्त-व्यस्त कपड़े ठीक किए और रेडियोलोजिस्ट के चेहरे की ओर देखा। रेडियोलोजिस्ट उससे आँखें चुरा रहा था।

उसने उसे आँखें चुराने का मौका देते हुए स्क्रीन की ओर देखकर कहा- 'डॉक्टर ई कंप्यूटरवा में का देखलीं आप?'

रेडियोलोजिस्ट इस सवाल से बचने की कोशिश कर रहा था और चाहता था कि जो बताना है डॉक्टर ही इन्हें बताए। पर शांता को अपनी शंकाओं का समाधान जल्द से जल्द चाहिए था।

रेडियोलोजिस्ट ने फिर नाक-नुकुर की तो शांता ने अपनी कांपती हुई उंगली को स्क्रीन की ओर दिखाकर और गोल-गोल घुमाकर अपनी शंका जता ही दी।

'पेछली बार एमें एक ठो करिया-करिया धब्बा जईसन रहे।'

इस भोलेपन से माँगे गए उत्तर से रेडियोलोजिस्ट के गले में कुछ अटक सा गया। उसकी हिम्मत नहीं हुई शांता को सीधे मुँह कुछ कहने की।

'आपके साथ कोई और भी है?'

रज्जन को भी सोनोग्राफी वाले कमरे में बुला लिया गया। उसने रज्जन को तन्मयता से बताया कि फिलहाल शांता के पेट में कुछ नहीं है। अगर कुछ रहा होगा तो वह अब गिर चुका है और साफ हो चुका है। उन्हें चाहिए कि आगे की कार्रवाई के लिए डॉक्टर से जाकर मिलें।

रेडियोलोजिस्ट चला गया। दोनों कमरे से बाहर आकर एकदम स्तब्ध से बेंच पर बैठे रहे और रिपोर्ट आने का इंतजार करने लगे, ताकि वे रिपोर्ट लेकर डॉक्टर से मिल सकें और डॉक्टर बता सके कि कुछ नहीं हुआ है बल्कि रिपोर्ट में ही कुछ खराबी है।

सोनोग्राफी की रिपोर्ट देखते ही डॉक्टर के माथे पर बल पड़ गए। वैसे तो डॉक्टर रोज ही ऐसे केस देखता था। रोज ही उसे मरीजों को बताना पड़ता था कि अब उनके पेट का बच्चा नहीं रहा। फिर भी मरीजों की प्रतिक्रिया का अनुमान लगाकर उसके माथे पर बल पड़ ही जाते थे क्योंकि कब कोई रोना-चीखना-चिल्लाना शुरू कर दे, पता नहीं। फिर कोई न भी रोए-चिल्लाए, दुःख तो सबको होता ही है।

डॉक्टर के माथे पर पड़े एक-एक बल से शांता और रज्जन के माथों पर सैकड़ों बल पड़ गए। सच्चाई तो रेडियोलोजिस्ट उन्हें बता ही चुका था पर वे मानने को तैयार नहीं थे। डॉक्टर के चिंतित चेहरे ने उन्हें मानने पर मजबूर कर दिया। अब तो डॉक्टर का कुछ बोलना न बोलना बराबर था। फिर भी बताना तो पड़ेगा।

शांता के पीड़ादायी चेहरे को एक बार देखकर डॉक्टर ने अपनी नजर रज्जन की ओर घुमा ली।

'मुझे अफसोस है।'

'मगर कईसे साहब? कौनो कारण त होई?'

डॉक्टर रिपोर्ट में दिए पति का नाम पढ़कर फिर उससे मुखातिब हुए- 'नहीं राजेंद्र! कोई कारण हो भी सकता है और नहीं भी। ऐसी चीजें बस हो जाती हैं। कुछ किया नहीं जा सकता।'

डॉक्टर के इतना भर कह देने से कि कुछ किया नहीं जा सकता, दोनों ने मान लिया कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। दोनों के चेहरे से पीड़ा बह निकली। मगर आँसू नहीं निकले। एक-दूसरे को हौसला देने के लिए दोनों ही ने अपने आँसू थामे रखे। आज तो रज्जन उसे चंचला भी नहीं कह सकता था, क्योंकि आज वो सच में शांता थी, शांता देवी।

'आप बस कुछ दिन ख्याल रखिए इनका और जल्द ही खून गिरना बंद न हो, तो वापस आइएगा, डी एंड सी करनी पड़ सकती है। एक बार और चेकअप तो करना ही पड़ेगा, अगले हफ्ते।'

दोनों बाहर आ गए। घर लौटने की हिम्मत नहीं हो रही थी तो वहीं मरीजों के बीच बेंच पर बैठ गए।

बेंच पर बैठे-बैठे ही दोनों ने गम गलत किया। बाएं हाथ से बेंच थामे और दाएं हाथ को शांता के घुटने पर रखकर रज्जन अस्पताल के खंभे को निरंतर ताक रहा था कि शांता ने कहना शुरू किया।

'रोहण भैया याद हं?' रोहण रज्जन के मौसेरे भाई थे, जो पिछली गर्मियों में ट्रेन से कटकर मर गए थे। रज्जन से छोटे थे पर पढ़े-लिखे कुछ ज्यादा थे। शादी भी नहीं हुई थी उनकी। रज्जन की मौसी ने बड़ी जिद से उन्हें पढ़ाया-लिखाया था और गोबर-गोइंठा से दूर ही रखा था।

शांता आगे बोली- 'मौसी केतना रोअली?'

रज्जन अभी भी दूर देख रहा था उसकी ओर नहीं पर सुन सब कुछ रहा था। सुनने से ज्यादा समझ रहा था। समझ रहा था कि वो अपना गम छोटा करने के लिए एक बड़े गम की लकीर खींच रही है। बता रही है कि कैसे कोई पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया बच्चा खो देता है। हमने तो अनदेखा, अनजाना बच्चा खोया है।

'इतना बुरा भी नईखे?'

दोनों के मुँह दूसरी ओर थे। मगर रज्जन के दाएं हाथ पर गिरी एक बूँद ने बता दिया कि बुरा तो है और इतना ही बुरा है। उसने शांता की ओर नहीं देखा। देखना भी नहीं चाहता था। जानता था कि ये बूँद कहाँ से गिरी और नहीं चाहता था कि शांता के अपने आपको मजबूत करने के प्रयासों के बीच आए।

वो जानता था कि हाथ पर बूँद क्यूँ गिरी? और गिरती भी कैसे नहीं? सात दिन से जो माँ बनी फिर रही थी, थी तो माँ ही। (समाप्त)

पृष्ठ २४ की पहेलियों के उत्तर-

(१) बादल (२) बारिश (३) बिजली (४) जुकाम (५) काई

बाल कहानी

जंगल हुआ भयमुक्त

शशांक मिश्र भारती

चम्पक वन में एक बकरी रहती थी। वह बहुत निडर थी। उसको किसी का भय न था। जंगल का राजा शेर भी सामने आ जाता तब भी न डरती। दूसरे जानवरों की तो बात ही न पूछिये। जंगल में अनु गिलहरी, शीला बिल्ली, चीकू खरगोश, जग्गा गीदड़, मोपट भालू, दिलेर हाथी, चुन्नू गधा, झुन्नू चीता आदि जानवर थे। मांसाहारी मांस खाते थे और शाकाहारी शाक भाजी, लेकिन दुःख इस बात का था कि जब कभी मांसाहारी अचानक किसी छोटे जानवर को मार डालते तो जंगल भय से थर्रा उठता। सबके मन मे बात उठती कि क्यों न यह सब बन्द करवाया जाये। इस तरह तो हम सब इन्हीं हिंसक पशुओं की दया पर निर्भर रहेंगे। यह जब चाहें हमारा जीवन समाप्त कर दें। इससे तो अच्छा है हम सब किसी दूसरे जंगल में चले जायें या कोई दूसरा उपाय सोंचे।

इस तरह सब कुछ चलते-चलते कई वर्ष बीत गये। चमेली बकरी के जम्मू-गम्मू दो बच्चे भी हो गये। वह बच्चों के साथ जंगल जाती। उनको जंगल की बाते बतलाती और चरना सिखलाती। शाम को वापस घर आ जाती। अब उसे कोई दुःख न था। बच्चों के साथ प्रसन्नता पूर्वक उसके दिन बीत रहे थे।

एक दिन शाम का समय था। चमेली अपने बच्चों के साथ जंगल से वापस लौट रही थी कि अचानक कहीं से जंगल का राजा शेर सिंह सामने आ गया और दहाड़ते हुए बोला, 'अबे चमेली! रुक जा। आज तेरा व तेरे बच्चों का नम्बर है। तू चाहे तो पहले यह निर्णय ले सकती है कि मैं पहले किसका शिकार करूं।'

शेर सिंह की दहाड़ सुनकर अच्छे-अच्छों की सिटी-पिटी गुम हो जाती थी, वह तो फिर बकरी ठहरी। थोड़ा सा साहस बटोरकर बोली, 'महाराज आप की बात भला कौन टाल सकता है। आप इस जंगल के राजा हैं। जब चाहे जिसका शिकार कर सकते हैं। फिर भी मेरी आपसे एक विनती है।'

'ठीक है कहो!' शेर सिंह बोला।

'महाराज मेरे बच्चे अभी छोटे हैं। इनको बड़ा हो जाने दीजिए। दुनिया देख लेंगे। आप चाहें तो मुझे अभी खा सकते हैं। एक विनती और है, मैं इन्हें घर छोड़ आऊँ।' बकरी ने विनयपूर्वक कहा।

'क्या मुझे मूर्ख समझ रखा है? तू क्या लौट के आएगी? चल मरने को तैयार होजा।'

'नहीं महाराज! मेरी बात का विश्वास कीजिए। यदि मैं वापस न आऊँ, तो अगले दिन आप मुझे व मेरे दोनों बच्चों को भी खा लेना।' चमेली की बात पर शेर सिंह को विश्वास हो गया उसने कहा- 'ठीक है जाओ। मैं यहीं पर प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

शेर से छूटकर चमेली अपने बच्चों के साथ सीधे कुन्दन लुहार के पास पहुँची और उसने कहा, 'काका, हम लोगों के सीगों को लोहे से गढ़कर नुकीला बना दो।'

'क्या कहा चमेली? दिमाग तो ठीक है तेरा?'

'हाँ, हाँ, काका! मैं इस जंगल को भयमुक्त बनाना चाहती हूँ। नहीं तो आज मेरे बच्चों को, कल किसी और के बच्चों को अनाथ होना पड़ेगा। अब आप जल्दी से हम लोगों के सींग पैने कर दीजिए।'

'ठीक है बिटिया' कहकर कुन्दन काका ने चमेली व उसके बच्चों जम्मू-गम्मू के सींग नुकीले बना दिये।

इधर चमेली ने जम्मू-गम्मू से कुछ देर बात की फिर तीनों शेर के पास चल दिये। शेर की नजरें बचाकर जम्मू-गम्मू दोनों ही उसके पीछे झाड़ियों में जाकर छुप गये। चमेली अकेले ही शेर के पास पहुंची- 'लो महाराज! मैं आ गयी। अब तो मुझ पर विश्वास हुआ?'

'हा! हा! चमेली! तूने बकरी जात की नाक ही ऊँची कर दी। अब मैं तुझे ही खाता हूँ।' शेर सिंह दहाड़ते हुए बोला।

'महाराज! आप क्यों कष्ट करेंगे। आप आंखें बन्द करके और मुख खोलकर बैठ जाइये। मैं स्वयं अपना सिर आपके मुख में रख दूंगी।'

'अरे चमेली तूने तो कमाल ही कर दिया। इससे अच्छा क्या हो सकता है। ठीक है तू आ, मैं मुख खोले बैठा हूं।'

चमेली तो यही चाहती थी उसने मैं-मैं की आवाज निकाली उसके दोनों बच्चे तैयार हो गये और धीरे-धीरे शेर की तरफ बढ़ने लगे। शेर के बिल्कुल पास पहुंचकर अचानक ही चमेली की आंखें क्रोध से लाल हो गई और उसने अपने दोनों नुकीले सींग शेर सिंह की गरदन में घुसा दिये। तभी पीछे से जम्मू-गम्मू ने भी अपने-अपने सींगों से शेर सिंह को मारना शुरू कर दिया।

शेर सिंह तो निश्चिन्त था। उसे ऐसे किसी हमले की आशंका न थी। इसलिए वह सँभल न सका और बुरी तरह घायल हो गया, जैसे-तैसे जान बचाकर भागा। फिर मुड़कर कभी जंगल में न आया।

अब तो जंगल के सभी जानवर बहुत खुश हुए। चमेली रानी बन गयी थी। उसकी बुद्धिमानी और निडरता से जंगल भयमुक्त हो गया था। ■

रिश्ते

लीला तिवानी

सुनहरी सवेरे की सरस-सुहानी वेला थी. पीपल के एक घने पेड़ की एक डाल पर चिन्नी चिड़िया अपनी नन्ही बेटी मिन्नी के साथ बैठी थी. चिन्नी चिड़िया अपनी अनुभवी-मटकती आंखों से चौकन्नी होकर अपनी बेटी से बातें कर रही थी. चिन्नी अब कुछ-कुछ सयानी हो चली थी. आज उसको मॉम से एक खास बात करनी थी. उसने सुबह-सुबह हंसते हुए कहा- 'शुभ प्रभात, डिअर मॉम.'

'शुभ प्रभात, डिअर मिन्नी.' चिन्नी चिड़िया ने चहकते हुए कहा.

'मॉम, एक बात कहूं, मानोगी?' मिन्नी बोली.

'हां-हां, कहो. क्या बात है मिन्नी?'

'मॉम, अब मैं बड़ी हो गई हूं, क्या मुझे नील गगन में उड़ने की इजाजत मिलेगी?' मिन्नी मॉम के इंकार से तनिक डरते हुए बोली.

'मिन्नी, तुम अब सचमुच सयानी हो गई हो. मैं देखती रहती हूं कि तुम बराबर उड़ने का अभ्यास करती रहती हो और अब तुम्हें नील गगन में उड़ने का साहस भी आ गया है. उड़ने से पहले मैं तुम्हें कुछ सिखाना चाहती हूं.'

'मॉम जरूर बताइए, बच्चे माता-पिता से ही तो दुनिया में व्यवहार करना सीखते हैं.'

'तो सुनो मिन्नी, आज का पहला सबक- रिश्ते कम बनाइए, लेकिन उन्हें दिल से निभाइए, क्योंकि अक्सर लोग बेहतर की तलाश में बेहतरीन खो देते हैं.'

'वाह मॉम, यह तो बड़ी अच्छी बात बताई. मैं जरूर ध्यान रखूंगी. दूसरा सबक कौन-सा है?'

'दूसरा सबक है, आस्था सब पर रखना, लेकिन विश्वास सिर्फ खुद पर करना, क्योंकि-

इस जहां में दूसरों का दर्द कब अपनाते हैं लोग
हवा का रुख देखकर अक्सर बदल जाते हैं लोग'

'मॉम, इतनी अच्छी-अच्छी बातें आप कहां से सीखी हैं आपने?'

'कुछ माता-पिता से, कुछ अपने अनुभव से.'

'मॉम, मैं अब जाऊं?'

'जा बेटी जा, परमात्मा तेरी रक्षा करेगा.' चिन्नी चिड़िया आशीर्वाद देती हुई बेटी मिन्नी को उड़ता हुआ देख रही थी. ■

बाल पहेलियाँ

१. आसमान में पलते हैं, क्षण में घिरते-टलते हैं
काले-काले, उजले-उजले, पानी लेकर चलते हैं

२. भिगो डालती सबको अक्सर, कहीं खुशी तो कहीं दिखे डर
बिन मौसम में खेले होली, हाँ हम सब हैं इस पर निर्भर

३. अंबरसे यह शोर मचाती, चमक-चमक सबको घबराती
जहाँ गिरे, सब वहाँ जला दे, नहीं किसी के मन को भाती

४. आ जाता है ये बिन दाम, रुकवा देता सारे काम
ठंडे मौसम का है दोस्त, जल्दी बोलो इसका नाम

५. हरी-भरी पर घास नहीं, जाना इसके पास नहीं
फिसला देगी बिन पहिए, इससे कोई आस नहीं

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ २३ पर देखिए।)

(पहली किस्त)

अपनी-अपनी छुट्टियाँ

डॉ विकास दवे

वैसे तो परीक्षा खत्म हुए लगभग महीना हो गया था, किन्तु रिजल्ट आने तक पता नहीं क्यों बच्चे इन दिनों को छुट्टियों के दिन मानने को तैयार ही नहीं थे। ऐसा लगता था मानो रिजल्ट का आना ही गर्मी की छुट्टियों की घोषणा करता है।

आज ३० अप्रैल है। प्रमोद अपनी पूरी मित्र मंडली के साथ स्कूल की ओर जा रहा था। सबके सब ऐसे उत्साह में थे, मानो सिपाही किला जीतने जा रहे हों। यह उत्साह उन सबकी बातों में फूट-फूटकर बाहर आ रहा था। गर्मी की छुट्टियों को लेकर सबकी अपनी-अपनी योजनाएँ थी और जल्दी-से-जल्दी वे सब उन्हें पूरी करना चाहते थे। बातों-बातों में स्कूल आ गया और वह क्षण भी आ गया जब प्रिंसिपल साहब ने परीक्षा परिणामों की घोषणा की।

लगभग पूरी टीम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी। वे सब खुशी से पागल हुए जा रहे थे। कभी वे एक-दूसरे से हाथ मिलाते, कभी गले मिलते। जो बच्चे मिठाई लेकर आए थे, वे एक-दूसरे का मुँह भी मीठा करा रहे थे। वापसी में पहले रिजल्ट की चर्चा चल रही थी।

अपूर्वा बोली- 'मुझे उम्मीद थी कम से कम ८५ प्रतिशत नम्बर तो आएँगे ही, पता नहीं कहाँ गड़बड़ हुई, मैं तो ८० प्रतिशत पर ही सिमट गई।'

बुलबुल बोली- 'सामने तो दिख रहा है गणित ने तेरा रिजल्ट बिगाड़ा है। वैसे गणित और अंग्रेजी में मेरे नंबर भी बहुत कम हैं लेकिन मेरा प्रतिशत बहुत अच्छा रहा। मैंने जितना सोचा था उससे भी अच्छा!'

तेजस आश्चर्य से बोला- 'गणित, अंग्रेजी में कम नंबर आने के बाद भी प्रतिशत अच्छा रहा यह कैसे? कही कोई अलादीन का चिराग हाथ लग गया था क्या?'

'हाँ, ऐसा ही समझो!' बुलबुल खिलखिलाते हुए बोली, 'परीक्षा से पहले मेरे दादाजी ने मुझे एक बात कही थी कि प्रायः विद्यार्थी हिन्दी, संस्कृत जैसे विषयों को बहुत महत्व नहीं देते और अपेक्षाकृत कठिन लगने वाले गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान को पूरा समय देते रहते हैं। यदि इन आसान विषयों को भी थोड़ा अधिक समय देकर गंभीरता से लें, तो हमारा प्रतिशत बढ़ाने में यही विषय सहायक होते हैं। मैंने यही किया और सचमुच इन्हीं विषयों में मुझे बहुत अच्छे अंक मिले जिससे मैं ८५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर सकी।'

सभी को एक बात का सबसे अधिक आश्चर्य हो रहा था कि कक्षा में प्रथम और द्वितीय स्थान पर विमला और दिनेश ने कब्जा किया था। किसी को भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि स्कूल के पीछे के खुले मैदान में बसी झोपड़ियों में रहने वाले ये दोनों बच्चे प्रमोद की मित्र मंडली को पीछे छोड़कर कैसे आगे निकल गए?

जहाँ-तहाँ से फटे हुए, मैले कपड़े पहनने वाले ये बच्चे इस मंडली के दोस्त कभी नहीं बन पाए। घर पहुंचकर सब बच्चे सीधे बुलबुल के दादाजी के पास पहुंचे। दादाजी विजय शर्मा एक बड़ी बैंक के सामुदायिक सेवा विभाग के अधिकारी है। बाल मंडली को वे रोज शाम को अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं इसलिए मोहल्ले भर के बच्चे उन्ही के आस-पास मण्डराते रहते हैं। आज तो सबको अपना-अपना रिजल्ट सबसे पहले दादाजी को सुनाना था इसलिए सब झूम ही गए उन पर। जैसे-तैसे दादाजी ने प्यार से सबको बैठाया और क्रमशः सबके परिणाम देखे। विमला और दिनेश के कक्षा में प्रथम और द्वितीय आने की बात सुनकर वे शेष परिणाम से भी ज्यादा प्रसन्न हुए।

'दादाजी! उन मैले-कुचैले बच्चों की सफलता से आपको इतनी खुशी हो रही है?' बुलबुल की आवाज में ईर्ष्या का भाव स्पष्ट झलक रहा था। आखिर वे उसी के दादाजी थे। दादाजी सब समझ गए, प्यार से उसे गोद में बैठाते हुए बोले- 'हमारी रानी बिटिया नाराज हो गई लगता है। बेटे उन दोनों की सफलता ने यह तो सिद्ध कर ही दिया है कि उन दोनों ने तुम सबसे ज्यादा मेहनत की है। एक बात और है उन दोनों ने यह मेहनत किन परिस्थितियों में की है यह तुम लोग नहीं जानते। हमारी बैंक के सहयोग से वहां बालिकाओं का एक संस्कार केन्द्र चलता है, इसलिए मैं हमेशा उस बस्ती में जाता रहता हूँ। मुझे उन दोनों बच्चों की स्थिति बहुत अच्छी तरह पता है।'

'अच्छा एक बात बताओ! गर्मी की छुट्टियों में तुम सब क्या करने वाले हो किसी ने सोचा है?' अचानक शर्मा जी ने विषय बदल दिया।

'हमने अभी तक तो कुछ नहीं सोचा दादाजी।'

दादाजी बोले- 'चलो ठीक है। मैं तुम सबको आज शाम तक का समय देता हूँ सब सोचकर रखना छुट्टियों में तुम क्या करने वाले हो। शाम को हम सब मिलते हैं...?'

एक स्वर में सब बच्चे चिल्लाए 'बगीचे में।' दादाजी बोले- 'नहीं, बगीचे में तो हम सब रोज बैठते हैं आज हम सब एक साथ चलेंगे विमला और दिनेश के घर। भई उन दोनों को बधाई जो देना है और उनका मुंह मीठा कराने तो चलना ही है। वहीं अपनी मंडली जमाएँगे। और वहीं हम तय करेंगे कि छुट्टियाँ कैसे बितानी हैं?'

कुछ बच्चों के गले नहीं उतर रही थी शर्मा जी की यह योजना, लेकिन वे उनके आगे कुछ बोल नही पाए। दादा जी का हँसमुख स्वभाव और बच्चों के साथ बच्चे बन जाना पूरी कॉलोनी के लिए चर्चा का विषय होता था। उन्होंने अपने इसी स्वभाव के कारण सब बच्चों के दिलों पर अपना अधिकार कर रखा था। यही कारण था कि असहमत होते हुए भी किसी ने कुछ भी नहीं कहा इस विषय में।

संध्या समय पूरी मंडली निकल पड़ी। सब दादाजी को घेरे चल रहे थे। दादाजी के हाथ में थैली में चार-पाँच मिठाई के पैकेट बच्चों में ऊर्जा का संचार कर रहे थे। हल्ला-गुल्ला मचाता यह दल जैसे ही झुग्गी बस्ती में प्रविष्ट हुआ वहाँ के भी ढेरों बच्चे 'दादाजी-दादाजी' कहते हुए उनके साथ हो लिये।

कॉलोनी के बच्चों को इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि यहाँ के बच्चे उनके दादाजी को कैसे जानते हैं? दादाजी उन बच्चों को भी उतना ही प्यार से दुलार रहे थे जितना इन बच्चों को।

(शेष अगले अंक में)

शिशु गीत

१. नेता

खादी पहने आते नेता, सबको हाथ दिखाते नेता
करते कम हैं, कहते ज्यादा, कुर्सी को लड़ जाते नेता

२. कुर्सी

कुर्सी के हैं खेल निराले, इसकी खातिर सब मतवाले
मुझको भी है कुर्सी प्यारी, पढ़ता इसपर बैठ मजा ले

३. भाषण

नेता पहले खाते राशन, देने आते फिर वे भाषण
रहती हालत लगभग इक सी, चाहे जिसका आये शासन

४. खादी

ऊपर खादी, नीचे रेशम
बाहर सादे, भीतर चम-चम
नेताजी के क्या कहने जी
जितना बोलूँ उतना है कम

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविता

रिम-झिम करता सावन आया, गरमी का हो गया सफाया
उगे गगन में गहरे बादल, भरा हुआ जिनमें निर्मल जल
इन्द्रधनुष ने रूप दिखाया, रिम-झिम...
श्वेत-श्याम घन बहुत निराले, आसमान पर डेरा डाले
कौआ काँव-काँव चिल्लाया, रिम-झिम...
जोर-शोर से बिजली कड़की, सहम उठे हैं लड़के-लड़की
देख चमक सूरज शर्माया, रिम-झिम...
खेत धान से धानी-धानी, घर मे पानी बाहर पानी
मेघों ने पानी बरसाया, रिम-झिम...
लहरों का स्वरूप है चंगा, मचल रहीं हैं यमुना-गंगा
पेड़ों ने नवजीवन पाया, रिम-झिम...
झूले पड़े हुए घर-घर में,
चहल-पहल है प्रांत-नगर में
झूल रही हैं ममता-माया
ठलुओं ने महफिल है जोड़ी,
मजा दे रही चाय-पकौड़ी,
मानसून ने मन भरमाया
रिम-झिम करता सावन आया

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

कश्मीर में शान्ति बहाली ही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि

डॉ नीलम महेन्द्र

२६ जुलाई २०१७ को १८ वाँ कारगिल विजय दिवस मनाया गया। वह विजय जिसका मूल्य वीरों के रक्त से चुकाया गया, वह दिवस जिसमें देश के हर नागरिक की आँखें विजय की खुशी से अधिक हमारे सैनिकों की शहादत के लिए सम्मान में नम होती हैं ।

१९९९ के बाद से भारतीय इतिहास में जुलाई के महीने की २६ तारीख अपने साथ हमेशा भावनाओं का सैलाब लेकर आती है। गर्व का भाव उस विजय पर जो हमारी सेनाओं ने हासिल की थी। श्रद्धा का भाव उन अमर शहीदों के लिए जिन्होंने तिरंगे की शान में हँसते हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी। आक्रोश का भाव उस दुश्मन के लिए जो अनेकों समझौतों के बावजूद १९४७ से आज तक तीन बार हमारी पीठ में छुरा घोंप चुका है। क्रोध का भाव उस स्वार्थी राजनीति, सत्ता और सिस्टम के लिए जिसका खून अपने ही देश के जवान बेटों की बली के बावजूद नहीं खौलता कि इस समस्या का कोई ठोस हल नहीं निकाल सकें।

बेबसी का भाव उस अनेक अनुत्तरित प्रश्नों से मचलते हृदय के लिए कि क्यों आज तक हम अपनी सीमाओं और अपने सैनिकों की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो पाए? उस माँ के सामने असहाय होने का भाव जिसने अपने जवान बेटे को तिरंगे में देखकर भी आँसू रोक लिए क्योंकि उसे अपने बेटे पर अभिमान था कि वह अमर हो गया। उस पिता के लिए निशब्दता और निर्वात का भाव जो अपने भीतर के खालीपन को लगातार देशाभिमान और गर्व से भरने की कोशिश करता है। उस पत्नी से क्षमा का भाव जिसके घूँघट में छिपी आँसुओं से भीगी आँखों से आँख मिलाने की हिम्मत आज किसी भी वीर में नहीं।

२६ जुलाई अपने साथ यादें लेकर आती है टाइगर हिल, तोलोलिंग, पिम्पल काम्पलेक्स जैसी पहाड़ियों की। कानों में गूँजते हैं कैप्टन सौरभ कालिया, विक्रम बत्रा, मनोज पाण्डे, संजय कुमार जैसे नाम जिनके बलिदान के आगे नतमस्तक है यह देश।

१२ मई १९९९ को एक बार फिर वह हुआ जिसकी अपेक्षा नहीं थी। दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्रों में लड़ी गई थी वह जंग। १६० किमी के कारगिल क्षेत्र एलओसी पर चला था वह युद्ध। ३०००० भारतीय सैनिकों ने दुश्मन से लोहा लिया। ५२७ सैनिक व सैन्य अधिकारी शहीद हुए, १३६३ से अधिक घायल हुए। १८ हजार फीट ऊँची पहाड़ी पर ७६ दिनों तक चलने वाला यह युद्ध भले ही २६ जुलाई १९९९ को भारत की विजय की घोषणा के साथ समाप्त हो गया, लेकिन पूरा देश उन वीर सपूतों का ऋणी हो गया जिनमें से अधिकतर ३० वर्ष के भी नहीं थे।

'मैं या तो विजय के बाद भारत का तिरंगा लहरा के आऊँगा या फिर उसी तिरंगे में लिपटा आऊँगा।' शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा के ये शब्द इस देश के हर युवा के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। कारगिल का पाइन्ट ४८७५ अब विक्रम बत्रा टाप नाम से जाना जाता है जो कि उनकी वीरता की कहानी कहता है। और ७६ दिन के संघर्ष के बाद जो तिरंगा कारगिल की सबसे ऊँची चोटी पर फहराया गया था वह ऐसे ही अनेक नामों की विजय गाथा है। स्वतंत्रता का जश्न वह पल लेकर आता है जिसमें कुछ पाने की खुशी से अधिक बहुत कुछ खो देने से उपजे खालीपन का एहसास भी होता है।

लेकिन इस विजय के १८ सालों बाद आज फिर कश्मीर सुलग रहा है। आज भी कभी हमारे सैनिक सीमा रेखा पर तो कभी कश्मीर की वादियों में दुश्मन की ज्यादतियों के शिकार हो रहे हैं। युद्ध में देश की आन-बान-शान के लिए वीरगति प्राप्त होना एक सैनिक के लिए गर्व का विषय है, लेकिन बिना युद्ध के कभी सोते हुए सैनिकों के कैंप पर हमला तो कभी आतंकवादियों से मुठभेड़ के दौरान अपने ही देशवासियों के हाथों पत्थरबाजी का शिकार होना कहाँ तक उचित है?

अभी हाल ही के ताजा घटनाक्रम में जम्मू कश्मीर पुलिस के डीएसपी मोहम्मद अयूब पंडित को शब-ए-कद्र के जुलूस के दौरान भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला। इससे पहले १० मई २०१७ को मात्र २३ वर्ष के आर्मी लेफ्टिनेन्ट उमर फैयाज की शोपियाँ में आतंकवादियों द्वारा हत्या कर दी गई थी जब वे छुट्टियों में अपने घर आए थे। कुल छः महीने पहले ही वे सेना में भर्ती हुए थे। इस प्रकार की घटनाओं से पूरे देश में आक्रोश है।

हमारे देश की सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारे सैनिकों की है जिसे वे बखूबी निभाते भी हैं लेकिन हमारे सैनिकों की सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी सरकार की है। हमारी सरकारें चाहे केंद्र की हो चाहे राज्य की, क्या वे अपनी जिम्मेदारी निभा रही हैं? अगर हाँ तो हमारे सैनिक देश की सीमाओं के भीतर ही वीरगति को क्यों प्राप्त हो रहे हैं? क्या सरकार की जिम्मेदारी खेद व्यक्त कर देने और पीड़ित परिवार को मुआवजा देने भर से समाप्त हो जाती है? कब तक बेकसूर लोगों की बलि ली जाती रहेगी?

अब समय आ गया है कि कश्मीर में चल रहे इस छद्म युद्ध का पटाक्षेप हो। सालों से सुलगते कश्मीर को अब एक स्थायी हल के द्वारा शांति की तलाश है। जिस दिन कश्मीर की वादियों में फिर से केसर के खेत लहलहाएँगे, जिस दिन कश्मीर के बच्चों के हाथों में पत्थर नहीं लैपटॉप होंगे और कश्मीर का युवा वहाँ के पर्यटन उद्योग में अपना योगदान देकर स्वयं को देश की मुख्य धारा से जोड़ेगा, उस दिन कारगिल शहीदों को हमारे देश की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

हास्य-व्यंग्य

निंदक नियरे राखिए...

अशोक मिश्र

अब क्या कहूं कबीरदास जी को। खुद तो जो कुछ भुगतना था, भुगता और चले गए। लेकिन दूसरे लोगों के लिए ऐसी मुसीबत खड़ी कर गए कि उससे जान छुड़ाना मुश्किल हो रहा है। वैसे अगर अपनी परेशानियों को ताख पर रखकर बात कहूं, तो बड़े भले आदमी थे कबीरदास जी। पोंगापंथियों को बिन पानी, डिटरजेंट बिना ऐसा धोया कि पढ़-सुनकर मजा आ जाता है। लेकिन साहब! 'निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय' जैसी बात नहीं कहते, तो उनका क्या बिगड़ जाता।

कहा जाता है कि कबीरदास जिंदगी भर अपने निंदकों से परेशान रहे। सोचा, मैं जिंदगी भर परेशान रहा, तो दूसरे कैसे मौज में रहें। सो, लिख डाली निंदक को अपने निकट रखने की बात। लोगों ने कबीरदास की इस बात को एकदम राजाज्ञा मानकर निंदा कर्म जो शुरू किया, तो वह आज तक अबाध गति से जारी है। उनकी बात से लोगों को जैसे निंदा कर्म का लाइसेंस ही मिल गया। निंदकों की एक ऐसी परंपरा पुष्पित-पल्लवित हो गई जिसमें कई ख्यात-विख्यात निंदाकर्मी आते हैं। इस तरह हम जैसों सीधे-सादे आदमियों के लिए तो वे बखद्दर बो गए।

मेरे अड़ोस में रहते हैं मुसद्दीलाल और पड़ोस में मतिमंद जी। मतिमंद उनका तखल्लुस है। उनका असली नाम तो शायद उनकी बीवी भी नहीं जानती होगी। इन दोनों अड़ोसी और पड़ोसी को अपने मोहल्ले में मकान किराये पर दिलाकर मानो अपने निंदकों को आजू-बाजू में बसाने का पुनीत कार्य पूरा कर लिया हो। इन दोनों महानुभावों ने अपने आपको मेरा निंदक खुद नियुक्त किया और लग गए मेरा स्वभाव निर्मल करने में। मेरे चरित्र और कार्यों को बिना साबुन, पानी के इस तरह धोते हैं कि मानो मैं किसी गटर में जा गिरा उनका कुर्ता-पायजामा होऊं और वे गंदे कपड़ों को ड्राईक्लीन करने के विशेषज्ञ। पहले तो मैं उनके निंदक के पद पर स्वनियुक्त की बात समझ ही नहीं पाया। पर जब मोहल्ले की महिलाएं, लड़कियां और सज्जन-दुर्जन मुझसे बात करने से कतराने लगे, तो मेरे कान खड़े हुए।

कल तक मोहल्ले की महिलाएं आईटॉनिक प्रदान करने के लिए घंटों छज्जे पर, सड़क पर, घर के दरवाजे पर मौजूद रहती थीं। यह जानते हुए भी कि मैं उन्हें निहारकर आईटॉनिक ग्रहण कर रहा हूं, वे मंडली जमाए रहती थीं। जब वे मुझे देखते ही झट से भीतर भागने

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

डॉ रेखा

कल्पना भट्ट

'ये कहाँ जा रही हो अम्मी?' पड़ोस वाली महिला ने पूछा।

'अरे वो अपनी मधु है न उसके घर से खबर आयी है, उसके पेट में दर्द हो रहा है, पेट से है न वो, पिछला जापा भी मैंने किया था, इस बार भी...' बूढ़ी अम्मा ने हंसकर उत्तर दिया।

'हे भगवान किस युग में जीते हैं इस मधु के घर वाले! दुनिया भर के अस्पताल हैं, पर देखो तो अब भी दायी से जापा करवाना चाहते है वो भी घर में।' बूढ़ी अम्मा उन सबकी बातें सुन रही थी। लकड़ी की गाडी के सहारे से धीरे-धीरे चलने वाली इस अम्मा का जीवन किसने देखा था, इन सब बातों के बीच वो अपने अतीत में खो गयी।

'डॉक्टर रेखा, जल्दी चलिए वो रूम नंबर १२ की पेशेंट को लेबर पेन हो रहा है।' नर्स ने कहा।

'ओह! जल्दी उसको लेबर रूम में शिफ्ट करो, तैयारी करो मैं अभी आ रही हूँ।' डॉ रेखा ने नर्स को निर्देश दिया।

डॉ रेखा पिछले कई वर्षो से जच्चा बच्चा वार्ड की इंचार्ज डॉक्टर थी, उनके हाथ में जैसे जादू था,कोई केस फैल न होता था, बड़ी सहजता से जापा करवाती थी। ऑपरेशन केस हो या नॉर्मल, डॉ रेखा बेहद गम्भीरता से हर पेशेंट पर ध्यान देती थी। चारों तरफ उनके चर्चे थे। उनका पति बिलकुल विपरीत था, एक नंबर का ऐय्याश व्यक्ति था, घर से पैसे चुराकर शराब पीना, जुआ खेलना और भी बहुत सारे ऐब थे। डॉ रेखा के बहुत समझाने पर भी वो नहीं सुधरा। डॉ रेखा जिस अस्पताल में काम करती थी, वहां लोग उसका मजाक उड़ाते थे। जितना कमाती थी सब उसका पति उड़ा देता था।

तनाव के चलते उसके केस बिगड़ते गए। नौबत यहाँ तक पहुँच गयी कि उसकी प्रैक्टिस छीन ली गयी। क्रोध और ग्लानि से वह एक अनजान गाँव में चली आयी, और वहाँ अपना गुजारा जैसे-तैसे करने लगी। उसके हाथ में हुनर था, वह लकड़ी का काम भी जानती थी, सो गाँव में लकड़ी के खिलौने भी बनाती थी।

आज जिस मधु के घर से बुलावा आया था, उस मधु की माँ का जापा भी डॉ रेखा ने ही किया था। गाँव में भले कोई न जानता हो, पर डॉ रेखा को अब भी उसके पुराने साथी जानते थे। प्रैक्टिस छूट गयी थी, पर डॉ रेखा का स्वभाव और हुनर से पुराने लोग वाकिफ थे, उनकी अस्पताल में भी अच्छी खासी पहचान थी।

मधु के घर जब वे पहुंची तो पता चला कि उन्हें करीब के अस्पताल में ले जाया गया है। डॉ रेखा भी वहीं पहुँच गयी। वहां मधु को लेबर रूम में ले जाया गया था। नर्स बाहर आकर फिर अंदर जा रही थी, अस्पताल नया नया बना जान पड़ रहा था, डॉ रेखा को भी फिक्र हो रही थी मधु की।

नर्स का बार बार आना जाना रेखा को विचलित कर रहा था। रेखा से न रहा गया, उसने नर्स से पूछा, 'क्या बात है, कोई कंप्लीकेशन हो गयी है क्या?'

नर्स ने डॉ रेखा की तरफ देखकर कहा, 'हाँ पेशेंट मधु का बच्चा उल्टा है, मैडम डॉ रेखा को कॉल करने का कह रही है, वे उन्हीं की स्टूडेंट रहीं हैं और पेशेंट भी बार-बार डॉ रेखा को पुकार रही हैं।' मधु के घरवालों ने डॉ रेखा की तरफ इशारा किया। वे नर्स के साथ तुरंत गयीं। अब तक मधु को ओटी में शिफ्ट कर दिया गया था, ऑक्सीजन की कमी हो गयी थी मधु के शरीर में।

नर्स के जाते ही वहां स्टाफ मेम्बर्स काना फूसी करने लगे, 'मैडम भी कमाल है, ऐसी डॉ को बुला भेजा जिसकी प्रैक्टिस ही रद्द कर दी गयी है। कैसे कैसे लोग डॉक्टर बन जाते हैं, डॉक्टर के पेशे को बदनाम करते हैं। अब ये रेखा मैडम को क्यों बुलाया, क्या अपनी मैडम नहीं जानती कॉम्प्लिकेटेड केसों को कैसे हैंडल करते हैं?' किसी ने कहा, 'यार छोडो अपन को क्या करना! अपनी ड्यूटी करो और फुर्सत पाओ।'

कुछ ही समय बाद ओटी की लाइट बन्द हुई। बाहर आकर नर्स ने सूचना दी कि कॉम्प्लिकेशन के चलते ऑपरेशन की नौबत आ गयी थी, पर जरूरत नहीं पड़ी, सब ठीक है, और पेशेंट को बेटा हुआ है।'

थोड़ी देर बाद वहाँ की डॉक्टर डॉ रेखा के साथ बाहर आयी और मधु के घर वालों से बोलीं, 'आज आपने रेखा मैडम को बुलाकर मुझे कृतार्थ किया है, मैंने अपनी गुरु की निगरानी में आज एक कॉम्प्लिकेटेड केस को हैंडल किया है। मैडम का आशीर्वाद आज मुझे मिला। सच कहूँ तो मैं ऑपरेशन ही करने वाली थी, पर मैडम के मार्गदर्शन से नॉर्मल डिलीवरी सम्भव हो पायी। यही तो होता है, एक्सपीरियंस बोलता है। धन्य हुई मैं आज।'

डॉ रेखा के मुख पर सन्तोष था, आज वे फिर जी उठी थी। ऐसे ही एक केस ने तो उनकी प्रैक्टिस छीन ली थी, आज वे खुद को पूर्ण मान रहीं थी। ■

मोह के धागे

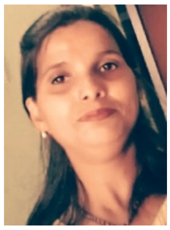

नंदिता तनुजा

एक अजीब सा अहसास लिए जीती हूँ, जिंदगी में दिल और दिमाग की भूमिका में कुछ उलझे-सुलझे रिश्तो के धागे में लिपटी हूँ! नंदी की कुछ यादें आज भी साथ है, जो वक्त से गुजर गहरे परतों में छुप तो गयीं, लेकिन प्रेमकहानी के नाम पर कुछ पल जी पायी और समझ पायी कि उसे प्यार हुआ, वह अहसास सच या ख्वाब? बस उलझी सी रही। बालकनी से उसने एक प्रेमी युगल को जाते देखा, जो सड़क से गुजर रहे थे और दीन-दुनिया से अलग आपस में मीठी तकरार करते हुए नंदी के आंखों के सामने से गुजर गए। दिल में टीस उठी थी नंदी के कि वह रुद्र की दोस्त थी या प्रेमिका।

रुद्र और नंदी एक ही कॉलेज में पढ़ते थे और उनकी कॉलोनी भी एक, रुद्र का घर नंदी के घर से एक दो घर छोड़कर। अधिकतर उनका और उनके परिवारों का मिलना-जुलना हो जाया करता था। नंदी बहुत सरल और सादे दिल की लड़की। वह मन में छलकपट या कोई दोमुखी बात न करती और न कहती, जो जैसा उसके साथ वह वैसी ही थी। रुद्र से उसकी अच्छी दोस्ती थी। रुद्र दोस्त अच्छा था, वह नंदी का ख्याल रखता और उसके बातों पर अक्सर उससे नोंकझोंक करता और अपनी बात मनवाकर दम लेता था। नंदी दोस्ती के नाते ही सही वह रुद्र से बिना बहस किये एकदम खामोशी से उसकी बात मान लेती थी।

धीरे-धीरे नंदी को अपने मन में रुद्र को लेकर एक खिंचाव का अहसास हुआ। जब रुद्र नंदी के साथ होता तो वह बहुत खुश और सुकून सा महसूस करती और रुद्र के जाने के बाद उसके साथ होने का फिर इंतजार। नंदी बहुत संकोच में थी वह रुद्र को लेकर क्यों ये बदलाव पा रही। कॉलेज में रुद्र किसी और के साथ हो तब तो नंदी बेचैन-सी हो जाती थी और रुद्र वापस आये यही सोच उसे खामोशी से बुलाती थी। रुद्र बहुत अच्छा लड़का और साथ ही वह दिल से कम और दिमाग को जीता था। उसके विचार नंदी से बहुत अलग थे लेकिन फिर भी वह अपना अधिक समय नंदी के साथ ही गुजारता था।

एक दिन नंदी ने अपने दिल के सारे अहसास रुद्र के सामने कह दिये और सही मायने में रुद्र ने उसको सुना भी, लेकिन फिर उसके बाद जो रुद्र ने कहा वह सिर्फ इतना कि 'नंदी तुम बहुत अच्छी हो और बहुत अच्छी दोस्त भी, तुम्हारे साथ रहना पसंद। लेकिन सुनो, मुझे तुमसे प्यार नहीं और तुम्हारी ये बातें सुनकर ही कह रहा कि तुम्हें भी मुझसे प्यार नहीं। हाँ, ये एक दोस्त के रूप में तुम्हारी नई सोच सामने आयी' और कहकर हंसने लगा। नंदी खामोश थी क्योंकि जो उसने अहसास किया, रुद्र से कहा और उसे रुद्र कहीं नहीं मिला। जबरदस्ती का अहसास रुद्र को कराना उसने सही नहीं समझा और उसने उसी समय रुद्र के हंसी में अपना दर्द छुपाकर उसकी बात पर मुस्कुराकर अपनी बातों को एकतरफा सोच समझकर रुख मोड़ दिया।

फिर एक दिन नंदी की शादी करीब और रुद्र के इजहार का दिन आया, जहाँ रुद्र ने नंदी को अपने दिल का हाल बयां किया, जब उसने बताया कि 'नंदी तुम्हारी शादी का सुन मुझे अच्छा नहीं लग रहा, तुमसे दूर जाने

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(भाग ३)

दिव्यांगों के आदर्श - श्री बच्चू सिंह

बात तब की है, जब १९४६ में कम्युनिस्ट, लीग, कांग्रेस, एससीएफ (शिड्यूल कास्ट फेडरेशन) के राजनीतिक विरोध और संचार पोत 'तलवार' पर मदनसिंह व मोहम्मद शरीफ की गद्दारी से क्रांति असफल होने के बाद ब्रिटिश राज फिर मजबूत हो चुका था। तलवार पोत पर आजाद हिन्द का जासूस १७ वर्षीय रेटिंग बलाई चंद दत्त था, जिसे २ फरवरी १९४६ को कमांडर-इन-चीफ आर्चबोल्ड के सामने आजाद हिन्द के नारे लगाने पर गिरफ्तार करके निलंबित कर दिया गया था, लेकिन किसी ने दत्त को बचाया नहीं था, तब सभी अचानक १८ फरवरी को दत्त के समर्थक कैसे बन गए, जबकि ब्रिटिश अधिकारियों का दुर्व्यवहार नया नहीं था? लेकिन इस नाटक से क्रांति समाप्त हो गई।

क्रांतिकारियों को सजा देने में ब्रिटिश शासन ने इतना ध्यान रखा कि केवल उनको ही सजा मिले जो हथियारबंद नहीं थे, क्योंकि हथियारबंद सैनिकों से दोबारा विद्रोह होने की संभावना थी। अनेक सैनिकों को ब्रिटिश शासन ने सेवा से बर्खास्त कर दिया, बहुतों को जेल भेज दिया। इन सैनिकों की किसी भी राजनीतिक दल या संस्था ने सुध नहीं ली। सरदार पटेल ने भी साथ देने से इंकार कर दिया था।

इस असफल स्वतन्त्रता संग्राम के बाद १९४६ में २३-२४ वर्ष की आयु में बच्चू सिंह ने अघोषित रूप में वायुसेना छोड़ दी और भरतपुर लौटकर वे अपने बड़े भाई राजा ब्रजेन्द्र सिंह के सैन्य सचिव बने। वहाँ उन्होंने अपने अनुभव से भरतपुर राज्य की सेना को और अधिक मजबूत बनाया। ब्रिटिश शासन उनसे बहुत घृणा करता था और भरतपुर को सबक सिखाना चाहता था, लेकिन उस समय वे एक ऐसी रियासत के राजा को

पदमुक्त करने की स्थिति में भी नहीं थे, जिसके पास टैंक, लड़ाकू विमान और सशस्त्र थल सेना थी और बच्चूसिंह के कारण वायुसेना भी आ गई थी। नये सैन्य विद्रोह ने ब्रिटिश राज को हिला दिया था और द्वितीय विश्वयुद्ध से कमजोर हुआ ब्रिटेन भी कोई सेना भेजने में असमर्थ था। अतः ब्रिटिश शासन ने मन मारकर यहाँ शांति को अपनाया था।

यह निश्चित था कि समय के साथ ब्रिटेन की स्थिति सुधर जाएगी, फिर वे किशनसिंह की तरह ब्रजेन्द्र सिंह का राज भी खत्म कर देंगे। अतः बच्चूसिंह ने समय रहते ब्रिटिशराज से निपटने की योजना बनाई। भरतपुर में कर्जन के समय से प्रसिद्ध हुआ बतख शिकार ब्रिटिश अधिकारियों का प्रिय खेल था, जिसे वहाँ के शासकों ने बनाए रखा था। जब १९४६ में तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड वेवेल ने बतख शिकार का आयोजन फिर करवाया, तब भरतपुर को इसका मौका मिला।

महाराजा ब्रजेन्द्र इंदुसिंह ने खुद अपने मित्रों देवास, रामपुर, जयपुर, कपूरथला, ग्वालियर के शासकों को बतख शिकार आयोजन में शामिल होने के लिए कहा। ग्वालियर में इन रियासती शासकों की मीटिंग हुई, वहीं ब्रजेन्द्र इंदुसिंह के सुझाव पर भारतीय मूल के उन छोटे अधिकारियों को भी साथ मिलाया गया, जो इन शासकों के मित्र थे।

जब सभी भरतपुर पहुंचे, तब ब्रिटिश अधिकारियों को नीचा दिखाने के लिए सामान्य रैंक के भारतीय अधिकारियों का ब्रिटिश कर्नल और जनरल रैंक से ऊपर दर्जे में स्वागत हुआ और बड़े तथा विशेष मेहमानों में रखा गया। दिसंबर १९४६ में निर्धारित समय पर बतखों के शिकार की प्रतियोगिता हुई। वहाँ बच्चूसिंह ने खुद वाइसराय से बराबरी का व्यवहार किया और उनके बाद भारतीय मूल के मेजर रैंक अधिकारी को रखा गया, जबकि ब्रिटिश कर्नल और जनरल को पीछे और निम्न स्तर पर खड़ा करवाया गया।

इस व्यवहार के विरुद्ध शिकायत करने पर बच्चूसिंह ने वायसराय लार्ड वेवेल को धमकाया, इससे वह बहुत डर गया। राजनीति में अस्थिरता बनी हुई थी। ब्रिटेन की फूट डालो और राज करो की नीति से सामाजिक स्तर पर दंगे हो रहे थे। प्रशासन पर अस्थिर राजनीति भारी थी, पुलिस भी हड़ताल कर रही थी, और सेना अभी हुई असफल क्रांति से उभरी नहीं थी। इस समय जाट, अजगर और क्षत्रिय आंदोलन के नेता से मिली धमकी से घबराए हुए लॉर्ड वेवेल ने भारत छोड़ने का प्लान तैयार कर लिया जिसका नाम रखा 'ऑपरेशन मैडहाउस'। जब ब्रिटिश सरकार को वेवेल की योजना का पता चला, तो हाउस ऑफ कॉमन्स में भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा करके माउंटबेटन को वाइसराय बनाकर भारत भेजा। (अगले अंक में जारी)

बेचारा पापड़

संजय वर्मा 'दृष्टि'

आम आदमी की थाली से गायब हो रहा पापड़, मसालेदार से ज्यादा मुनाफेदार हो गया पापड़। सीधे बाजार से खरीदने की आदत भागदौड़ भरी व्यस्ततम जिंदगी में हो गई। पहले के जमाने मे पापड़ बनाना हर घर में जारी था। पापड़ के आटे में नमक आदि का मिश्रण अनुपात किसी बुजुर्ग महिला से पूछा जाता था। वहां उनकी सलाह को सम्मान भी दिया जाता था। पापड़ के आटे को तेल लगाकर घन (लोहे के भारी हथौड़े) से पीटा जाता था। आस-पड़ोस की महिलायें अपने-अपने घर से बेलन-पाटले लेकर आतीं व एक दुसरे को सहयोग करने की भावना से हाथ बटाती। पापड़ बेलते समय दुःख-सुख की बातें आपस में बांटा करती। इसमें मन की भावना व सहयोग को अच्छी तरह से समझा जाता था। पापड़ के लोए (कच्चा आटा) भी चखने हेतु बांटे जाते थे, बाद में पापड़ भी खाने हेतु दिए जाते थे।

किन्तु आजकल तो हर घर में पापड़ का बनना कम होता जा रहा है। मशीनों से बने पापड़ बाजार से लाकर खाने का चलन है। कौन मगजमारी करे? घर में पापड़ बनाने की। लोग बाग टीवी से ही चिपके रहते है। आसपड़ोस मे कौन रहता है ये भी लोग ठीक से नहीं जानते। भागदौड़ की जिन्दगी में घरों में साझा प्रयासों के श्रम से निर्मित कई पाक कलाएँ भी अपना अस्तित्व धीरे-धीरे खोती जा रही है। रोजगार हेतु आज 'अच्छे-अच्छों को पापड़ बेलने पड़ रहे हैं' की कहावत मायने रखती है क्योंकि पापड़ बेलना मेहनत का कार्य है।

पापड़ों के भी कई स्वाद होते हैं। चरका पापड़, मीठा पापड़, चने, मूंग, उड़द, मक्का, चावल, पंजाबी मसाला पापड़, चटपटा चना, चना लहसुन, पापड़ कतरन, आम के रस को सुखाकर पापड़ आदि कई पापड़ों की बिरादरी है। अमिताभ बच्चन ने तो 'कच्चा पापड़-पक्का पापड़' को तेजी से बोलने के नुस्खे को काफी चर्चा में ला दिया था। लोग इसे सही उच्चारण से तेजी से बोलने में आज भी गड़बड़ा जाते हैं।

शादी ब्याह के पहले घरों में पापड़ बनाये जाने का भी चलन था। शायद ये शादी ब्याह में आसपड़ोस से सहयोग लेने हेतु चर्चा का एक प्रयोग रहा हो। महंगाई के बढ़ने से जायकेदार पापड़ों की दूरियां भोजन में नहीं परोसे जाने से घट से गई है। पापड़ में औषधीय गुण भी होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होते हैं। कुछ महिलाएँ सब्जियाँ महँगी होने पर पापड़ की सब्जी बनाकर परिवार को पाक कला के स्वाद चतुराई से चखा जाती हैं। उल्लेखनीय है कि सभी अस्त्र-शस्त्रों में बेलन भी महिलाओं का अपनी बात मनवाने का अचूक शस्त्र संकेत स्वरूप शुरू से ही रहा है।

वास्तव में गाँव-शहरों के घरों मे साझा प्रयास से पापड़ बनाने का चलन कम हो गया है। आटा, मसाला, मजदूरी की लागत से बने पापड़ का बाजार भाव काफी ज्यादा होता जा रहा है। परिणामस्वरूप मध्यम वर्ग की थाली से पापड़ अब गायब सा हो गया है। कभी खाने के

(शेष पृष्ठ २ पर)

(दूसरी और अंतिम किस्त)

उसके हिस्से की धूप

कमल कपूर

आर्यन ने तुरंत बात काटी, 'आप उनके पक्ष में कुछ सफाई दें, इससे पहले मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ पर आप बीच में तो नहीं टोकेंगी न?'

माँ ने मौन भाव से स्वीकृति में सिर हिलाया तो उसने अपनी बात रखी, 'माँ! मैं तो पढने में औसत हूँ लेकिन दीदी ने तो स्कूल टॉप किया था और वह मेडिकल में जाना चाहती थीं। डॉक्टर बनने का सपना था उनका, पर पापा ने उनके ख्वाब को भी कुचल दिया यह कहकर, 'तुम कौन जिन्दगी भर हमारे घर में बैठी रहोगी, जो तुम्हें डॉक्टर बनायें हम?' और बी.एससी. और बी.एड. करवाकर उनका ब्याह रचा दिया। एम. एससी. भी उन्होंने शादी के बाद की। क्यों माँ?'

'...क्योंकि तुम्हारे पापा जानते और मानते हैं कि लड़कियों को अपने ससुराल के फर्ज भी निभाने होते हैं इसलिये टीचर की नौकरी बैस्ट है उनके लिए और तुम्हारी आरती दीदी ४० हजार रुपये महीना कमा रही है अपनी स्कूल की नौकरी से। अब बोलो।'

'क्या बोलूँ सिवाय इसके कि दीदी के मन में गहरी कसक है कि वह डॉक्टर नहीं बन पाईं। उनका यह दर्द मैं जानता हूँ आप लोग नहीं।' कहते-कहते आँखें नम हो आईं आर्यन की। माँ के पास शायद कोई जवाब नहीं था अब इसलिए उसके सिर पर हाथ फेरते हुए स्नेहसिक्त वाणी में बोलीं, 'अब सो ले थोड़ी देर' और वहाँ से चली गईं। पर नींद कैसे आती उन नैनों में, जिनमें एक बड़ा चित्रकार बनने के सपने बसे थे? मन में उथल-पुथल चल रही थी और कोशिश करने पर भी जब तनाव के घेरे से खुद को बाहर न निकाल पाया तो उठ कर अपनी रंगों की दुनिया के पास आ गया और बेध्यानी में कैनवस पर जो चित्र उभरा वह था। एक फूलदार घने पेड़ की छाँव में खड़ा एक अधसूखा पौधा, जिसकी दुबली सी टहनी से दो नव पल्लव झर रहे थे। कांपते हाथों से उसने शीर्षक दिया 'झरते आँसू', फिर उसकी फोटो खींचकर दीदी को भेज दी। तुरंत जवाब आ गया, 'निराश न हो भाई! सब ठीक हो जायेगा।'

पापा ने दोपहर के बाद रात उसके बिस्तर पर जाने तक उससे बात नहीं की। शायद अब वह मौन रहकर अपना गुस्सा जता रहे थे या फिर अपने हठ को पोषित कर रहे थे। क्या चल रहा है उनके मन में, सोच की इसी गली में विचरते हुए देर रात तक उसे नींद नहीं आई और अभी भोर का पहला पाखी भी न चहका था कि माँ ने जगा दिया, 'आरूरूरू! जल्दी से उठ जाओ मुन्ना! दादू आये हैं।'

'दादू आये हैं? क्यों?' झटके से उठकर बैठ गया वह। 'अरे! आने के लिये कोई वजह चाहिये क्या बाबूजी को? मिलने का जी चाहा होगा तो चले आये' माँ मुस्कुराईं। 'पर मैं वजह जानता हूँ माँ! खुद थक गये न पापा मुझे डंडे मारते-मारते, तो दादू को बुला लिया। बस अब खूब जम कर धुनाई होने वाली है मेरी।' 'ऐसा कुछ नहीं होने वाला। तुम नहा-धोकर ही बाहर निकलना अभी बाबूजी पूजा में बैठे हैं, उन्हें देर लगेगी।' कहकर माँ चल दीं पर दरवाजे तक जा कर मुड़ीं, 'और सुनो अपने दादू जी से बहस न करना। वो जो भी कहें चुपचाप सुन लेना।'

नहाकर निकला तो सबसे पहले दीदी को टैक्स्ट किया, 'दीदी! प्लीज जितनी जल्दी हो सके आ जाओ। दादू आये हैं गाँव से।' सदा की तरह फौरन जवाब आ गया एक स्माइली के साथ, 'ठीक है भाई!'

मन सुखद आश्वस्ति से भर उठा। साथ ही उम्मीद की लौ भी झिलमिला उठी कि यदि बात बिगड़ी तो दीदी उसका पक्ष ले कर सब संभाल लेंगी।

आँगन में गुलमोहर की ललछौंही छाँव में बिछी चारपाई पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे दादू। उसने निकट जाकर उनके चरण छूते हुए नर्म स्वर में कहा, 'पाय लागूँ दादू जी।' 'अरेरेरे! मुन्ना!' वह अखबार छोड़कर उठ खड़े हुए और उसे बांहों में भरते हुए बोले, 'कैसे हो बचवा? पर्चे कैसे हुए?'

'ठीक हो गये दादू जी!'

तभी पापा भी आ गये और दादू की चारपाई के पास कुर्सी खींच कर बैठ गये। माँ चाय ले आईं और चाय पान के बाद छुटपुट बातों का दौर चल निकला। फिर अचानक दादू ने पूछ लिया, 'हाँ तो भई मुन्ना! अब आगे क्या पढ़ने की सोची तुमने?'

'इन राजकुमार से काहे पूछ रहे बाबूजी! हमसे पूछिये न! एम.एफ. हुसैन बनने की सोच रहे हैं ये। कहते हैं कि इंजीनियर नहीं बनना इन्हें। अब आप ही सुबुद्धि दीजिये अपने लाडले को' जवाब उसने नहीं पापा ने दिया तो मन तिक्त हो उठा उसका, 'पापा मुझे समझ नहीं पा रहे दादू जी! मैं...' सहसा दृष्टि माँ पर उठी तो देखा उनकी नजरों में साफ लिखा था, 'कुछ न कहना आरू' और वह खामोश हो गया।

'भई, मसला क्या है? हमें भी तो पता चले।' दादू ने पूछा तो पल भर को खामोशी छा गई, जिसे तोड़ा एक सुरीले स्वर ने, 'प्रणाम दादू जी!'

सामने ओस धुली किरण-सी मुस्कुराती आरती दीदी खड़ी थीं। आर्यन का मन धवल कमल-सा खिल उठा और माहौल भी महक उठा। मिलने-मिलाने की औपचारिकता के बाद आरती ने चहकते हुए कहा, 'अब सब तैयार हो जाएँ नाश्ता करने को। मैं मटर-पोहा बना कर लाई हूँ और साथ में है। बीकानेरी कचौरियाँ और मावे वाली गर्मागर्म जलेबियाँ।'

'वाह! हमारी बिटिया के आने से अँगना में बहार आ गई।' नाश्ते की दावत के बाद दादू ने कहा तो आरती मुस्कुराई, 'दादू जी! भीतर चलकर आपको दिखाऊँगी कि इस आँगन की बहार यानी इस सुर्ख फूलों से लदे गुलमोहर, उस पीली चंपावती, मधु-मालती की बेलों और रंगारंग गुलाबों की इन क्यारियों को कितनी सजीवता से हमारे आरू ने अपने चित्रों में उकेरा है।'

'अच्छा...!' दादू पुलक उठे तो पापा ने व्यंग्य घुले स्वर में कहा, 'समय की बर्बादी और पैसे का उजाड़ा। माँ ने बिगाड़ रखा है।'

बर्तन समेटती माँ के हाथ कांप गये और आँखें छलक उठीं, पर होंठ खामोश रहे।

'समय और पैसे की बर्बादी? पगला गये हो क्या केशव? अरे ये तो सरस्वती मैया का वरदान है, जो भाग्यवानों के हिस्से में आता है। बात क्या है? तुम काहे इत्ते चिढ़े हुए हो? खुल कर बताओ हमें।'

'अपने लाड़ले से ही पूछिये ना। मैं क्या बताऊँ?' तुनककर बोले पापा तो दादू की निगाह आर्यन पर ठहर गई, 'बोलो बबुआ।'

पर वह नजरें झुकाये निःशब्द बैठा रहा, तो दादू ने उकसाया, 'बिना अपने बाप से डरे कहो मुन्ना! हम तुम्हारे बाप के बाप हैं। न्याय करेंगे हम बिना पक्षपात के।'

'दादू जी! मैं के.के. कॉलेज ऑफ आर्टस से डिग्री कोर्स करना चाहता हूँ पर पापा नहीं मान रहे। वे चाहते हैं कि मैं इंजीनियरिंग करूँ और मैं यह नहीं कर सकता, बल्कि कर ही नहीं पाऊँगा। बस इतनी सी बात है दादू जी!'

'हूँ...! अब तुम कहो केशव कि वह काहे इंजीनियर बने?'

'इसमें कैरियर का स्कोप ज्यादा है बाबूजी! और क्या मैं अपनी ही औलाद के लिये गलत निर्णय लूँगा? आप ही कहिये।'

'बिल्कुल सही कहा तुमने। अरे तुम तो क्या दुनिया का कोई पिता अपने बच्चे के लिये गलत करना तो दूर, सोच भी नहीं सकता। जैसे हमने चाहा था कि तुम बिजनेस स्टडी करो।'

'तो मैंने की न? आपका कहना माना न?'

'तुम अपनी नौकरी और जिन्दगी से खुश हो न? सच-सच बताना।'

'जी बाबूजी! खुश हूँ। बेहद खुश हूँ।'

'फिर काहे उम्र भर तुमने हमें ताने दिये कि आपने हमें इंजीनियर नहीं बनने दिया। ये शिकायत आज भोर में भी की तुमने हमसे। काहे?'

'बाबूजी, आरती ने भी तो मेरा कहना माना। देखिये न कित्ती सुखी और संतुष्ट है यह आज। ४० हजार कमा रही है।'

'नहीं हूँ संतुष्ट मैं पापा! आज पहली बार आपके सामने जुबान खोल रही हूँ कि किसी भी डॉक्टर को देखती हूँ तो दिल में दर्द की लहर दौड़ जाती है। मैं उस गुजरे वक्त को तो नहीं लौटा सकती, पर अपने भाई के साथ तो खड़ी हो सकती हूँ न!' नयन-प्यालियाँ नीर से भर उठीं आरती की।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

मुझे बना दीजिए राष्ट्रपति

शरद सुनेरी

इस समय रात के दो बज रहे हैं और पिछले एक घंटे से एक कीड़ा लगातार मुझे काट रहा है- 'अबे उठ! इतनी बड़ी समस्या से देश जूझ रहा है और तू, देश का एक जिम्मेदार बुद्धिजीवी, सो रहा है।'

मैंने कहा- 'यार सोने दे ना। जिम्मेदार बुद्धिजीवी हूँ, इसलिए तो सो रहा हूँ। बुद्धिजीवी और कर भी क्या सकता है? वह भी जिम्मेदार, तू भी देश का जिम्मेदार कीड़ा है ना? सो जा।' पर वह नहीं माना। आखिर उठा कर ही दम लिया। मैंने कहा- 'बोल क्या प्रोबलेम है, क्यों खुजा रहा है आधी रात को?'

'मास्साब, जागिए। देश को आपकी अतिरिक्त सेवाओं की आवश्कता है।' ये आधी रात को अतिरिक्त सेवा की बात सुनकर, मेरी मास्टर खोपड़ी जरा ठनकी- 'क्यों, मोदी जी की सरकार गिर गयी क्या? फिर चुनाव करवाने जाना है? या कहीं गाय-बैल गिनने जाना है? एक मास्टर भला इस देश की क्या अतिरिक्त सेवा कर सकता है?'

'रहा न मास्टर का मास्टर। अरे भाई, इससे भी बड़ी जिम्मेदारी है' - वह बोला।

'तो क्या फिर किसी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार को हिन्दी पढ़ानी है? हमारे देश में यह बड़ी समस्या है। ये नेता और अभिनेता, सब हिन्दी को बिगाड़ने के पीछे पड़े हैं।' मैंने उसे समझाया।

'अरे मूर्ख, देश को राष्ट्रपति चाहिए।'

'तो मैं क्या करूँ?'

'तू क्यों नहीं करता ट्राई? अब तो पचास पार भी कर चुका। थोड़ा-बहुत बूढ़ा भी दिखने लगा। देश का प्रथम नागरिक बन जाएगा' - उसने समझाया।

'अरे पागल है क्या? भैया, इस देश में समझदार माँ-बाप बड़ी मुश्किल से अपनी बेटी का हाथ, किसी मास्टर के हाथ में देकर उसे पति बनाते हैं। तकदीर से अपन भी उस पद को सुशोभित कर चुके हैं। बस यही काफी है। तू कहाँ प्रथम नागरिक बनाने पर तुला है। मैं अंतिम नागरिक ही ठीक हूँ।' मैंने उस शांत किया।

पर, इतनी आसानी से कीड़ा पीछा छोड़ दे तो वह कीड़ा क्या? थोड़ी सभ्यता से बोला- 'देखो शरद भाई, ये छिछोरापन छोड़ो और मौके का फायदा उठाओ। राष्ट्रपति बन जाओ। इस दो कौड़ी की मास्टरी में कुछ नहीं रखा है। चार लौंडे तुम्हारे पैर क्या छूते हैं, तुम अपने को गुरु बृहस्पति और परशुराम जी का बाप समझने लगते हो। और तुम कोई पहले आदमी तो होंगे नहीं, जो मास्टरी छोड़कर राष्ट्रपति बनोगे।'

'मैं नहीं बनता राष्ट्रपति-वाष्ट्रपति' मैंने एक-एक शब्द पर जोर देकर फिर कहा।

'क्यों' वह पीछा छोड़ने को तैयार न था।

'अरे, उसका प्रमोशन नहीं होता। मैं पिछले पच्चीस सालों से प्रमोशन की राह देख रहा हूँ। मेरे पीछेवाले आगे निकल गये। पर हमारे सिर पर किसी बाबाजी का हाथ नहीं, तो लटके पड़े हैं। मुझे नहीं बनना राष्ट्रपति-वाष्ट्रपति।' मैं खीझा।

'तेरी मर्जी। मैं तो तेरे भले की सोच रहा था।' वह निराश हो गया। पर मेरी चेतना जागी। मैं थोड़ा गंभीर हो गया। उठा, आईने में अपना चेहरा देखा। खोपड़ी के कुछ सफेद बाल काले बालों के पीछे से हमारी अभिनेत्रियों की तरह अंग प्रदर्शन कर रहे थे। जवानी की दहलीज पर बुढ़ापे ने अपनी दस्तक तो कई दिन पहले दे दी थी। बेचारी पत्नी समय निकालकर इन सफेद बालों पर रंग-रोगन करती रहती है, जो यह समझाने का प्रयास होता है कि वह भी अन्य पतिव्रताओं में से एक है, और कम-से कम मुझे देखकर उसे कोई बूढ़ी न समझे!

तबसे लेटे-लेटे मैं कीड़े के प्रस्ताव पर विचार कर रहा हूँ। मैं उन करोड़ों भारतवासियों में से ही एक हूँ, जिनकी उम्र बचपन से जवानी तक स्कूल और कालेज की परीक्षा के प्रश्न-पत्र में यह निबंध लिखते बीत जाती है- 'अगर मैं राष्ट्रपति होता'। न जाने कितनी योजनाओं का निर्माण मैं उत्तर-पुस्तिकाओं को रंगने में करता रहा हूँ, किन्तु परीक्षकों को कागज पर उतारी मेरी योजनाएँ पसंद ही न आती थीं, हमेशा शून्य दे देते थे। पूछने पर कहते कि मेरी योजनाओं में शिक्षकों की वेतन वृद्धि का कोई उल्लेख ही नहीं होता। और अब मैं अपने विद्यार्थियों से लिखवाता रहता हूँ- 'अगर मैं राष्ट्रपति होता'। फिर सोचा कि आज जब कल्पना के घोड़ों को यथार्थ के रेसकोर्स में दौड़ने का अवसर मिल रहा है तो इसमें बुराई क्या है?

प्रेरणा का गठबंधन भाषा के साथ हुआ तो आत्मविश्वास ने भी करवट ली। कीड़े को अपना प्रयास सार्थक-सा लगा- एक जिम्मेदार बुद्धिजीवी उसके जगाने पर जाग जो रहा था। उसने गरम लोहे पर पुराना हथौड़ा चलाया- 'शरद जी, इससे अच्छा अवसर आपको नहीं मिल सकता।' शायद उसे मेरे राष्ट्रपति बनने की उम्मीद हो चुकी थी, इसलिए आप-वाप का उपयोग कर रहा था।' वह जमाना गया जब कवि, चारण और भाट की तरह राजाओं की स्तुति करते थे। अब तो राजनीति में कवियों का बड़ा मार्केट है। एक प्रधानमंत्री भी कवि रह चुके हैं। ऐसे में राष्ट्रपति भी कवि हो जाए तो क्या समाँ बंधेगा? जरा सोचो भला, जब चाहा राष्ट्रपति-भवन में गोष्ठी करवा ली, जब मन हुआ लालकिले में कवि-सम्मेलन करवा लिया और दो-चार गायक तुम्हारी कविताओं पर कैसेट निकाल ही देंगे, राष्ट्रपति जो रहोगे। और रिटायर होने के बाद कवि-सम्मेलनों में अध्यक्ष से कम नहीं बनाए जाओगे, फिर जी भरकर अपनी कविताएँ सुनाते रहना।'

कीड़े ने चिकोटी काटी। वह एक कवि की कमजोरी को छेड़ रहा था। शायद वह यह नहीं जानता था कि एक छेड़ा हुआ साँड़ और छेड़ा हुआ कवि बड़ा खतरनाक हो जाता है। मैं कुछ बोलता इसके पूर्व ही वह पुनः उवाचा- 'और कब तक ये मुट्ठी भींच-भींचकर और गला फाड़-फाड़कर मंच पर वीर-रस की रचनायें पढ़कर पाकिस्तान की ऐसी-तैसी करने का दम भरते रहोगे? राष्ट्रपति की शपथ लेने के तुरंत बाद मियाँ शरीफ को चाय पर बुलाना और कहना- 'आलू से छीले जाओगे, मूली से काटे जाओगे।' कीड़े की बात में थोड़ा दम था। मुझे उसकी बात जम रही थी।

मैं सोचता हुआ छत को घूरने लगा। चलो ठीक है। कब तक मास्टरी करेंगे? बड़ी मुश्किल से पदोन्नति मिली तो माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक से अधिक न बन पाएंगे। प्राचार्य भी न बन सकेंगे, संवैधानिक शूद्र जो ठहरे। और अपनी औकात भी नहीं कि किसी गाँव के ही पंच बन सकें। जिस देश के अंगूठाछापों को वोटिंग मशीन का बटन दबाने का ठीक से ज्ञान नहीं, वहाँ मुझ जैसे को एक वोट मिलना वैसे ही संदिग्ध है।

तभी कीड़े की एक बात मुझे कचोट गयी। वह बोला- 'शरद जी, क्या रखा है, मास्टरी में? हर महीने की आखिरी तारीख को बैठकर बजट बनाते रहो, घर का! मकान-मालिक का टेंशन अलग। पिछले डेढ़ साल से देख रहा हूँ तुम्हें! सातवें वेतन आयोग के पैसे के लिए ऐसे लार टपका रहे हो, जैसे कैंसर का मरीज चार दिन की जिंदगी चाहता हो। और ये सरकार तुम्हारी एक नहीं सुन रही है! अरे! राष्ट्रपति बन गये तो, राष्ट्रपति-भवन में रहोगे। न मकान-मालिक की चिंता, न किराये की! न प्रमोशन की फिक्र, न ट्रांसफर का चक्कर का डर! शान से रहना दिल्ली में।'

मैंने कहा- 'यार तूने पहले ही ये मुद्दे की बात क्यों न कही? इतनी देर से नाहक दिमाग चाट रहा था।' तो मैं इस देश के सभी राजनैतिक दलों के माई-बापों से निवेदन करता हूँ कि मुझे बना दीजिये राष्ट्रपति। वैसे भी कोई शिक्षक पहली बार राष्ट्रपति बनेगा, ऐसी बात नहीं। मेरा तो पूरा खानदान ही शिक्षक है- माँ-बाप, भाई-भौजाई, चाचा-चाची सब। और तो और मेरा बेटा भी आजकल सबको 'ए फॉर एपल' पढ़ाता है। इससे पहले कि कोई और मैं तैयार हो, मैं यह त्याग करने को तैयार हूँ। मुझे बना दीजिए राष्ट्रपति। यकीन मानिए, भले ही हर स्पर्धा में मैं अंतिम क्यों न रहा हूँ किन्तु मैं एक सफल 'प्रथम नागरिक' सिद्ध होऊँगा। ■

(पृष्ठ ४ का शेष) **बढ़ती जनसंख्या...**

जाना चाहिए। यौनाचार के लिए निरोध, गर्भनिरोधक गोलियों का उपयोग, पुरुष व महिला नसबंदी बढती जनसंख्या की रफ्तार थामने में बहुत हद तक सफल सिद्ध हो सकती है। हमें देश की उन्नति के साथ अपने सुरक्षित भविष्य व बेहतर जीवन की अभिलाषा के लिए आज और अभी से सचेत होना होगा। ■

(पृष्ठ २७ का शेष)
कहानी : मोह के धागे

का अहसास मुझे डरा रहा है और ऐसा लग रहा है कि उस वक्त जो तुमने मुझसे कहा वहां मैंने बिना सोचे-समझे, पूरी बात को तर्क-वितर्क कर दिमाग लगाया और दिल की नहीं सुनी।'

नंदी ने फिर एक बार खामोश रहकर सुना, जहां दिल से उलझी तो रुद्र मिला जिसे वह प्यार करती थी, और जब दिमाग से सोचा तो वह लड़का दिखा जिसे उसके माँ-पापा ने चुनने से पहले उसकी पसंद और नापसंद पूछ कर ही उसकी शादी तय की, और वह अब पीछे नहीं जा सकती थी। फिर नंदी ने रुद्र से कहा, 'अगर दिल से कहूं तो रुद्र यह बिलकुल सच है कि मेरे दिल में तुम हो, वह जिसे प्रेम किया, यह बात अलग पाने की चाहत भी की, लेकिन तुम नहीं मिले वहां, जहाँ तुम चाहिए थे, लेकिन आज मुझे ये सुनकर अच्छा लग रहा है कि मेरे प्यार के अहसास का वजूद था, उसमें आज तुम भी हो, भले तुमने देर से दिल की सुनी लेकिन तुम्हारे दिल में पहला नाम नंदी है। बिना दिमाग लगाए आज दिल से तुमने मुझे प्यार का नाम दिया और यकीन करो मेरा, मुझे ये प्यार के कुछ लम्हे तुमने सही मायने में किसी और के संग जुड़ने से पहले दे दिये। अपना यह अहसास दर्द के साथ इन मीठे यादगार लम्हों को जियूँगी। रुद्र, मैं तुम्हें कभी न भूलूंगी, दिल में याद और दिमाग से अपनी दोस्ती को नया जीवन दूंगी।'

हमारी प्रेमकहानी अधूरी ही सही लेकिन यादों में साथ रखना हम दोनों के प्यार को वजूद मिला और यही पल हमदोनों ने साथ जिया, नंदी की आंखों में आंसू थे।

रुद्र आज नंदी के दिल और दिमाग दोनों से मिला, जहाँ उसने सब खो दिया था और जो मिला वह प्यार दिल से होता, दिमाग फितूर है। जिंदगी और प्यार को जुदा करके सिर्फ उलझने और जुदाई मिलती। रुद्र खुश था कि उसे नंदी से प्यार हुआ। जितना खूबसूरत दिल उससे कहीं अधिक उसने दिमाग के जरिए दिया अपनी दोस्ती को नया जीवन। ■

(पृष्ठ २८ का शेष)
उसके हिस्से की धूप

'सुन लिया केशव! तुम चाहते हो कि तुम्हारा बेटा भी सारी जिन्दगी तुम्हे कटघरे में खड़ा करता रहे? मत करो वो गलती जो हमने की और तुम भी कर चुके हो एक बार।'

'ठीक है। पर मैं इस फालतू के कोर्स पर पैसा खर्च नहीं करूँगा। कहे देता हूँ।'

'अरे! कैसे ना खर्च करोगे और ना करोगे तो तुम्हारा यह बाप करेगा। अब पैसा हमें साथ तो लेकर जाना नहीं है। पर सुन लो सपूत! तुम इंजीनियर ना बन पाये, इसलिए अपनी ये अधूरी इच्छा इस मासूम पर लादो, यह ना होने देवेंगे हम। समझे?'

'जो जी में आये करें आप लोग' कहते हुए वह उठ कर चले गये।

कुछ देर वहाँ मौन पसरा रहा। फिर सहसा आरती ने देखा कि गुलमोहर के अबीरी फूलों और चटक हरी पत्तियों से छनकर धूप का एक नन्हा-सा टुकड़ा आर्यन की गोदी में आ बैठा है। वह छोटी-सी बच्ची की तरह किलक उठी, 'देखो-देखो आरू! तुम्हारे हिस्से की धूप तुम्हें मिल गई।' कुछ पलतक वे भाई-बहन उस टुकड़े को मुग्ध भाव से निहारते रहे। फिर आरती ने चहुं ओर नजर घुमाकर देखा और दबे स्वर में बोली, 'जानते हो आरू! दादू जी को पापा ने नहीं मैंने बुलाया था। सारी स्थिति बता के।'

दादू शरारती बच्चे की तरह मुस्कुरा रहे थे और पूरा आँगन सुनहरी धूप से भर गया था, पर उसे क्या करना था इतनी सारी धूप का? उसके हिस्से की धूप तो उसकी प्यारी दीदी ने उसे दिला दी थी। सहसा भावनाओं का एक स्निग्ध सा ज्वार उठा उसके सीने में और विभोर होकर वह दीदी के गले लग गया, 'थैंक यू दीदी!' ■

(पृष्ठ १७ का शेष)
राम का देश थाईलैंड

हवाई अड्डे का नाम सुवर्ण भूमि हवाई अड्डा है। इसके स्वागत हॉल के अंदर समुद्र मंथन का दृश्य बना हुआ है। जो भी व्यक्ति इस हवाई अड्डे के हॉल में जाता है। वह यह दृश्य देखकर मंत्र मुग्ध हो जाता है।

यहां संवैधानिक राजतंत्र है। यहां के लोग भगवान की तरह अपने राजा और रानी की पूजा करते हैं। बैंकाक दुनिया के सबसे ज्यादा गर्म शहरों में से एक है। यहाँ का सबसे गर्म महीना अप्रैल होता है। इस महीने में यहाँ सोंगक्रन त्योहार मनाया जाता है, जो बिल्कुल होली की तरह ही होता है। लेकिन इसमें रंगों की जगह सिर्फ पानी का प्रयोग किया जाता है।

बौद्ध धर्म होने के बावजूद थाईलैंड में लोग अपने राजा को भगवान राम का वंशज होने के कारण विष्णु का अवतार मानते हैं। इसलिए थाईलैंड में एक प्रकार से राम राज्य है। वहाँ राजा को श्रीराम का वंशज माना जाता है। थाईलैंड में संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना १९३२ में हुई थी। भगवान राम के वंशजों की यह स्थिति है कि उन्हें निजी अथवा सार्वजनिक तौर पर कभी भी विवाद या आलोचना के घेरे में नहीं लाया जा सकता है, वे पूजनीय हैं। थाई शाही परिवार के सदस्यों के सम्मुख थाई जनता उनके सम्मान में सीधे खड़ी नहीं हो सकती है, बल्कि उन्हें झुककर खड़े होना पड़ता है। इस प्रकार आज भी थाईलैंड में राम राज्य फल-फूल रहा है। ■

(पृष्ठ ५ का शेष)
शत्रुओं का भांडाफोड़

मेरी अनेक भारतीय इतिहासकारों से चर्चा हुई है। कोई भी स्वामी दयानन्द का पक्ष स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। वे समझते हैं कि बिना वेदों में इतिहास बताये श्रीराम, श्रीकृष्ण और सरस्वती नदी की ऐतिहासिकता को सिद्ध नहीं कर सकते। स्पष्ट है वे शोध के नाम पर कचरे पर कचरा एकत्र कर रहे हैं।

आर्यसमाज के सभी वेद विद्वानों ने वेदों में इतिहास नहीं है, इस विषय पर बहुत सुन्दर लिखा हैं। उन्हीं के विचारों को 'वेदों में इतिहास नहीं है' इस शीर्षक से एक लेख के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूँ। निष्पक्ष पाठक विचार करें। ■

(पृष्ठ २६ का शेष)
निंदक नियरे राखिए

लगीं, तो मैं परेशान हो गया। मैंने काफी कोशिश की, लेकिन कहीं से कोई सूत्र हाथ नहीं लगा। आज मोहल्ले की चक्की पर गेहूं पिसाने गया, तो छबीली से मुलाकात हो गई। मुझे देखकर वह पहले तो मुस्कुराई और फिर बोली, आजकल तो आपके मोहल्ले में बड़े चर्चे हैं, अनेक किस्से-कहानियों के नायक बने हुए हो। फिर उसने मेरे अड़ोसी-पड़ोसी के निंदा कर्म का कच्चा-चिट्ठा खोल दिया। असलियत जानकर मुझे बहुत गुस्सा आया। घर आकर घरैतिन से सलाह मशविरा करने के बाद मैंने फैसला किया कि उचित अवसर पर मैं अपने अड़ोसी-पड़ोसी की पूरे मोहल्ले के सामने कड़ी निंदा करूंगा। फिलहाल, घरैतिन को डैमेज कंट्रोल विंग का कार्यभार सौंप दिया है। वे मेरी छवि सुधारने में लग गई हैं। ■

ग़ज़लें

बात दिल की जुबान तक आई
कोई हसरत उफान तक आई
मैं नहीं बन्द कर रहा कोटा
यह बहस संविधान तक आई
हौसले फिर जले सवर्णों के
रोशनी आसमान तक आई
फायदा क्या मिला हुकूमत से
बस नसीहत लगान तक आयी
मिटती हस्ती को देखता हूँ मैं
आंख जब भी रुझान तक आई
यह नदी इंतकाम की खातिर
आज हद के निशान तक आई
हक जो मांगा है औरतों ने कभी
रोज चर्चा कुरान तक आई
तीर बेशक नहीं चला लेकिन
एक उँगली कमान तक आई
फंस गई जाल में वही चिड़िया
जो थी लम्बी उड़ान तक आई
जुर्म पकड़ा गया है फिर उसका
खोज ऊंचे मचान तक आई
खूब बारूद का सिला लेकर
कोई आफत मकान तक आई

-- नवीन मणि त्रिपाठी

गम है ये या है खुशी लगती नहीं
जीते हैं क्यूँ जिन्दगी लगती नहीं
बिन पिये कैसा ये आलम हो गया
मदहोश है पर बेखुदी लगती नहीं
इन चिरागों को लहू अब चाहिए
जल रहे हैं रौशनी लगती नहीं
एक हद से अब गुजरना चाहिए
ये दोस्ती अब दोस्ती लगती नहीं
तू खुदा को और मैं मेरे राम को
बस पूजते हैं बंदगी लगती नहीं
मुस्कुराते हैं वो 'जय' कुछ इस तरह
उनके होंठों को हँसी लगती नहीं

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

'कौन कहता है...' काव्य-संग्रह का विमोचन

गंगापुर सिटी (राज.) के अन्तर्गत कवि विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र' के काव्य-संग्रह 'कौन कहता है...' का विमोचन श्री सी.आर. चौधरी (मा. केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार), डा. श्रीमती किरण माहेश्वरी (उच्च शिक्षा मंत्री, राज.सरकार), श्री सुखवीर सिंह जौनपुरिया (सांसद, टोंक-स.मा.), डा. पी. शिवास्वरूप (क्षेत्रीय निदेशक, इग्नु, नागपुर), श्री मान सिंह गुर्जर (विधायक, गंगापुर सिटी), श्रीमती संगीता बौहरा (सभापति, नगरपरिषद, गंगापुर सिटी) ,श्रीमती विमला शर्मा (सभापति नगरपरिषद स.मा.) एवं डा. श्री वी.एस. गुर्जर (प्राचार्य, अग्रवाल कालेज, गंगापुर सिटी) के कर-कमलों द्वारा किया गया. ■

बृजलोक अकादमी का सम्मान समारोह सम्पन्न

गाँव रिहावली, आगरा। गुरूपूर्णिमा के पावनपर्व पर बृजलोक साहित्य-कला-संस्कृति अकादमी ने के.जी. पब्लिक स्कूल, ग्राम रिहावली के सभागार में विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों का सम्मान किया। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं को ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय की तरफ से सत्साहित्य पूर्णतः निःशुल्क भेंट किया गया। अच्छी-अच्छी पुस्तकें व पत्र-पत्रिकायें प्राप्त करके छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल गये।

संस्था/अकादमी अध्यक्ष मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ने अपने शैक्षिक गुरु श्री मुरारी लाल वर्मा का सम्मान किया। अकादमी परिवार की तरफ से उन्हें 'शिक्षक श्री सम्मान' सैकड़ों विद्यार्थियों के समक्ष प्रदान किया गया एवं काव्य पुस्तिका 'संघर्ष पथ' सहर्ष भेंट की गई।

इनके अलावा देशभर के तमाम महानुभावों को उनकी निःस्वार्थभाव से की गई सेवा जैसे- साहित्य, सम्पादन-प्रकाशन, कला, संगीत, फिल्म, समाज-राष्ट्र सेवा हेतु अलग-अलग सम्मानोपाधियां प्रदान की गईं। जिनमें प्रमुख हैं, सम्पादक-श्री निर्मेश त्यागी, विजय वर्मा, कुंवर प्रताप सिंह सिसोदिया, मु. इजहार अशरफ। साहित्यकार- श्रीमती बसंती पंवार, विशाल शुक्ला। फिल्म व समाजसेवा- श्री रामसूरत बिंद, राजशेखर साहनी, ओमप्रकाश ओम आदि।

कार्यक्रम में उपस्थित महानुभाव थे- प्रबन्धक डॉ होतम सिंह कौशेडिया, प्रधानाचार्य रामनरेश वर्मा, अध्यापक राहुल परिहार (कार्यकारी अध्यक्ष-बृजलोक अकादमी), ओमप्रकाश वर्मा आदि।

ग्रामीण क्षेत्र में सत्साहित्य, कला, संस्कृति, मातृभाषा-राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध करने के लिए 'बृजलोक अकादमी' समय-समय पर ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कई वर्षों से करती आ रही है। ग्रामीण क्षेत्र जो शिक्षा-साहित्य-कला से अभी भी पिछड़े हुए हैं। वहाँ इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। कुल मिलाकर यह कार्यक्रम पूर्णतः सफल रहा! ■

कार्टून

-- श्याम जगोता

चीन का हिन्दू राष्ट्रवाद पर बेतुका बयान

प्रो. शरद नारायण खरे सम्मानित

भोपाल। अखिल भारतीय शाकाहार परिषद, भोपाल के तत्वावधान तथा प्रसिद्ध लेखक डॉ अरविन्द जैन के संयोजन में मंडला से पधारे सुपरिचित साहित्यकार प्रो. शरद नारायण खरे व कवयित्री श्रीमती नीलम खरे के सम्मान में पैसिफिक ब्ल्यु सोसायटी में भोपाल के कवि-कवयित्रियों की उपस्थिति में एक कवि-गोष्ठी एवं समसामयिक परिसंवाद व अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भोपाल के अनेक गणमान्यों व साहित्यकारों ने भागीदारी की।

इस अवसर पर खरे दम्पत्ति को आयोजकों ने शाल, मोतीमाल, स्मृति चिह्न व पुस्तकें भेंटकर सम्मानित किया। डॉ जैन ने संचालन करते हुए प्रो. शरद नारायण खरे व नीलम खरे की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ,और उनके लेखन की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। प्रो. खरे की कविताओं को बहुत सराहा गया। आयोजन में श्रीमती सुषमा तिवारी की विशेष भूमिका रही। ■

बाल कविता

आज देखने गए हम मेला/तरह-तरह की दुकान सजी है
और लगा है ठेला चाट, पकौड़ी और जलेबी गरम-गरम
मुझको लगा सबसे अच्छा बुढ़िया का बाल नरम-नरम
लोग सभी दिखते खूब सजे-धजे
बच्चे, बूढ़े और जवान
कर रहें सब खूब मजे लहँगा
चोली पहने गुड़िया खूब सुंदर
देख-देखकर सब लोटपोट होते
गजब उछल-कूद करता बंदर
रंग-बिरंगी बत्तियों से सजा
बहुत सुंदर और मजेदार
मेले में आया खूब मजा

-- रीना मौर्य 'मुस्कान'

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)
मोबाइल : 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।